# शुक्लयजुर्वेदः

# काण्वशाखा संहिता

# प्रथम दशकम

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता प्रथम दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 1 | 1 | इ॒षे त्वो॒र्जे त्वा॑ वा॒यव॑ स् |
| 1 | 1 | 2 | आप्या॑यध्वमघ्न्या॒ इन्द्रा॑य भ |
| 1 | 1 | 3 | ध्रु॒वा अ॒स्मिन् गोप॑तौ स्यात |
| 1 | 1 | 4 | द्यौर॑सि पृथि॒व्य॑सि मात॒रिश्व |
| 1 | 1 | 5 | दृꣳह॑स्व॒ मा ह्वा॒र्मा ते॑ य॒ज |
| 1 | 1 | 6 | दे॒वस्त्वा॑ सवि॒ता पु॑नातु॒ वस |
| 1 | 1 | 7 | सा वि॒श्वायु॒ः सा वि॒श्वक॑र्मा |
| 1 | 1 | 8 | अग्ने॑ व्रतपते व्र॒तं च॑रिष्या |
| 1 | 1 | 9 | कस्त्वा॑ युनक्ति॒ स त्वा॑ युनक |
| 1 | 1 | 10 | प्रत्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्ष॒ः प्रत्यु॑ष |
| 1 | 1 | 11 | धूर॑सि॒ धूर्व॒ धूर्व॑न्तं॒ धूर |
| 1 | 1 | 12 | दे॒वाना॑मसि॒ सस्नि॑तमं॒ वह्नि॑ |
| 1 | 1 | 13 | विष्णु॑स्त्वा क्रमतामु॒रु वाता |
| 1 | 1 | 14 | अ॒ग्नये॒ जुष्टं॑ गृह्णाम्य॒ग्न |
| 1 | 1 | 15 | दृꣳह॑न्तां॒ दुर्या॑ः पृथि॒व्या |
| 1 | 1 | 16 | प॒वित्रे॑ स्थो वैष्ण॒व्यौ॑ सं॑व |
| 1 | 1 | 17 | देवी॑रापो अग्रेगुवो अग्रेपुवः। |
| 1 | 1 | 18 | यु॒ष्मा इन्द्रो॑ऽवृणीत वृत्र॒त |
| 1 | 1 | 19 | दैव्या॑य॒ कर्म॑णे शुन्धध्वं दे |
| 1 | 1 | 20 | शर्मा॒स्यव॑धूत॒ꣳ रक्षोऽव॑धूता॒ |
| 1 | 1 | 21 | अद्रि॑रसि वानस्प॒त्यो ग्रावा॑स |
| 1 | 1 | 22 | अ॒ग्नेस्त॒नूर॑सि वा॒चो वि॒सर्ज |
| 1 | 1 | 23 | बृ॒हन् ग्रावा॑सि वानस्प॒त्यः स |
| 1 | 1 | 24 | कु॒क्कु॒टो॑ऽसि॒ मधु॑जिह्व॒ इष॒ |
| 1 | 1 | 25 | व॒र्षवृ॑द्धमसि॒ प्रति॑ त्वा व॒ |
| 1 | 1 | 26 | अप॑हत॒ꣳ रक्षो॑ वा॒युर्वो॒ विवि |
| 1 | 1 | 27 | धृष्टि॑र॒स्यपा॑ग्ने अ॒ग्निमा॒म |
| 1 | 1 | 28 | ध्रु॒वम॑सि पृथि॒वीं दृ॑ंह । ब्र |
| 1 | 1 | 29 | अग्ने॒ ब्रह्म॑ गृभ्णीष्व ध॒रुण |
| 1 | 1 | 30 | विश्वा॑भ्य॒स्त्वाशा॑भ्य॒ उप॑दध |
| 1 | 1 | 31 | शर्मा॒स्यव॑धूत॒ रक्षोऽव॑धूता॒ |
| 1 | 1 | 32 | धि॒षणा॑सि पर्व॒ती प्रति॒ त्वाद |
| 1 | 1 | 33 | धा॒न्य॑मसि धिनु॒हि दे॒वां धि॑न |
| 1 | 1 | 34 | प्रा॒णाय॑ त्वोदा॒नाय॑ त्वा व्य |
| 1 | 1 | 35 | वे॒दो॑सि वेद॒ येन॒ त्वं दे॑व व |
| 1 | 1 | 36 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे |
| 1 | 1 | 37 | इ॒दम॒ग्नेरि॒दम॒ग्नीषोम॑योरि॒षे |
| 1 | 1 | 38 | अ॒ग्निष्टे॒ त्वचं॒ मा हिं॑ सीद॒ |
| 1 | 1 | 39 | मा भे॒र्मा सं विं॑क्था॒ अत॑मेरु |
| 1 | 1 | 40 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे |
| 1 | 1 | 41 | पृ॒थि॒व्यै वर्मा॑सि॒ पृथि॑वि द |
| 1 | 1 | 42 | व्र॒जं ग॑च्छ गो॒ष्ठानं॒ वर्ष॑त |
| 1 | 1 | 43 | अपा॒ररु॑ वध्यासं पृथि॒व्यै दे |
| 1 | 1 | 44 | गा॒य॒त्रेण॑ त्वा॒ छन्द॑सा॒ परि |
| 1 | 1 | 45 | पु॒रा क्रू॒रस्य॑ वि॒सृपो॑ विरप |
| 1 | 1 | 46 | प्रत्यु॑ष्ट॒ꣳ रक्ष॒ः प्रत्यु॑ष |
| 1 | 1 | 47 | अदि॑त्यै॒ रास्ना॑सीन्द्रा॒ण्यै |
| 1 | 1 | 48 | अ॒ग्नेर्जि॒ह्वासि॑ सु॒भूर्दे॒व |
| 1 | 1 | 49 | तेजो॑ऽसि शु॒क्रम॑स्य॒मृत॑मसि॒ |
| 1 | 1 | 50 | यस्ते॑ प्रा॒णः प॒शुषु॒ प्रवि॑ष |
| 1 | 2 | 1 | कृष्णो॑स्याखरे॒ष्ठो॒ऽग्नये॑ त् |
| 1 | 2 | 2 | अदि॑त्यै॒ व्युन्द॑नमसि॒ विष्णो |
| 1 | 2 | 3 | भुव॑पतये॒ स्वाहा॒ भुव॑नपतये॒ स |
| 1 | 2 | 4 | यज॑मानस्य परि॒धिर॑स्य॒ग्निरि॒ळ |
| 1 | 2 | 5 | वी॒तिहो॑त्रं त्वा कवे द्यु॒मन् |
| 1 | 2 | 6 | स॒मिद॑सि । सूर्य॑स्त्वा पु॒रस् |
| 1 | 2 | 7 | ऊर्ण॑म्रदसं त्वा स्तृणामि स् |
| 1 | 2 | 8 | घृ॒ताच्य॑सि जु॒हूर्ना॒म सेदं प |
| 1 | 2 | 9 | ध्रु॒वा अ॑सदन्नृ॒तस्य॒ योनौ॒ त |
| 1 | 2 | 10 | अग्ने॑ वाजजि॒द्वाजं॑ त्वा सरि॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 11 | अस्क॑न्नम॒द्याज्यं॑ दे॒वेभ्य॒ः |
| 1 | 2 | 12 | वसु॑मतीमग्ने ते छा॒यामुप॑स्थेष |
| 1 | 2 | 13 | अग्ने॒ वेर्हो॒त्रं वेर्दू॒त्य॑ |
| 1 | 2 | 14 | स्वि॒ष्ट॒कृद्दे॒वेभ्य॒ इन्द्र॒ |
| 1 | 2 | 15 | अत्र॑ पितरो मादयध्वं यथाभा॒गमा |
| 1 | 2 | 16 | उप॑हूता पृथि॒वी मा॒तोप॒ मां पृ |
| 1 | 2 | 17 | उप॑हूतो॒ द्यौष्पि॒तोप॒ मां द्य |
| 1 | 2 | 18 | मयी॒दमिन्द्र॑ इन्द्रि॒यं द॑धात |
| 1 | 2 | 19 | देव॑ सवितरे॒तं त्वा॑ वृणते॒ बृ |
| 1 | 2 | 20 | मनो॑ गा॒यत्र्यै गा॑य॒त्री त्रि |
| 1 | 2 | 21 | ब्रह॒स्पति॑र्दे॒वाना॑ं ब्र॒ह्म |
| 1 | 2 | 22 | मि॒त्रस्य॑ त्वा॒ चक्षु॑षा॒ प्र |
| 1 | 2 | 23 | आद॑दे॒ऽग्नेष्ट्वा॒स्येन॒ प्रा |
| 1 | 2 | 24 | स्वाहा॑कृतं ज॒ठरा॒मिन्द्र॑स्य |
| 1 | 2 | 25 | इन्द्र॑स्य त्वा ज॒ठरे॑ सादयामि |
| 1 | 2 | 26 | प्रा॒णा॒पा॒नौ मे॑ पाहि समानव्य |
| 1 | 2 | 27 | ए॒षा ते॑ अग्ने स॒मित्तया॒ वर्ध |
| 1 | 2 | 28 | ए॒तत् ते॑ देव सवितर्य॒ज्ञं प्र |
| 1 | 2 | 29 | मनो॒ज्योति॑र्जुषता॒माज्य॑स्य॒ |
| 1 | 2 | 30 | अ॒ग्नीषोम॑यो॒रुज्जि॑ति॒मनूज्जे |
| 1 | 2 | 31 | वसु॑भ्यस्त्वा रु॒द्रेभ्य॑स्त्व |
| 1 | 2 | 32 | व्यन्तु॒ वयो॑रि॒प्तो रिहा॑णा म |
| 1 | 2 | 33 | च॒क्षु॒ष्पा अ॑सि॒ चक्षु॑र्मे प |
| 1 | 2 | 34 | तं त॑ ए॒तमनु॒ जोष॑ं भराम्ये॒ष |
| 1 | 2 | 35 | स॒ꣳ स्र॒वभा॑गा स्थे॒षा बृ॒हन्त |
| 1 | 2 | 36 | अग्ने॑ऽदब्धायोऽशीतम पा॒हि मा॑ |
| 1 | 2 | 37 | अ॒ग्नये॑ संवे॒शप॑तये॒ स्वाहा॒ |
| 1 | 2 | 38 | उत्प्रुषो॑ वि॒प्रुष॒ः सं जु॑हो |
| 1 | 2 | 39 | देवा॑ गातुविदो गा॒तुमि॒त्त्वा |
| 1 | 2 | 40 | संब॒र्हिर॑ङ्क्ताꣳ ह॒विषा॑ घृ॒त |
| 1 | 2 | 41 | कस्त्वा॒ विमु॑ञ्चति॒ स त्वा॒ व |
| 1 | 2 | 42 | वे॒षो॑ऽस्युपवे॒षो द्वि॑ष॒तो ग् |
| 1 | 2 | 43 | ऋ॒द्धाः क॑र्म॒ण्या॒ अन॑पायिनो॒ |
| 1 | 2 | 44 | सं वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ सं त॒नूभि॒र |
| 1 | 2 | 45 | यज्ञ॒ शं च॑ त॒ उप॑ च । शि॒वे म |
| 1 | 2 | 46 | दि॒वि विष्णु॒र्व्य॑क्रꣳस्त॒ जा |
| 1 | 2 | 47 | अ॒स्मादन्ना॑द॒स्यै प्र॑ति॒ष्ठा |
| 1 | 2 | 48 | स्व॒य॒म्भूर॑सि॒ श्रेष्ठो॑ र॒श्म |
| 1 | 2 | 49 | अग्ने॑ गृहपते सुगृहप॒तिर॒हं त् |
| 1 | 2 | 50 | अ॒स्थूरि णो॒ गार्ह॑पत्यानि सन |
| 1 | 2 | 51 | उ॒रुवि॑ष्णो॒ विक्र॑मस्वो॒रुक्ष |
| 1 | 2 | 52 | ततो॑ऽसि॒ तंतु॑र॒स्यनु॑ मा तनुह |
| 1 | 2 | 53 | इ॒दं मे॒ कर्मे॒दं वी॒र्य॑ं पु॒ |
| 1 | 2 | 54 | अ॒ग्नये॑ कव्य॒वाह॑नाय॒ स्वाहा॒ |
| 1 | 2 | 55 | ये रू॒पाणि॑ प्रतिमु॒ञ्चमा॑ना॒ |
| 1 | 2 | 56 | अत्र॑ पितरो मादयध्वं यथाभा॒गमा |
| 1 | 2 | 57 | नमो॑ वः पितर॒ः शुष्मा॑य॒ नमो॑ |
| 1 | 2 | 58 | उदायु॑षा स्वा॒युषोत्पर्जन्य॑स् |
| 1 | 2 | 59 | आध॑त्त पितरो॒ गर्भ॑ं कुमा॒रं प |
| 1 | 2 | 60 | ऊर्ज॒ं वह॑न्तीर॒मृत॑ं घृ॒तं पय |
| 1 | 3 | 1 | स॒मिधा॒ग्निं दु॑वस्यत घृ॒तैर्ब |
| 1 | 3 | 2 | सुस॑मिद्धाय शो॒चिषे॑ घृ॒तं ती॒ |
| 1 | 3 | 3 | तं त्वा॑ स॒मिद्भि॑रङ्गिरो घृ॒त |
| 1 | 3 | 4 | उप॑ त्वाग्ने ह॒विष्म॑तीर्घृ॒ता |
| 1 | 3 | 5 | भूर्भुव॒ः स्व॒र्द्यौरि॑व भू॒म् |
| 1 | 3 | 6 | आयं गौः पृश्नि॑रक्रमी॒दस॑दन् म |
| 1 | 3 | 7 | अ॒न्तश्च॑रति रोच॒नास्य प्रा॒णा |
| 1 | 3 | 8 | त्रि॒ꣳ शद्धाम॒ विरा॑जति॒ वाक् |
| 1 | 3 | 9 | अ॒ग्निर्ज्योति॑षं त्वा वायु॒मत |
| 1 | 3 | 10 | सूर्य॑ ज्योतिषं त्वा वायु॒मतीं |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता प्रथम दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 3 | 11 | स॒जूर्दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॒जू रा |
| 1 | 3 | 12 | स॒जूर्दे॒वेन॑ सवि॒त्रा स॒जूरु॒ |
| 1 | 3 | 13 | इ॒ह पुष्टिं॒ पुष्टिं॑पतिर्दधात् |
| 1 | 3 | 14 | अ॒न॒मि॒त्रं मे॑ अध॒रागं॑नमि॒त्र |
| 1 | 3 | 15 | इन्द्रः॑ प॒श्चादिन्द्रः॑ पु॒रस |
| 1 | 3 | 16 | स॒मिदं॑सि॒ समिं॑द्धो मे अग्ने दी |
| 1 | 3 | 17 | उ॒प॒प्र॒यन्तो॑ अध्व॒रं मन्त्रं |
| 1 | 3 | 18 | अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत्पत |
| 1 | 3 | 19 | उ॒भा वा॑मिन्द्राग्नी आहु॒वध्या |
| 1 | 3 | 20 | अ॒यं ते॒ योनि॑र्ऋ॒त्वियो॒ यतो॑ |
| 1 | 3 | 21 | अ॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि |
| 1 | 3 | 22 | अ॒स्य प्र॒त्नामनु॒ द्युतं॑ꣳ शु॒ |
| 1 | 3 | 23 | त॒नू॒पा अं॑ग्नेऽसि त॒न्वं॑ मे प |
| 1 | 3 | 24 | अग्ने॒ यन्मे॑ त॒न्वा॑ ऊ॒नं तन् |
| 1 | 3 | 25 | वयं॑स्वन्तो वय॒स्कृत॒ꣳ सहं॑स्वन् |
| 1 | 3 | 26 | चित्रा॑वसो स्व॒स्ति ते॑ पा॒रम॑ |
| 1 | 3 | 27 | सं प्रि॒येण॒ धाम्ना॒ सम॒हमायु॑ |
| 1 | 3 | 28 | ऊर्ज॒ स्थोर्जं॑ वो भक्षीय रा॒य |
| 1 | 3 | 29 | इ॒हैव स्ते॒तो माप॑गात । स॒ꣳ हि |
| 1 | 3 | 30 | उप॑ त्वाग्ने दि॒वेदि॑वे॒ दोषा॑ |
| 1 | 3 | 31 | राजं॑न्तमध्व॒राणां॑ गो॒पामृ॒तस् |
| 1 | 3 | 32 | स नः॑ पि॒तेव॑ सू॒नवेऽग्ने॑ सूप |
| 1 | 3 | 33 | अग्ने॒ त्वं नो॒ अन्त॑म उ॒त त्र |
| 1 | 3 | 34 | तं त्वा॑ शोचिष्ठ दीदिवः सु॒म्न |
| 1 | 3 | 35 | इळ॒ एह्यदि॑त॒ एहिं॑ काम्या॒ एहि |
| 1 | 3 | 36 | सो॒मा॒नꣳ॒ स्वर॑णं कृणु॒हि ब्रं॑ह |
| 1 | 3 | 37 | यो रे॒वान्यो अं॑मीव॒हा वं॑सु॒वित |
| 1 | 3 | 38 | मा न॒ः शꣳ सो॒ अरं॑रुषो धू॒र्तिः |
| 1 | 3 | 39 | महिं॑ त्री॒णामवो॑ऽस्तु द्यु॒क्ष |
| 1 | 3 | 40 | न॒हि तेषां॑म॒मा च॒न नाध्वं॑सु वा |
| 1 | 3 | 41 | ते हि पु॒त्रासो॒ अदिं॑ते॒ः प्र |
| 1 | 3 | 42 | क॒दा च॒न स्त॒रीरं॑सि॒ नेन्द्रं॑ |
| 1 | 3 | 43 | तत् सं॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ |
| 1 | 3 | 44 | परिं॑ ते दू॒ळभो॒ रथो॒ऽस्माँ३ अं॑ |
| 1 | 3 | 45 | भूर्भुव॒ः स्वः॑ सुप्र॒जाः प्र॒ |
| 1 | 3 | 46 | नर्यं॑ प्र॒जां मे॑ पाहि॒ शꣳस्यं॑ |
| 1 | 3 | 47 | अग्ने॑ सम्रा॒ळभि द्यु॒म्नम॒भि |
| 1 | 3 | 48 | अग्ने॑ गृहपते॒ऽभि द्यु॒म्नम॒भि |
| 1 | 3 | 49 | ऊर्जं॒ बिभ्रं॑द्वः सु॒मनाः॑ सु॒म |
| 1 | 3 | 50 | गृ॒हानुपं॑ह्वयामहे॒ ते नो॑ जानन |
| 1 | 3 | 51 | अथो॒ अन्नं॑स्य की॒लाल॒ उपं॑हूतो |
| 1 | 3 | 52 | प्र॒घा॒सिनो॑ हवामहे म॒रुतं॑श्च |
| 1 | 3 | 53 | यद् ग्रामे॒ यदरं॑ण्ये॒ यत्स॒भाय |
| 1 | 3 | 54 | मो षू णं॑ इ॒न्द्रात्रं॑ पृ॒त्सु |
| 1 | 3 | 55 | अक्र॒न् कर्म॑ कर्म॒कृतः॑ स॒ह व |
| 1 | 3 | 56 | अवं॑भृथ निचुम्पुण निचे॒रुरं॑सि न |
| 1 | 3 | 57 | पू॒र्णा दं॑र्वि॒ परा॑ पत॒ सुपूं॑ |
| 1 | 3 | 58 | दे॒हि मे॒ ददा॑मि ते॒ नि मे॑ धे |
| 1 | 3 | 59 | अक्ष॒न्नमीं॑मदन्त॒ह्यव॑ प्रि॒या |
| 1 | 3 | 60 | सु॒सं॒दृशं॑ त्वा व॒यं मघं॑वन् व |
| 1 | 3 | 61 | मनो॒ न्वाहुं॑वामहे नाराश॒ꣳसेन॒ |
| 1 | 3 | 62 | आ नं॑ एतु॒ मन॒ः पुन॒ः क्रत्वे॒ |
| 1 | 3 | 63 | पुनं॑र्नः पितरो॒ मनो॒ ददा॑तु दै |
| 1 | 3 | 64 | व॒यँ सोम॑ व्र॒ते तव॒ मनं॑स्त॒नू |
| 1 | 3 | 65 | ए॒ष ते॑ रुद्र भा॒गः स॒ह स्वस्र |
| 1 | 3 | 66 | अव॑ रु॒द्रमं॑दीम॒ह्यव॑ दे॒वं त् |
| 1 | 3 | 67 | भे॒ष॒जमं॑सि भेष॒जं गवेऽश्वा॑य॒ |
| 1 | 3 | 68 | त्र्यंम्बकं यजामहे सुग॒न्धिं प |
| 1 | 3 | 69 | त्र्यंम्बकं यजामहे सुग॒न्धिं प |
| 1 | 3 | 70 | ए॒तेनं॑ रुद्राव॒सेनं॑ प॒रो मूजं॑व |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 3 | 71 | वा॒जिनां॒ वाजो॑ऽवतु भ॒क्षो अस् |
| 1 | 3 | 72 | वा॒ज्य॒हं वाजिन॒स्यो॑पहूत॒ उप॑ |
| 1 | 3 | 73 | स॒वि॒त्रा प्रसू॑ता॒ दैव्य॒ आप॑ |
| 1 | 3 | 74 | क॒श्यप॑स्य त्र्यायु॒षं ज॒मद॑ग् |
| 1 | 3 | 75 | येन॑ धा॒ता बृह॒स्पते॒रिन्द्र॑स |
| 1 | 3 | 76 | दी॒र्घा॒यु॒त्वाय॒ बला॑य॒ वर्च॑ |
| 1 | 4 | 1 | एदम॑गन्म देव॒यज॑नं पृथि॒व्या य |
| 1 | 4 | 2 | इ॒मा आप॒ः शमु॑ मे सन्तु दे॒वीर |
| 1 | 4 | 3 | विश्व॒ꣳ हि रि॒ प्रं प्र॒वह॑न्त |
| 1 | 4 | 4 | म॒हीनां॒ पयो॑ऽसि वर्चो॒दा अ॑सि |
| 1 | 4 | 5 | चि॒त्पति॑र्मा पुनातु वा॒क्पति॑ |
| 1 | 4 | 6 | आ वो॑ देवास ईमहे वा॒मं प्र॑य॒त |
| 1 | 4 | 7 | स्वाहा॑ य॒ज्ञं मन॑स॒ः स्वाहो॒र |
| 1 | 4 | 8 | आकू॑त्यै प्र॒युजे॒ऽग्नये॒ स्वा |
| 1 | 4 | 9 | विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 4 | 10 | ऋ॒क्सा॒मयो॒ः शिल्पे॑ स्थ॒स्ते |
| 1 | 4 | 11 | शर्मा॑सि॒ शर्म॑ मे यच्छ॒ नम॑स् |
| 1 | 4 | 12 | सोम॑स्य नी॒विर॑सि॒ विष्णो॒ः शर |
| 1 | 4 | 13 | उच्छ्र॑यस्व वनस्पत ऊ॒र्ध्वो मा |
| 1 | 4 | 14 | व्र॒तं कृ॑णुत व्र॒तं कृ॑णुत व् |
| 1 | 4 | 15 | दैवीं॒ धिय॑ मनामहे सुमृळी॒काम |
| 1 | 4 | 16 | ये दे॒वा मनो॑जाता मनो॒युजो॒ दक |
| 1 | 4 | 17 | श्वा॒त्राः पी॒ता भ॑वत यूयमा॑प |
| 1 | 4 | 18 | इ॒यं ते॑ य॒ज्ञिया॑ त॒नू॒रपो मु |
| 1 | 4 | 19 | अग्ने॒ त्वꣳ सु जा॑गृहि व॒यꣳ सु |
| 1 | 4 | 20 | पुन॒र्मन॒ः पुन॒रायु॑र्म॒ आगा॒त |
| 1 | 4 | 21 | त्वम॑ग्ने व्रत॒पा अ॑सि दे॒व आ |
| 1 | 4 | 22 | रास्वेय॑त्सो॒मा भूयो॑ भर । दे॒ |
| 1 | 4 | 23 | ए॒षा ते॑ शुक्र त॒नूरे॒तद्वर्च॒ |
| 1 | 4 | 24 | तस्या॑स्ते स॒त्यस॑वसः प्रस॒वे |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 4 | 25 | चिद॑सि म॒नासि॒ धीर॑सि॒ दक्षि॑ण |
| 1 | 4 | 26 | मि॒त्रस्त्वा॑ प॒दि ब॑ध्नीतां प |
| 1 | 4 | 27 | सा दे॑वि दे॒वमच्छे॒हीन्द्रा॑य॒ |
| 1 | 4 | 28 | वस्व्य॒स्यदि॑तिरस्यादि॒त्यासि॑ |
| 1 | 4 | 29 | अदि॑त्यास्त्वा मू॒र्धन्नाजि॑घर |
| 1 | 4 | 30 | अ॒स्मे र॑मस्वा॒स्मे ते॒ बन्धुः |
| 1 | 4 | 31 | मा व॒यꣳ रा॒यस्पोषे॑ण॒ वियौ॑ष्म |
| 1 | 4 | 32 | ए॒ष ते॑ गाय॒त्रो भा॒ग इति॑ मे॒ |
| 1 | 4 | 33 | आ॑स्मा॒को॑ऽसि शु॒क्रस्ते॒ ग्रह |
| 1 | 4 | 34 | अ॒भि त्यं दे॒वꣳ स॑वि॒तार॑मो॒ण् |
| 1 | 4 | 35 | प्र॒जाभ्य॑स्त्वा प्र॒जास्त्वा॑ |
| 1 | 4 | 36 | च॒न्द्रं त्वा च॒न्द्रेण॑ क्रीण |
| 1 | 4 | 37 | तप॑सस्त॒नूर॑सि प्र॒जाप॑ते॒र्वर |
| 1 | 4 | 38 | मि॒त्रो न॒ एहि॒ सुमि॑त्रध॒ इन् |
| 1 | 4 | 39 | स्वान॒ भ्राजाङ्घा॑रे॒ हस्त॒ सु |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 4 | 40 | परि॑ माग्ने॒ दुश्च॑रिताद्बाध॒स |
| 1 | 4 | 41 | प्रति॒ पन्था॑मपद्महि स्वस्ति॒ग |
| 1 | 4 | 42 | अदि॑त्या॒स्त्वग॒स्यदि॑त्यै॒ सद |
| 1 | 4 | 43 | वने॑षु॒ व्य॒न्तरि॑क्षं तता॒न॒ व |
| 1 | 4 | 44 | सूर्य॑स्य॒ चक्षु॒रारो॑हा॒ग्नेर |
| 1 | 4 | 45 | उस्रा॒ एत॑ धूर्वाहौ यु॒ज्येथा |
| 1 | 4 | 46 | भ॒द्रो मे॑ऽसि॒ प्रच्य॑वस्व भुव |
| 1 | 4 | 47 | नमो॑ मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य॒ चक्ष |
| 1 | 4 | 48 | वरु॑णस्यो॒त्तम्भ॑नमसि॒ वरु॑णस् |
| 1 | 4 | 49 | या ते॒ धामा॑नि ह॒विषा॒ यज॑न्ति |
| 1 | 5 | 1 | अ॒ग्नेस्त॒नूर॑सि॒ विष्ण॑वे त्व |
| 1 | 5 | 2 | अ॒ग्नेर्ज॒नित्र॑मसि वृष॑णौ स्थ |
| 1 | 5 | 3 | भव॑तं न॒ः सम॑नसौ॒ सचे॑तसाअरे॒प |
| 1 | 5 | 4 | अ॒ग्ना अ॒ग्निश्च॑रति॒ प्रवि॑ष् |
| 1 | 5 | 5 | आप॑तये त्वा गृह्णामि॒ परि॑पतये |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 5 | 6 | अना॑धृष्टमस्यनाधृ॒ष्यं दे॒वाना | 1 | 5 | 21 | इरा॑वती धेनु॒मती॒ हि भू॒तꣳ सू॑ | 1 | 5 | 36 | ब्रह्म॑ दृꣳह क्ष॒त्रं दृꣳहायु | 1 | 5 | 51 | उ॒रु वि॑ष्णो॒ विक्र॑मस्वो॒रु क |
| 1 | 5 | 7 | अञ्ज॑सा स॒त्यमुप॑गेषꣳ सुवि॒ते | 1 | 5 | 22 | दे॒व॒श्रुतौ॑ दे॒वेष्वाघो॑षतम् | 1 | 5 | 37 | परि॑ त्वा गिर्वणो॒ गिर॑ इ॒मा भ | 1 | 5 | 52 | अत्य॒न्याँ३ अगा॒ं नान्याँ३ उपा |
| 1 | 5 | 8 | या तव॑ त॒नूरि॒यꣳ सा मयि॒ या मम | 1 | 5 | 23 | स्वं गो॒ष्ठमाव॑दतं देवी दुर्ये | 1 | 5 | 38 | इन्द्र॑स्य॒ स्यू॒रसीन्द्र॑स्य | 1 | 5 | 53 | तं त्वा॑ जुषामहे देव वनस्पते द |
| 1 | 5 | 9 | अ॒ꣳशुर॑ꣳशुष्टे देव सो॒माप्या॑य | 1 | 5 | 24 | विष्णो॒र्नुकं॑ वी॒र्या॑णि॒ प्र | 1 | 5 | 39 | वि॒भूर॑सि प्र॒वाह॑णो॒ वह्नि॑रस | 1 | 5 | 54 | ओष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ मै |
| 1 | 5 | 10 | आप्या॑यया॒स्मान् सखी॑न्त्स॒न्य | 1 | 5 | 25 | दि॒वो वा॑ विष्ण उ॒त वा॑ पृथि॒व | 1 | 5 | 40 | उ॒शिग॑सि क॒विरङ्घा॑रिरसि॒ बम्भ | 1 | 5 | 55 | अ॒यꣳ हि त्वा॒ स्वधि॑ति॒स्तेति॑ |
| 1 | 5 | 11 | एष्टा॒ राय॒ः प्रेषे भगा॑य । ऋ॒ | 1 | 5 | 26 | प्र तद्विष्णु॑ स्तवते वी॒र्ये॑ | 1 | 5 | 41 | ऋ॒तधा॑मासि॒ स्व॑र्ज्योतिः समु॒ | 1 | 6 | 1 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे |
| 1 | 5 | 12 | या ते॑ अग्ने यःश॒या त॒नूर्वर्ष | 1 | 5 | 27 | विष्णो॑ र॒राट॑मसि विष्णो॒ः श्न | 1 | 5 | 42 | स॒म्राळ॑सि कृ॒शानु॑ः परि॒षद्यो | 1 | 6 | 2 | अ॒ग्रे॒णीर॑सि स्वावे॒श उ॑न्नेत |
| 1 | 5 | 13 | त॒प्तायं॑नी मेऽसि वि॒त्तायं॑नी म | 1 | 5 | 28 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे | 1 | 5 | 43 | स॒मू॒ह्यो॑ऽसि वि॒श्ववे॑दा ऊनात | 1 | 6 | 3 | या ते॒ धामा॑न्यु॒श्मसि॒ गम॑ध्य |
| 1 | 5 | 14 | वि॒दे॒दग्नि॒र्न॒भो नामाग्ने॑ अङ | 1 | 5 | 29 | इ॒दम॒हं तं व॑ल॒गमुद्व॑पामि॒ यन | 1 | 5 | 44 | ज्योति॑रसि वि॒श्वरू॑प॒ं विश्वे | 1 | 6 | 4 | ब्र॒ह्म॒वनि॑ त्वा क्षत्र॒वनि॑ |
| 1 | 5 | 15 | इ॒न्द्र॒घो॒षस्त्वा॒ वसु॑भिः पु | 1 | 5 | 30 | स्व॒राळ॑सि सपत्न॒हा स॑त्र॒राळ॑ | 1 | 5 | 45 | अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्म | 1 | 6 | 5 | विष्णो॒ः कर्मा॑णि पश्यत॒ यतो॑ |
| 1 | 5 | 16 | इ॒दम॒हं त॒प्तं वार्ब॑हि॒र्धा य | 1 | 5 | 31 | र॑क्षो॒हणो॑ वलग॒हन॒ः प्रोक्षा॑ | 1 | 5 | 46 | अ॒यं नो॑ अ॒ग्निर्वरि॑वस्कृणोत् | 1 | 6 | 6 | तद्विष्णो॑ः पर॒मं प॒दꣳ सदा॑ पश |
| 1 | 5 | 17 | सि॒ꣳह्य॑सि ब्र॒ह्म॒वनिः॑ क्षत्र | 1 | 5 | 32 | र॒क्षो॒हणौ॑ वलग॒हना॒ उप॑दधामि | 1 | 5 | 47 | उ॒रु वि॑ष्णो॒ विक्र॑मस्वो॒रु क | 1 | 6 | 7 | प॒रि॒ वीर॑सि॒ परि॑ त्वा॒ दैवी॒ |
| 1 | 5 | 18 | ध्रु॒वो॑ऽसि पृथि॒वीं दृ॑ꣳह ध्र | 1 | 5 | 33 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे | 1 | 5 | 48 | देव॑ सवितरे॒ष ते॒ सोम॒स्तꣳ र॑क | 1 | 6 | 8 | उ॒पा॒वीर॒स्युप॑ दे॒वान् दैवी॒र |
| 1 | 5 | 19 | यु॒ञ्जते॒ मन॑ उ॒त यु॑ञ्जते॒ धि | 1 | 5 | 34 | शुन्ध॑न्ताँल्लो॒काः पि॑तृ॒षद॑न | 1 | 5 | 49 | इ॒दम॒हं म॑नु॒ष्या॑न्त्स॒ह रा॒य | 1 | 6 | 9 | रेव॑ती॒ रम॑ध्व॒ं बृह॑स्पते धा॒ |
| 1 | 5 | 20 | इ॒दं विष्णु॒र्वि च॑क्रमे त्रे॒ध | 1 | 5 | 35 | द्यु॒ता॒नस्त्वा॑ मारु॒तो मि॑नो | 1 | 5 | 50 | या तव॑ त॒नूर्मय्य॒भू॑दे॒षा सा त | 1 | 6 | 10 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 6 | 11 | अ॒पां पे॒रुर॑स्यापो॑ दे॒वीः सं॑ | 1 | 6 | 26 | दिशः॑ प्र॒दिश॑ आ॒दिशो॑ वि॒दिश॑ | 1 | 6 | 41 | कार्षि॑रसि समु॒द्रस्य॒ त्वा क् | 1 | 7 | 6 | आ वा॑यो भूष शुचिपा॒ उप॑ नः स॒ह |
| 1 | 6 | 12 | सं ते॑ प्रा॒णो वाते॑न गच्छता॒ꣳ | 1 | 6 | 27 | देवं॑ त्वष्ट॒र्भूरि॑ ते॒ सꣳस॑मे | 1 | 6 | 42 | यम॑ग्ने पृ॒त्सु मर्त्य॒मवा॒ वा | 1 | 7 | 7 | इन्द्र॑वायू इ॒मे सु॒ता उप॒ प्र |
| 1 | 6 | 13 | घृ॒तेना॒क्तौ प॒शूँस्त्रा॑येथा॒ | 1 | 6 | 28 | स॒मु॒द्रं ग॑च्छ॒ स्वाहा॑ दे॒वꣳ | 1 | 6 | 43 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे | 1 | 7 | 8 | अ॒यं वां॑ मित्रावरुणा सु॒तः सो |
| 1 | 6 | 14 | उ॒रोर॒न्तरि॑क्षात्स॒जूर्दे॒वेन | 1 | 6 | 29 | दिवं॑ ते धू॒मो ग॑च्छत्व॒न्तरि | 1 | 6 | 44 | मनो॑ मे तर्पयत॒ वाचं॑ मे तर्पय | 1 | 7 | 9 | रा॒या व॒यꣳ स॑स॒वाꣳसो॑ मदेम ह॒व |
| 1 | 6 | 15 | वर्षो॒ वर्षी॑यसि य॒ज्ञे य॒ज्ञप | 1 | 6 | 30 | मापो मौष॑धीर्हिꣳसी॒र्धाम्नो॑धा | 1 | 6 | 45 | इन्द्रा॑य त्वा॒ वसु॑मते रु॒द्र | 1 | 7 | 10 | या वां॒ कशा॒ मधु॑म॒त्याश्वि॑ना |
| 1 | 6 | 16 | नम॑स्त आतानान॒र्वा प्रेहि॑ । घ | 1 | 6 | 31 | सु॒मि॒त्रि॒या न॒ आप॒ ओष॑धयः सन | 1 | 6 | 46 | यत्ते॑ सोम दि॒वि ज्योति॒र्यत्प | 1 | 7 | 11 | तं प्र॒त्नथा॑ पू॒र्वथा॑ वि॒श्व |
| 1 | 6 | 17 | देवी॑रापः शु॒द्धा वो॑ढ्व॒ꣳ सुप | 1 | 6 | 32 | इ॒दमा॑प॒ः प्रव॑हत॒ यत्किं च॑ द | 1 | 6 | 47 | श्वा॒त्रा स्थ॑ वृत्र॒तुरो॒ राध | 1 | 7 | 12 | ए॒ष ते॒ योनि॑र्वी॒रता॑ पा॒ह्य |
| 1 | 6 | 18 | वाचं॑ ते शुन्धामि प्रा॒णं ते॑ | 1 | 6 | 33 | ह॒विष्म॑तीरि॒मा आपो॑ ह॒विष्माँ | 1 | 6 | 48 | मा भे॒र्मा संवि॑क्था॒ ऊर्जं॑ ध | 1 | 7 | 13 | अच्छि॑न्नस्य ते देव सोम सु॒वीर |
| 1 | 6 | 19 | मन॑स्त॒ आप्या॑यतां॒ वाक्त॒ आप् | 1 | 6 | 34 | अ॒ग्नेर्वो॑ऽपन्न॑गृहस्य॒ सद॑सि | 1 | 6 | 49 | प्रागपा॒गुद॑गध॒राक्स॒र्वत॑स्त् | 1 | 7 | 14 | स प्र॑थ॒मो बृह॒स्पति॑श्चिकि॒त् |
| 1 | 6 | 20 | ओष॑धे॒ त्राय॑स्व॒ स्वधि॑ते॒ मै | 1 | 6 | 35 | अ॒मूर्या उप॒ सूर्ये॒ याभि॑र्वा | 1 | 6 | 50 | त्वम॒ङ्ग प्रश॑ꣳसिषो दे॒वः श॑वि | 1 | 7 | 15 | अ॒यं वे॒नश्चो॑दय॒त्पृश्नि॑गर्भ |
| 1 | 6 | 21 | इ॒दम॒हꣳ रक्षो॒ऽभिति॑ष्ठामी॒दम॒ | 1 | 6 | 36 | हृ॒दे त्वा॒ मन॑से त्वा दि॒वे त | 1 | 7 | 1 | वा॒चस्पत॑ये पवस्व॒ वृष्णो॑ अ॒ꣳ | 1 | 7 | 16 | मनो॒ न येषु॒ हव॑नेषु ति॒ग्मं व |
| 1 | 6 | 22 | घृ॒तेन॑ द्यावापृथिवी॒ प्रोर्ण् | 1 | 6 | 37 | सोम॑ राज॒न्विश्वा॒स्त्वं प्र॒ज | 1 | 7 | 2 | यत्ते॑ सो॒मादा॑भ्य॒ं नाम॒ जागृ | 1 | 7 | 17 | ए॒ष ते॒ योनिः॑ प्र॒जाः पा॒ह्यप |
| 1 | 6 | 23 | सं ते॒ मनो॒ मन॑सा॒ सं प्रा॒णः | 1 | 6 | 38 | शृ॒णोत्व॒ग्निः स॒मिधा॒ हवं॑ म | 1 | 7 | 3 | मन॑स्त्वाष्टु॒ स्वाहा॑ त्वा स् | 1 | 7 | 18 | अच्छि॑न्नस्य ते देव सोम सु॒वीर |
| 1 | 6 | 24 | वात॑स्य त्वा॒ ध्राज्यै॑ पू॒ष्ण | 1 | 6 | 39 | देवी॑रापो अपां नपा॒द्यो वं॑ ऊ॒र | 1 | 7 | 4 | उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॑ऽस्य॒न्तर्य॑च् | 1 | 7 | 19 | स प्र॑थ॒मो बृह॒स्पति॑श्चिकिꣳस् |
| 1 | 6 | 25 | घृतं घृ॑तपावानः पिबत॒ वसां॑ व | 1 | 6 | 40 | तं दे॒वेभ्यो॑ देव॒त्रा दा॑त शु | 1 | 7 | 5 | अ॒न्तस्ते॒ द्यावा॑पृथि॒वी द॑धा | 1 | 7 | 20 | ये दे॑वासो दि॒व्येका॑दश॒ स्थ प |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 7 | 21 | उपयामगृहीतोऽस्याग्रयणोऽस |
| 1 | 7 | 22 | विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पा |
| 1 | 7 | 23 | अस्मै ब्रह्मणे पवतेऽस्मै क् |
| 1 | 7 | 24 | उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त् |
| 1 | 7 | 25 | देवेभ्यस्त्वा देवायुवं गृह |
| 1 | 7 | 26 | मूर्धानं दिवो अरतिं पृथि |
| 1 | 7 | 27 | उपयामगृहीतोऽसि ध्रुवोऽसि |
| 1 | 7 | 28 | ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा |
| 1 | 7 | 29 | यस्ते द्रप्स स्कन्दति यस्त |
| 1 | 7 | 30 | उपयामगृहीतोऽसि मधवे त्वो |
| 1 | 7 | 31 | इन्द्राग्नी आगत॑ सुतं गीर |
| 1 | 7 | 32 | आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृ |
| 1 | 7 | 33 | ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देव |
| 1 | 7 | 34 | विश्वे देवास आगत शृणुता मं |
| 1 | 7 | 35 | इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 7 | 36 | मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानम |
| 1 | 7 | 37 | उपयामगृहीतोऽसि मरुतां ओज |
| 1 | 7 | 38 | सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भि |
| 1 | 7 | 39 | महाँ३ इन्द्रो नृवदा चर्षणि |
| 1 | 7 | 40 | महाँ३ इन्द्रो य ओजसा पर्जन |
| 1 | 8 | 1 | कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र |
| 1 | 8 | 2 | कदा चन प्रयुच्छस्युभे निपा |
| 1 | 8 | 3 | यज्ञो देवानां प्रत्येति सु |
| 1 | 8 | 4 | श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यद |
| 1 | 8 | 5 | वाममद्य सवितर्वाममु श्वो |
| 1 | 8 | 6 | उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽ |
| 1 | 8 | 7 | उपयामगृहीतोऽसि सुशर्मासि |
| 1 | 8 | 8 | उपयामगृहीतोऽसि बृहस्पति |
| 1 | 8 | 9 | अहं परस्तादहमवस्ताद्यदन |
| 1 | 8 | 10 | अग्ने वाक्पत्नि सजूर्देवेन |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 8 | 11 | प्रजापतिर्वृषासि रेतोधा र |
| 1 | 8 | 12 | उपयामगृहीतोऽसि हरिरसि हा |
| 1 | 8 | 13 | यस्ते देव सोमश्वसनिर्भक्षो |
| 1 | 8 | 14 | युक्ष्वा हि केशिना हरी वृष |
| 1 | 8 | 15 | आतिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता |
| 1 | 8 | 16 | इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृ |
| 1 | 8 | 17 | यस्मान्न जातः परो अन्यो अस |
| 1 | 8 | 18 | इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च |
| 1 | 8 | 19 | अग्न आयूꣳषि पवस आसुवोर्जम |
| 1 | 8 | 20 | अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे व |
| 1 | 8 | 21 | उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी |
| 1 | 8 | 22 | अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो |
| 1 | 8 | 23 | उदु त्यं जातवेदसं देवं वह |
| 1 | 8 | 24 | चित्रं देवानामुदगादनीकं |
| 1 | 8 | 25 | वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 1 | 8 | 26 | वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतय |
| 1 | 8 | 27 | विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः |
| 1 | 8 | 28 | विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त |
| 1 | 8 | 29 | उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्व |
| 1 | 8 | 30 | व्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधून |
| 1 | 8 | 31 | ककुह॑ रूपं वृषभस्य रोचते |
| 1 | 8 | 32 | उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प् |
| 1 | 9 | 1 | प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे |
| 1 | 9 | 2 | क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा |
| 1 | 9 | 3 | आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे प |
| 1 | 9 | 4 | कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को |
| 1 | 9 | 5 | भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्र |
| 1 | 9 | 6 | उदु त्यं जातवेदसं देवं वह |
| 1 | 9 | 7 | चित्रं देवानामुदगादनीकं |
| 1 | 9 | 8 | अग्ने नय सुपथा राये अस्म |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता प्रथम दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 9 | 9 | अ॒यं नो॑ अ॒ग्निर्वरि॑वस्कृणोत् | 1 | 9 | 24 | अ॒ग्नेरनी॑कम॒प आवि॑वेशा॒पां नप | 1 | 9 | 39 | इन्द्र॑श्च म॒रुत॑श्च क्र॒यायो॒ | 1 | 10 | 8 | देवी॑रापो अपांनपा॒द्यो व॑ ऊ॒र् |
| 1 | 9 | 10 | रू॒पेण॑ वो रू॒पम॒भ्यागां॑ तु॒थ | 1 | 9 | 25 | स॒मु॒द्रे ते॒ हृद॑यम॒प्स्व॒न्त | 1 | 9 | 40 | विष्णु॑ः शिपिवि॒ष्ट ऊ॒रा आस॑न् | 1 | 10 | 9 | अ॒प्स्व॒न्त॒र॒मृत॑म॒प्सु भे॑ष॒ज |
| 1 | 9 | 11 | वि स्व॒ः पश्य॒व्य॒न्तरि॑क्षं॒ | 1 | 9 | 26 | देवी॑राप ए॒ष वो॒ गर्भ॒स्तꣳ सुप | 1 | 9 | 41 | अ॒ग्निराग्नी॑ध्र॒ इन्द्रो॑ हवि | 1 | 10 | 10 | वातो॑ वा वो॒ मनो॑ वा गन्ध॒र्वा |
| 1 | 9 | 12 | अ॒स्मद्रा॑ता देव॒त्रा ग॑च्छ प् | 1 | 9 | 27 | एज॑तु दश॑मास्यो॒ गर्भो॑ ज॒राय | 1 | 9 | 42 | विष्णु॑राप्रीत॒पा आ॑प्या॒य्यमा | 1 | 10 | 11 | वात॑रꣳहा भव वाजिन्यु॒ज्यमा॑न॒ |
| 1 | 9 | 13 | आयु॑र्दा॒त्र ए॑धि॒ मयो॒ मह्यं᳚ | 1 | 9 | 28 | यस्या॑स्ते य॒ज्ञियो॒ गर्भो॒ यस | 1 | 9 | 43 | शु॒क्रः क्षीर॑श्री॒र्म॒न्थी स॑ | 1 | 10 | 12 | ज॒वो यस्ते॑ वाजि॒न्निहि॑तो॒ गु |
| 1 | 9 | 14 | को॑ऽदा॒त्कस्मा॑ अदा॒त्कामो॑ऽदा | 1 | 9 | 29 | पु॒रु॒द॒स्मो विषु॑रूप॒ इन्दु॑र | 1 | 9 | 44 | रु॒द्रो हू॒यमा॑नो॒ वातो॒ऽभ्याव | 1 | 10 | 13 | वाजि॑नो वाजजितो॒ वाज॑ꣳ सरि॒ष्य |
| 1 | 9 | 15 | समि॑न्द्र णो॒ मन॑सा नेषि॒ गोभि | 1 | 9 | 30 | मरु॑तो॒ यस्य॒ हि क्षये॑ पा॒था | 1 | 9 | 45 | ययो॒रोज॑सा स्कभि॒ता रजा॑ꣳसि वी | 1 | 10 | 14 | दे॒वस्य॑ व॒यꣳ स॑वि॒तुः स॒वे स॒ |
| 1 | 9 | 16 | सं वर्च॑सा॒ पय॑सा॒ सं त॒नूभि॒र | 1 | 9 | 31 | म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न इ॒मं | 1 | 9 | 46 | दे॒वान् दिव॑मगन्य॒ज्ञस्ततो॑ मा | 1 | 10 | 15 | बृह॑स्पते॒ वाजं᳚ जय॒ बृह॒स्पत॑ |
| 1 | 9 | 17 | धा॒ता रा॒तिः स॑वि॒तेदं जु॑षन्त | 1 | 9 | 32 | आजि॑घ्र क॒लशं᳚ म॒ह्या त्वा॑ वि | 1 | 10 | 1 | देव॑ सवित॒ः प्रसु॑व य॒ज्ञं प्र | 1 | 10 | 16 | इन्द्र॒ वाजं᳚ ज॒येन्द्रा॑य॒ वा |
| 1 | 9 | 18 | सु॒गा वो॑ देवा॒ः सद॑ना अकर्म॒ | 1 | 9 | 33 | हव्ये॒ काम्ये॒ इळे॒ रन्ते॒ चन्द | 1 | 10 | 2 | ध्रु॒व॒सदं᳚ त्वा नृ॒षदं᳚ मन॒ःस | 1 | 10 | 17 | ए॒षा व॒ः सा स॒त्या सं॒वाग॑भू॒द |
| 1 | 9 | 19 | याँ३ आव॑ह उश॒तो दे॑व दे॒वाꣳस्त | 1 | 9 | 34 | इ॒ह रति॑रि॒ह र॑मध्वमि॒ह धृति॑र | 1 | 10 | 3 | अ॒प्सु॒षदं᳚ त्वा घृत॒सदं᳚ व्यो | 1 | 10 | 18 | दे॒वस्य॑ व॒यꣳ स॑वि॒तुः स॒वे स॒ |
| 1 | 9 | 20 | व॒यꣳ हि त्वा॑ प्रय॒ति य॒ज्ञे अ | 1 | 9 | 35 | अग॑न्म॒ ज्योति॑र॒मृता॑ अभूम॒ द | 1 | 10 | 4 | अ॒पाꣳ रस॒मुद्व॑यस॒ꣳ सूर्ये॒ सन | 1 | 10 | 19 | वाजि॑नो॒ वाजं᳚ जय॒ताध्व॑न स्क॒ |
| 1 | 9 | 21 | देवा॑ गातुविदो गा॒तुमि॒त्त्वा | 1 | 9 | 36 | यु॒वं तमि॑न्द्रापर्वता पुरो॒यु | 1 | 10 | 5 | ग्रहा॑ ऊर्जाहुतयो॒ व्यन्तो॒ वि | 1 | 10 | 20 | ए॒ष स्य वा॒जी क्षि॑प॒णिं तु॑रण |
| 1 | 9 | 22 | यज्ञ॑ य॒ज्ञं ग॑च्छ य॒ज्ञप॑तिं | 1 | 9 | 37 | भूर्भुव॒ः स्वः॑ सुप्र॒जाः प्र॒ | 1 | 10 | 6 | सं॒पृच॑ स्थ॒ सं मा॑ भ॒द्रेण॑ प | 1 | 10 | 21 | उ॒त स्मा॑स्य॒ द्रव॑तस्तुरणय॒तः |
| 1 | 9 | 23 | माहि॑र्भूर्मा पृदा॑कुः । उ॒रु | 1 | 9 | 38 | प॒र॒मे॒ष्ठ्य॒भिधी॑तः प्र॒जाप॑त | 1 | 10 | 7 | इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ऽसि वाज॒सास् | 1 | 10 | 22 | शं नो॑ भवन्तु वा॒जिनो॒ हवे॑षु |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 10 | 23 | ते नो॒ अर्व॑न्तो हवन॒श्रुतो॒ ह | 1 | 10 | 38 | अ॒र्य॒मण॒ं बृह॒स्पति॒मिन्द्र॒ं |
| 1 | 10 | 24 | वाजे॑वाजेऽवत वाजिनो नो॒ धने॑षु | 1 | 10 | 39 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे |
| 1 | 10 | 25 | आ मा॒ वाज॑स्य प्रस॒वो ज॑गम्या॒ | 1 | 10 | 40 | अ॒ग्निरेका॑क्षरेण प्रा॒णमुद॑जय |
| 1 | 10 | 26 | वाजि॑नो वाजजितो॒ वाज॑ꣳ ससृ॒वाꣳ | 1 | 10 | 41 | पू॒षा पञ्चा॑क्षरेण॒ पञ्च॑ ऋ॒तू |
| 1 | 10 | 27 | आ॒पये॒ स्वाहा॑ स्वा॒पये॒ स्वाह | 1 | 10 | 42 | मि॒त्रो नवा॑क्षरेण त्रि॒वृत॒ꣳ |
| 1 | 10 | 28 | आयु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो | 1 | 10 | 43 | वस॑व॒स्त्रयो॑दशाक्षरेण त्रयोद॒ |
| 1 | 10 | 29 | जाय॒ एहि॒ स्वो॒ रोहा॑व । प्र॒ज | | | | |
| 1 | 10 | 30 | अ॒स्मे वो॑ अस्त्विन्द्रि॒यम॒स् | | | | |
| 1 | 10 | 31 | नमो॑ मा॒त्रे पृ॑थि॒व्या इ॒यं त | | | | |
| 1 | 10 | 32 | वाज॑स्ये॒मं प्र॑स॒वः सु॑षु॒वेऽ | | | | |
| 1 | 10 | 33 | वाज॑स्ये॒दं प्र॑स॒व आब॑भूवे॒मा | | | | |
| 1 | 10 | 34 | वाज॑स्ये॒मां प्र॑स॒वः शि॑श्रिय | | | | |
| 1 | 10 | 35 | अग्ने॒ अच्छा॑वदे॒ह न॒ः प्रति॑ | | | | |
| 1 | 10 | 36 | सोम॒ꣳ राजा॑न॒मव॑से॒ऽग्निम॒न्वा | | | | |
| 1 | 10 | 37 | प्र नो॑ यच्छत्वर्य॒मा प्र पू॒ष | | | | |

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

# शुक्लयजुर्वेदः

## काण्वशाखा संहिता

## द्वितिय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 11 | 1 | ए॒ष ते॑ निर्ऋ॑ते भा॒गस्तं जु॑षस् |
| 2 | 11 | 2 | ये दे॒वा अ॒ग्निने॑त्राः पु॒रः॒स |
| 2 | 11 | 3 | अग्ने॒ सह॑स्व॒ पृत॑ना अ॒भिमा॑त |
| 2 | 11 | 4 | उ॒पा॒ꣳशोर्वी॒र्ये॑ण जुहोमि ह॒त |
| 2 | 11 | 5 | अ॒पो दे॒वा मधु॑मतीरगृभ्ण॒न्नूर |
| 2 | 11 | 6 | वृष्णं॑ ऊ॒र्मिर॑सि राष्ट्र॒दा र |
| 2 | 11 | 7 | अ॒र्थेत॑ स्थ राष्ट्र॒दा रा॒ष्ट |
| 2 | 11 | 8 | सं मधु॑मती॒र्मधु॑मतीभिः पृच्यं॑ |
| 2 | 11 | 9 | स॒वि॒ता त्वा॑ प्रस॒वाना॑ꣳ सुवत |
| 2 | 11 | 10 | इ॒मं दे॑वा असप॒त्नꣳ सु॑वध्वं म |
| 2 | 11 | 11 | ए॒ष वः॑ कुरवो॒ राजै॒ष वः॑ पञ्च |
| 2 | 11 | 12 | सोम॑स्य॒ त्विषि॑रस्य॒ग्नये॒ स् |
| 2 | 11 | 13 | इंद्रा॑य॒ स्वाहाꣳशा॑य॒ स्वाहा॒ |
| 2 | 11 | 14 | स॒ध॒मादो॑ द्यु॒म्निनी॒राप॑ ए॒त |
| 2 | 11 | 15 | क्ष॒त्रस्योल्व॑मसि क्ष॒त्रस्य॑ |
| 2 | 11 | 16 | रु॒जासि॑ द्रु॒वासि॑ क्षु॒पासि॑ |
| 2 | 11 | 17 | आ॒विर्मर्या॒ आवि॑त्तो अ॒ग्निर |
| 2 | 11 | 18 | अवे॑ष्टा दन्द॒शूका॒ः प्राची॒मा |
| 2 | 11 | 19 | दक्षि॑णा॒मारो॑ह त्रि॒ष्टुप् त् |
| 2 | 11 | 20 | प्र॒तीची॒मारो॑ह॒ जग॑ती त्वावतु |
| 2 | 11 | 21 | उदी॑ची॒मारो॑हानु॒ष्टुप् त्वा॑व |
| 2 | 11 | 22 | ऊ॒र्ध्वामारो॑ह प॒ङ्क्तिस्त्वा॑ |
| 2 | 11 | 23 | सोम॑स्य॒ त्विषि॑रसि॒ तवे॑व मे॒ |
| 2 | 11 | 24 | हिर॑ण्यरूपा उ॒षसो॑ विरो॒क उ॒भा |
| 2 | 11 | 25 | सोम॑स्य त्वा द्यु॒म्नेना॒भिषि॑ |
| 2 | 11 | 26 | इ॒मं दे॑वा असप॒त्नꣳ सु॑वध्वं म |
| 2 | 11 | 27 | ए॒ष वः॑ कुरवो॒ राजै॒ष वः॑ पञ्च |
| 2 | 11 | 28 | प्र पर्व॑तस्य वृष॒भस्य॑ पृ॒ष्ठ |
| 2 | 11 | 29 | प्रजा॑पते॒ न त्वदे॒तान्य॒न्यो |
| 2 | 11 | 30 | रु॒द्र यत्ते॒ क्रवि॒ परं॒ नाम॒ |
| 2 | 11 | 31 | इन्द्र॑स्य॒ वज्रो॑ऽसि मि॒त्राव |
| 2 | 11 | 32 | मा त॑ इंद्र ते व॒यं तु॑राषा॒ळय |
| 2 | 11 | 33 | अ॒ग्नये॑ गृ॒हप॑तये॒ स्वाहा॒ सो |
| 2 | 11 | 34 | ह॒ꣳसः शु॑चि॒षद्वसु॑रन्तरिक्ष॒स |
| 2 | 11 | 35 | इय॑द॒स्यायु॑र॒स्यायु॑र्मे देहि |
| 2 | 11 | 36 | स्यो॒नासि॑ सु॒षदा॑सि क्ष॒त्रस् |
| 2 | 11 | 37 | निष॑साद धृ॒तव्र॑तो॒ वरु॑णः प॒स |
| 2 | 11 | 38 | अ॒भि॒भू॒रस्यया॑ना॒मेतास्ते॒ पञ |
| 2 | 11 | 39 | स॒वि॒तासि॑ स॒त्यप्र॑सवो॒ वरु॑ण |
| 2 | 11 | 40 | प्रि॒यं॑कर॒ श्रेय॑स्कर॒ भूय॑स्क |
| 2 | 11 | 41 | अ॒ग्निः पृ॒थुर्धर्म॑ण॒स्पति॑र् |
| 2 | 11 | 42 | स॒वि॒त्राप्र॑सवि॒त्रा सर॑स्वत् |
| 2 | 11 | 43 | बृह॒स्पति॑ना॒ ब्रह्म॑णा॒ वरु॑ण |
| 2 | 11 | 44 | अ॒श्विभ्या॑ं पच्यस्व॒ सर॑स्वत् |
| 2 | 11 | 45 | कु॒वि॒दङ्ग यव॑मन्तो॒ यव॑ं चि॒द |
| 2 | 11 | 46 | यु॒वꣳ सु॒राम॑मश्विना॒ नमु॑चा आ |
| 2 | 11 | 47 | पु॒त्रमि॑व पि॒तरा॑ अ॒श्विनो॒भे |
| 2 | 12 | 1 | यु॒ञ्जा॒नः प्र॑थ॒मं मन॑स्त॒त्व |
| 2 | 12 | 2 | यु॒क्तेन॒ मन॑सा व॒यं दे॒वस्य॑ |
| 2 | 12 | 3 | यु॒क्त्वाय॑ सवि॒ता दे॒वान्त्स् |
| 2 | 12 | 4 | यु॒ञ्जते॒ मन॑ उ॒त यु॑ञ्जते॒ धि |
| 2 | 12 | 5 | यु॒जे वा॒ं ब्रह्म॑ पू॒र्व्यं न |
| 2 | 12 | 6 | यस्य॑ प्र॒याण॒मन्व॒न्य इद्य॒यु |
| 2 | 12 | 7 | देव॑ सवित॒ः प्रसु॑व य॒ज्ञं प्र |
| 2 | 12 | 8 | इ॒मं नो॑ देव सवितर्य॒ज्ञं प्रण |
| 2 | 12 | 9 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे |
| 2 | 12 | 10 | अभ्रि॑रसि॒ नार्य॑सि॒ त्वया॑ व॒ |
| 2 | 12 | 11 | हस्त॑ आ॒धाय॑ सवि॒ता बिभ्र॒दभ्र |
| 2 | 12 | 12 | प्रतू॑र्तं वाजि॒न्नाद्र॑व॒ वरि |
| 2 | 12 | 13 | यु॒ञ्जाथा॒ꣳ रास॑भं यु॒वम॒स्मिन |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 12 | 14 | योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे | 2 | 12 | 29 | अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः | 2 | 12 | 44 | स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भ | 2 | 12 | 59 | मखस्य शिरोऽसि वसवस्त्वा क |
| 2 | 12 | 15 | प्रतूर्वं नेह्यवक्रामन्नश | 2 | 12 | 30 | शर्म च स्थो वर्म च स्थोऽच् | 2 | 12 | 45 | शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ | 2 | 12 | 60 | कृत्वाय सा महीमुखां मृन्म |
| 2 | 12 | 16 | पृथिव्याः सधस्थादग्निं पु | 2 | 12 | 31 | संवसाथाꣳ स्वर्विदा समीची | 2 | 12 | 46 | प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानद | 2 | 12 | 61 | वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण |
| 2 | 12 | 17 | अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्व | 2 | 12 | 32 | त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्व | 2 | 12 | 47 | वृषाग्निं वृषणं भरन्नपां | 2 | 12 | 62 | अदितिष्ट्वा देवी विश्वदेव् |
| 2 | 12 | 18 | आगत्य वाज्यध्वानꣳ सर्वा | 2 | 12 | 33 | तमु त्वा दध्यङ् ऋषिः पुत्र | 2 | 12 | 48 | ओषधयः प्रतिमोदध्वमग्निमेत | 2 | 12 | 63 | देवानां त्वा पत्नीर्देवीर |
| 2 | 12 | 19 | आक्रम्य वाजिन्पृथिवीमग्निम | 2 | 12 | 34 | तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे | 2 | 12 | 49 | ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पव | 2 | 12 | 64 | मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो दे |
| 2 | 12 | 20 | द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी सध | 2 | 12 | 35 | सीद होतः स्व उ लोके चिकि | 2 | 12 | 50 | वि पाजसा पृथुना शोशुचानो | 2 | 12 | 65 | देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपा |
| 2 | 12 | 21 | उत्क्राम महते सौभगायास्माद | 2 | 12 | 36 | नि होता होतृषदने विदानस्त | 2 | 12 | 51 | आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न | 2 | 12 | 66 | उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ |
| 2 | 12 | 22 | उदक्रमीद् द्रविणोदा वाज्यर | 2 | 12 | 37 | सꣳ सीदस्व महाँ३ असि शोचस् | 2 | 12 | 52 | यो वः शिवतमो रसस्तस्य भा | 2 | 12 | 67 | आकूतिमग्निं प्रयुजꣳ स्वाहा |
| 2 | 12 | 23 | आ त्वा जिघर्मि मनसा घृतेन | 2 | 12 | 38 | अपो देवीरुपसृज मधुमतीरयक | 2 | 12 | 53 | तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्ष | 2 | 12 | 68 | विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो |
| 2 | 12 | 24 | आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघर् | 2 | 12 | 39 | सं ते वायुर्मातरिश्वा दधा | 2 | 12 | 54 | मित्रः सꣳसृज्य पृथिवीं भूम | 2 | 12 | 69 | मा सु भित्था मा सु रिषोऽम्ब |
| 2 | 12 | 25 | परि वाजपतिः कविरग्निर्हव् | 2 | 12 | 40 | सुजातो ज्योतिषा सह शर्म व | 2 | 12 | 55 | रुद्राः सꣳसृज्य पृथिवीं बृ | 2 | 12 | 70 | दृꣳहस्व देवि पृथिवि स्वस्तय |
| 2 | 12 | 26 | परि त्वाग्ने पुरं वयं विप् | 2 | 12 | 41 | उदु तिष्ठ स्वध्वरावा नो दे | 2 | 12 | 56 | सꣳसृष्टां वसुभी रुद्रैर्धी | 2 | 12 | 71 | द्वन्नः सर्पिरासुतिः प्र |
| 2 | 12 | 27 | त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशु | 2 | 12 | 42 | ऊर्ध्व ऊ षु णं ऊतये तिष्ठा | 2 | 12 | 57 | सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरी | 2 | 12 | 72 | परस्या अधि संवतोऽवराँ३ अ |
| 2 | 12 | 28 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे | 2 | 12 | 43 | स जातो गर्भो असि रोदस्योर | 2 | 12 | 58 | उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ | 2 | 12 | 73 | परमस्याः परावतो रोहिदश् |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता द्वितिय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 12 | 74 | यद॑ग्ने॒ कानि॒कानि॑ चि॒दा ते॒ |
| 2 | 12 | 75 | यदत्त्यु॑प॒जिह्वि॑का॒ यद्व॒म्र |
| 2 | 12 | 76 | अह॑रह॒रप्र॑याव॒ं भर॒न्तोऽश्वा॑ |
| 2 | 12 | 77 | नाभा॑ पृथि॒व्याः स॑मिधा॒ने अ॒ग |
| 2 | 12 | 78 | याः सेना॑ अ॒भीत्व॑रीराव्या॒धिन |
| 2 | 12 | 79 | दꣳष्ट्रा॑भ्यां म॒लिम्लू॒ञ्जम्भ |
| 2 | 12 | 80 | ये जने॑षु म॒लिम्लु॑व स्ते॒नास॒स |
| 2 | 12 | 81 | यो अ॒स्मभ्य॑मराती॒याद्यश्च॑ नो |
| 2 | 12 | 82 | सꣳशि॑तं मे॒ ब्रह्म॒ सꣳशि॑तं वी |
| 2 | 12 | 83 | उदे॑षां बा॒हू अ॑तिर॒मुद्वर्चो॒ |
| 2 | 12 | 84 | अन्न॑प॒तेऽन्न॑स्य नो देह्यनमी॒ |
| 2 | 12 | 85 | पुन॑स्त्वादि॒त्या रु॒द्रा वस॑व |
| 2 | 13 | 1 | दृ॒शा॒नो रु॒क्म उ॒र्व्या व्य॑द |
| 2 | 13 | 2 | नक्तो॒षासा॒ सम॑नसा॒ विरू॑पे धा |
| 2 | 13 | 3 | विश्वा॑ रू॒पाणि॒ प्रति॑मुञ्चते |
| 2 | 13 | 4 | सु॒प॒र्णो॑ऽसि ग॒रुत्मा॑ꣳ स्त्र |
| 2 | 13 | 5 | स्तोम॑ आ॒त्मा छन्दा॒ꣳस्यङ्गा॑न |
| 2 | 13 | 6 | सु॒प॒र्णो॑ऽसि ग॒रुत्मा॒न्दिव॑ं |
| 2 | 13 | 7 | अक्र॑न्दद॒ग्नि स्त॒नय॑न्निव॒ द |
| 2 | 13 | 8 | अग्ने॑ऽभ्यावर्तिन्न॒भि मा॒ निव |
| 2 | 13 | 9 | अग्ने॑ अङ्गिरः श॒तं ते॑ सन्त्व |
| 2 | 13 | 10 | पुन॑रू॒र्जा निव॑र्तस्व॒ पुन॑रग |
| 2 | 13 | 11 | स॒ह र॒य्या निव॑र्त॒स्वाग्ने॒ प |
| 2 | 13 | 12 | आ त्वा॑हार्षम॒न्तर॑भूर्ध्रु॒वस |
| 2 | 13 | 13 | उदु॑त्त॒मं व॑रुण॒ पाश॑म॒स्मदवा |
| 2 | 13 | 14 | अग्ने॑ बृ॒हन्नु॒षसा॑मू॒र्ध्वो |
| 2 | 13 | 15 | ह॒ꣳसः शु॑चि॒षद्वसु॑रन्तरिक्ष॒स |
| 2 | 13 | 16 | सीद॒ त्वं मा॒तुर॒स्या उ॒पस्थे॒ |
| 2 | 13 | 17 | अ॒न्तर॑ग्ने रु॒चा त्वमु॒खाया॒ः |
| 2 | 13 | 18 | शि॒वो भू॒त्वा मह्य॑मग्ने॒ अथो॑ |
| 2 | 13 | 19 | दि॒वस्परि॑ प्रथ॒मं ज॑ज्ञे अ॒ग् |
| 2 | 13 | 20 | वि॒द्मा ते॑ अग्ने त्रे॒धा त्र॒ |
| 2 | 13 | 21 | स॒मु॒द्रे त्वा॑ नृ॒मणा॑ अ॒प्स् |
| 2 | 13 | 22 | अक्र॑न्दद॒ग्नि स्त॒नय॑न्निव॒ द |
| 2 | 13 | 23 | श्री॒णामु॑दा॒रो ध॒रुणो॑ रयी॒णा |
| 2 | 13 | 24 | विश्व॑स्य के॒तुर्भुव॑नस्य॒ गर् |
| 2 | 13 | 25 | उ॒शिक्पा॑व॒को अ॑र॒तिः सु॑मे॒धा |
| 2 | 13 | 26 | दृ॒शा॒नो रु॒क्म उ॒र्व्या व्य॑द |
| 2 | 13 | 27 | यस्ते॑ अ॒द्य कृ॒णव॑द्भद्रशोचेऽ |
| 2 | 13 | 28 | आ तं भ॑ज सौश्रव॒सेष्व॑ग्न उ॒क् |
| 2 | 13 | 29 | त्वाम॑ग्ने॒ यज॑माना॒ अनु॒ द्यू |
| 2 | 13 | 30 | अस्ता॑व्य॒ग्निर्न॒राꣳ सु॒शेवो॑ |
| 2 | 13 | 31 | स॒मिधा॒ग्निं दु॑वस्यत घृ॒तैर्ब |
| 2 | 13 | 32 | उदु॑ त्वा॒ विश्वे॑ दे॒वा अग्ने |
| 2 | 13 | 33 | प्रेद॑ग्ने॒ ज्योति॑ष्मान् याहि |
| 2 | 13 | 34 | अक्र॑न्दद॒ग्निः स्त॒नय॑न्निव॒ |
| 2 | 13 | 35 | प्र प्रा॒यम॒ग्निर्भ॑र॒तस्य॑ शृ |
| 2 | 13 | 36 | आपो॑ देवी॒ः प्रति॑गृभ्णीत॒ भस् |
| 2 | 13 | 37 | अ॒प्स्व॑ग्ने॒ सधि॒ष्टव॒ सौष॑धी |
| 2 | 13 | 38 | गर्भो॑ अ॒स्योष॑धीना॒ं गर्भो॒ व |
| 2 | 13 | 39 | प्र॒सद्य॒ भस्म॑ना॒ योनि॑म॒पश्च |
| 2 | 13 | 40 | पुन॑रा॒सद्य॒ सद॑नम॒पश्च॑ पृथि॒ |
| 2 | 13 | 41 | पुन॑रू॒र्जा निव॑र्तस्व॒ पुन॑रग |
| 2 | 13 | 42 | स॒ह र॒य्या निव॑र्त॒स्वाग्ने॒ प |
| 2 | 13 | 43 | बोधा॑ मे अ॒स्य वच॑सो यविष्ठ॒ म |
| 2 | 13 | 44 | स बो॑धि सू॒रिर्म॒घवा॒ वसु॑पते॒ |
| 2 | 13 | 45 | पुन॑स्त्वादि॒त्या रु॒द्रा वस॑व |
| 2 | 13 | 46 | अपे॑त॒ वीत॒ वि च॑ सर्प॒ताता॒ |
| 2 | 13 | 47 | स॒ंज्ञान॑मसि काम॒धर॑णं मयि॑ ते |
| 2 | 13 | 48 | अ॒यꣳ सो अ॒ग्निर्यस्मि॒न्त्सोम॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 13 | 49 | अग्ने॒ यत्ते॑ दि॒वि वर्चः॑ पृथ | 2 | 13 | 64 | नम॒ः सु ते॑ निर्ऋते तिग्मतेजोऽय | 2 | 13 | 79 | ओष॑धी॒रिति॑ मातर॒स्तद्वो॑ देवी | 2 | 13 | 94 | या ओष॑धी॒ः सोम॑राज्ञी॒र्विष्ठि |
| 2 | 13 | 50 | अग्ने॑ दि॒वो अर्ण॒मच्छा॑ जिगा॒ | 2 | 13 | 65 | यस्या॑स्ते घोर आ॒सञ्जु॒होम्ये॒ | 2 | 13 | 80 | अ॒श्व॒त्थे वो॑ नि॒षद॑नं प॒र्णे | 2 | 13 | 95 | याश्चे॒दमु॑पशृ॒ण्वन्ति॒ याश्च॑ |
| 2 | 13 | 51 | पु॒री॒ष्या॑सो अ॒ग्नय॑ः प्राव॒ण | 2 | 13 | 66 | यं ते॑ दे॒वी निर्ऋ॑तिराब॒बन्ध॒ | 2 | 13 | 81 | यत्रौ॑षधीः स॒मग्म॑त॒ राजा॑न॒ः | 2 | 13 | 96 | ना॒श॒यि॒त्री ब॒लास॒स्यार्श॑स उ |
| 2 | 13 | 52 | इळा॑मग्ने पुरु॒दꣳस॑ꣳ स॒निं गोः | 2 | 13 | 67 | नि॒वेश॑नः सं॒गम॑नो॒ वसू॑नां॒ व | 2 | 13 | 82 | अ॒श्वा॒व॒तीꣳ सो॑माव॒तीमू॒र्जय॑ | 2 | 13 | 97 | मा वो॑ रिषत् खनि॒ता यस्मै॑ चा॒ |
| 2 | 13 | 53 | अ॒यं ते॒ योनि॑र्ऋ॒त्वियो॒ यतो॑ | 2 | 13 | 68 | सीरा॑ युञ्जन्ति क॒वयो॑ यु॒गा व | 2 | 13 | 83 | उच्छुष्मा॒ ओष॑धीनां॒ गावो॑ गो॒ | 2 | 13 | 98 | ओष॑धय॒ः संव॑दन्ते॒ सोमे॑न स॒ह |
| 2 | 13 | 54 | चिद॑सि॒ तया॑ दे॒वत॑याङ्गिर॒स्व | 2 | 13 | 69 | यु॒नक्त॒ सीरा॒ वि यु॒गा त॑नुध् | 2 | 13 | 84 | इष्कृ॑ति॒र्नाम॑ वो मा॒ताथो॑ यू | 2 | 13 | 99 | त्वां ग॑न्ध॒र्वा अ॑खन॒ꣳस्त्वाम |
| 2 | 13 | 55 | लो॒कं पृ॑ण छि॒द्रं पृ॒णाथो॑ सी | 2 | 13 | 70 | शु॒नꣳ सु फाला॒ विकृ॑षन्तु॒ भूम | 2 | 13 | 85 | अति॒ विश्वा॑ः परि॒ष्ठा स्ते॒न | 2 | 13 | 100 | त्वमु॑त्त॒मास्यो॑षधे॒ तव॑ वृक |
| 2 | 13 | 56 | ता अ॑स्य॒ सूद॑दोहस॒ः सोम॑ꣳ श्र | 2 | 13 | 71 | घृ॒तेन॒ सीता॒ मधु॑ना॒ सम॑ज्यता | 2 | 13 | 86 | यदि॒मा वा॒जय॑न्न॒हमोष॑धी॒र्हस् | 2 | 13 | 101 | मा मा॑ हिꣳसीज्जनि॒ता यः पृ॑थि॒ |
| 2 | 13 | 57 | इन्द्रं॒ विश्वा॑ अवीवृधन्त्समु | 2 | 13 | 72 | लाङ्ग॑लं॒ पवी॑रवत्सु॒शेव॑ꣳ सोम | 2 | 13 | 87 | यस्यौ॑षधीः प्र॒सर्प॒थाङ्ग॑ङ्ग् | 2 | 13 | 102 | अ॒भ्या व॑र्तस्व पृथिवि य॒ज्ञेन |
| 2 | 13 | 58 | समि॑त॒ꣳ संक॑ल्पेथा॒ꣳ सम्प्रि॑य | 2 | 13 | 73 | काम॑ कामदुघे धुक्ष्व मि॒त्राय | 2 | 13 | 88 | सा॒कं य॑क्ष्म॒ प्रप॑त॒ चाषे॑ण | 2 | 13 | 103 | अग्ने॒ यत्ते॑ शु॒क्रं यच्च॒न्द |
| 2 | 13 | 59 | सं वां॒ मना॑ꣳसि॒ सं व्र॒ता समु | 2 | 13 | 74 | विमु॑च्यध्वमघ्न्या देवयाना॒ अग | 2 | 13 | 89 | अ॒न्या वो॑ अ॒न्याम॑वत्व॒न्यान् | 2 | 13 | 104 | इष॒मूर्ज॑म॒हमि॒त आद॑मृ॒तस्य॒ य |
| 2 | 13 | 60 | अग्ने॒ त्वं पु॑री॒ष्यो॑ रयि॒मा | 2 | 13 | 75 | स॒जूरब्दो॒ अय॑वोभिः स॒जूरु॒षा | 2 | 13 | 90 | याः फ॒लिनी॒र्याअ॑फ॒ला अ॑पु॒ष्प | 2 | 13 | 105 | अग्ने॒ तव॒ श्रवो॒ वयो॒ महि॑ भ् |
| 2 | 13 | 61 | भव॑तं न॒ः सम॑नसौ॒ सचे॑तसा अरे॒ | 2 | 13 | 76 | या ओष॑धी॒ः पूर्वा॑ जा॒ता दे॒वे | 2 | 13 | 91 | मु॒ञ्चन्तु॑ मा शप॒थ्या॒दथो॑ वर | 2 | 13 | 106 | पा॒व॒कव॑र्चाः शु॒क्रव॑र्चा॒ अन |
| 2 | 13 | 62 | मा॒तेव॑ पु॒त्रं पृ॑थि॒वी पु॑री | 2 | 13 | 77 | श॒तं वो॑ अम्ब॒ धामा॑नि स॒हस्र॑ | 2 | 13 | 92 | अ॒व॒य॒तीः सम॑वदन्त दि॒व ओष॑धय॒ | 2 | 13 | 107 | ऊर्जो॑ नपाज्जातवेदः सुश॒स्तिभि |
| 2 | 13 | 63 | असु॑न्वन्त॒मय॑जमानमिच्छ स्ते॒न | 2 | 13 | 78 | ओष॑धी॒ः प्रति॑ गृभ्णीत॒ पुष्प॑ | 2 | 13 | 93 | या ओष॑धी॒ः सोम॑राज्ञीर्ब॒ह्वीः | 2 | 13 | 108 | इ॒र॒ज्यन्न॑ग्ने प्रथयस्व ज॒न्त |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता द्वितिय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 13 | 109 | इ॒ष्क॒र्तार॑मध्व॒रस्य॒ प्रचे॑त | 2 | 14 | 8 | ये वा॒मी रो॑च॒ने दि॒वो ये वा॒ | 2 | 14 | 23 | या वो॑ देवा॒ः सूर्ये॒ रुचो॒ गो | 2 | 14 | 38 | अग्ने॑ यु॒क्ष्वा हि ये तवाश्वा |
| 2 | 13 | 110 | ऋ॒तावा॑नं महि॒षं वि॒श्वद॑र्शतम | 2 | 14 | 9 | कृ॒णु॒ष्व पाज॒ः प्रसि॑ति॒ं न प | 2 | 14 | 24 | वि॒राड्ज्योति॑रधारयत्स्व॒राड्ज | 2 | 14 | 39 | यु॒क्ष्वा हि दे॑व॒हूत॑माँ॒३ अश |
| 2 | 13 | 111 | आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः | 2 | 14 | 10 | तव॑ भ्र॒मास॑ आशु॒या प॑त॒न्त्यन | 2 | 14 | 25 | विश्वं॑स्मै प्रा॒णाया॑पा॒नाय॑ व | 2 | 14 | 40 | स॒म्यक् स्र॑वन्ति स॒रितो॒ न धे |
| 2 | 13 | 112 | सं ते॒ पया॑ꣳसि॒ समु॑ यन्तु॒ वा | 2 | 14 | 11 | प्रति॒ स्पशो॒ विसृ॑ज॒ तूर्णि॑त | 2 | 14 | 26 | मधु॑श्च॒ माध॑वश्च॒ वास॑न्तिका | 2 | 14 | 41 | ऋ॒चे त्वा॑ रु॒चे त्वा॑ भा॒से त |
| 2 | 13 | 113 | आप्या॑यस्व मदिन्तम॒ सोम॒ विश्व | 2 | 14 | 12 | उद॑ग्ने तिष्ठ॒ प्रत्यात॑नुष्व॒ | 2 | 14 | 27 | अषा॑ळ्हासि॒ सह॑माना॒ सह॒स्वारा॑ | 2 | 14 | 42 | अ॒ग्निर्ज्योति॑षा॒ ज्योति॑ष्मा |
| 2 | 13 | 114 | आ ते॑ व॒त्सो मनो॑ यमत्पर॒माच्च | 2 | 14 | 13 | ऊ॒र्ध्वो भ॑व॒ प्रति॑ वि॒ध्याध् | 2 | 14 | 28 | सह॑स्वे॒मा अ॒भिमा॑ती॒ः सह॑स्व | 2 | 14 | 43 | आ॒दि॒त्यं गर्भं॒ पय॑सा॒ सम॑ङ्ग |
| 2 | 13 | 115 | तुभ्यं॒ ता अ॑ङ्गिरस्तम॒ विश्वा | 2 | 14 | 14 | अ॒ग्नेष्ट्वा॒ तेज॑सा सादयामि । | 2 | 14 | 29 | मधु॒ वाता॑ ऋ॒ताय॒ते मधु॑ क्षरन | 2 | 14 | 44 | वात॑स्य जू॒तिं वरु॑णस्य॒ नाभि॒ |
| 2 | 13 | 116 | अ॒ग्निः प्रि॒येषु॒ धाम॑सु॒ काम | 2 | 14 | 15 | भुवो॑ य॒ज्ञस्य॒ रज॑सश्च ने॒ता | 2 | 14 | 30 | मधु॒ नक्त॑मु॒तोषसो॒ मधु॑म॒त्पा | 2 | 14 | 45 | अज॑स्र॒मिन्दु॑मरु॒षं भु॑र॒ण्यु |
| 2 | 14 | 1 | मयि॑ गृह्णा॒म्यग्रे॑ अ॒ग्निꣳ र | 2 | 14 | 16 | ध्रु॒वासि॑ ध॒रुणास्तृ॑ता वि॒श् | 2 | 14 | 31 | मधु॑मान्नो॒ वन॒स्पति॒र्मधु॑माँ | 2 | 14 | 46 | वरू॑त्रीं॒ त्वष्टु॒र्वरु॑णस्य॒ |
| 2 | 14 | 2 | अ॒पां पृ॒ष्ठम॑सि॒ योनि॑र॒ग्नेः | 2 | 14 | 17 | प्र॒जाप॑तिष्ट्वा सादयत्व॒पां प | 2 | 14 | 32 | अ॒पां गर्भ॑न्त्सीद॒ मा त्वा॒ स | 2 | 14 | 47 | यो अ॒ग्निर॒ग्नेरध्यजा॑यत॒ शोका |
| 2 | 14 | 3 | ब्रह्म॑ जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒र | 2 | 14 | 18 | भूर॑सि॒ भूमि॑र॒स्यदि॑तिरसि वि॒ | 2 | 14 | 33 | त्रीन्त्स॑मु॒द्रान्त्सम॑सृपत् | 2 | 14 | 48 | चि॒त्रं दे॒वाना॒मुद॑गा॒दनी॑क॒ं |
| 2 | 14 | 4 | हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त॒ताग्रे | 2 | 14 | 19 | विश्वं॑स्मै प्रा॒णाया॑पा॒नाय॑ व | 2 | 14 | 34 | म॒ही द्यौः पृ॑थि॒वी च॑ न इ॒मं | 2 | 14 | 49 | इ॒मं मा हिꣳसीर्द्वि॒पाद॑ प॒श |
| 2 | 14 | 5 | द्र॒प्सश्च॑स्कन्द पृथि॒वीमनु॒ | 2 | 14 | 20 | काण्डा॑त्काण्डात्प्र॒रोह॑न्ती॒ | 2 | 14 | 35 | विष्णो॒ः कर्मा॑णि पश्यत॒ यतो॑ | 2 | 14 | 50 | इ॒मं मा हिꣳसी॒रेक॑शफं प॒शुं क |
| 2 | 14 | 6 | नमो॑ऽस्तु स॒र्पेभ्यो॒ ये के च॑ | 2 | 14 | 21 | या श॒तेन॑ प्रत॒नोषि॑ स॒हस्रे॑ण | 2 | 14 | 36 | ध्रु॒वासि॑ ध॒रुणे॒तो ज॑ज्ञे प् | 2 | 14 | 51 | इ॒मꣳ सा॑ह॒स्रꣳ श॒तधा॑र॒मुत्स॑ं |
| 2 | 14 | 7 | या इष॑वो यातु॒धाना॑नां॒ ये वा॒ | 2 | 14 | 22 | यास्ते॑ अग्ने॒ सूर्ये॒ रुचो॒ द | 2 | 14 | 37 | इ॒षे रा॒ये र॑मस्व॒ सह॑से द्यु॒ | 2 | 14 | 52 | इ॒ममू॑र्णा॒यु॑ं वरु॑णस्य॒ नाभि॑ं |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता द्वितिय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 14 | 53 | अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात् | 2 | 15 | 3 | स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीं |
| 2 | 14 | 54 | त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄꣳ पाह | 2 | 15 | 4 | पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो न |
| 2 | 14 | 55 | अपां त्वेमन्त्सादयाम्यपां त | 2 | 15 | 5 | अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम |
| 2 | 14 | 56 | अयं पुरो भुवसतस्य प्राणो भ | 2 | 15 | 6 | सजूरृतुभिः सजूर्विधाभिः |
| 2 | 14 | 57 | गायत्र्यै गायत्रं गायत्र | 2 | 15 | 7 | प्राणं मे पाह्यपानं मे पाह |
| 2 | 14 | 58 | अयं दक्षिणा विश्वकर्मा त | 2 | 15 | 8 | अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विप |
| 2 | 14 | 59 | त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वाराद | 2 | 15 | 9 | मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्द |
| 2 | 14 | 60 | अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस | 2 | 15 | 10 | बस्तो वयो विवलं छन्दो वृष् |
| 2 | 14 | 61 | जगत्या ऋक्सममृक्समाच्छुक | 2 | 15 | 11 | सिꣳहो वयश्छदिश्छन्दः पष्ठ |
| 2 | 14 | 62 | इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्र | 2 | 15 | 12 | अनड्वान्वयः पङ्क्तिश्छन्दो |
| 2 | 14 | 63 | अनुष्टुभं ऐळमैळान्मन्थी म | 2 | 15 | 13 | पश्चाविर्वयो गायत्री छन्द |
| 2 | 14 | 64 | इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मा | 2 | 15 | 14 | इन्द्राग्नी अव्यथमानामिष्ट |
| 2 | 14 | 65 | पङ्क्तौ निधनवन्निधनवत आ | 2 | 15 | 15 | विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तर |
| 2 | 15 | 1 | ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध् | 2 | 15 | 16 | राज्ञ्यसि प्राची दिग्विराळ |
| 2 | 15 | 2 | कुलायिनी घृतवती पुरन्धि | 2 | 15 | 17 | आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह् |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 15 | 18 | मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रति | 2 | 15 | 33 | नवभिरस्तुवत पितरोऽसृज्यन् |
| 2 | 15 | 19 | बृहती छन्दोऽनुष्टुप् छन्दो | 2 | 15 | 34 | सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः |
| 2 | 15 | 20 | पृथिवी छन्दोऽन्तरिक्षं छन | 2 | 15 | 35 | पञ्चविꣳशत्यास्तुवतारण्याः प |
| 2 | 15 | 21 | मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिर | 2 | 16 | 1 | अग्ने जातान्प्रणुदा नः सपत |
| 2 | 15 | 22 | अग्निर्देवता वातो देवता | 2 | 16 | 2 | सहसा जातान्प्रणुदा नः सपत् |
| 2 | 15 | 23 | मूर्धासि राड् ध्रुवासि धर | 2 | 16 | 3 | अग्नेः पुरीषमस्यप्सो नाम |
| 2 | 15 | 24 | यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यम | 2 | 16 | 4 | एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः शम |
| 2 | 15 | 25 | आशुस्त्रिवृद्भ्रान्तः पञ्चद | 2 | 16 | 5 | सिन्धुश्छन्दः समुद्रश्छन्दः |
| 2 | 15 | 26 | गर्भाः पञ्चविꣳशः ओजस्त्रिण | 2 | 16 | 6 | अक्षरपङ्क्तिश्छन्दः पदपङ |
| 2 | 15 | 27 | अग्नेर्भागोऽसि दीक्षाया आ | 2 | 16 | 7 | बृहच्छन्दो रथन्तरं छन्दो न |
| 2 | 15 | 28 | नृचक्षसां भागोऽसि धातुराध | 2 | 16 | 8 | एवश्छन्दो वरिवश्छन्दो वय |
| 2 | 15 | 29 | वसूनां भागोऽसि रुद्राणामा | 2 | 16 | 9 | रश्मिना सत्याय सत्यं जिन |
| 2 | 15 | 30 | अदितेर्भागोऽसि पूष्ण आधिप | 2 | 16 | 10 | प्रतिधिना पृथिव्या पृथिव |
| 2 | 15 | 31 | यवानां भागोऽस्ययवानामाधि | 2 | 16 | 11 | उशिजा वसुभ्यो वसूञ्जिन्व |
| 2 | 15 | 32 | एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त प् | 2 | 16 | 12 | ऐळेनौषधीभिरोषधीर्जिन्वोत्त |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता द्वितिय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 16 | 13 | प्र॒ति॒पद॑सि प्रति॒पदे॑ त्वानु |
| 2 | 16 | 14 | त्रि॒वृद॑सि त्रि॒वृते॑ त्वा प् |
| 2 | 16 | 15 | आ॒क्र॒मो॑ऽस्याक्र॒माय॑ त्वा सङ |
| 2 | 16 | 16 | रा॒ज्ञ्य॑सि॒ प्राची॒ दिग्वस॑वस् |
| 2 | 16 | 17 | त्रि॒वृत् त्वा॒ स्तोम॑ः पृथि॒व |
| 2 | 16 | 18 | ऋष॑यस्त्वा प्रथम॒जा दे॒वेषु॑ द |
| 2 | 16 | 19 | वि॒राळ॑सि॒ दक्षि॑णा॒ दिग्रु॒द् |
| 2 | 16 | 20 | प॒ञ्च॒द॒शस्त्वा॒ स्तोम॑ः पृथि॒ |
| 2 | 16 | 21 | ऋष॑यस्त्वा प्रथम॒जा दे॒वेषु॑ द |
| 2 | 16 | 22 | स॒म्राळ॑सि प्र॒तीची॒ दिगा॑दि॒त |
| 2 | 16 | 23 | स॒प्त॒द॒शस्त्वा॒ स्तोम॑ः पृथि॒व |
| 2 | 16 | 24 | ऋष॑यस्त्वा प्रथम॒जा दे॒वेषु॑ द |
| 2 | 16 | 25 | स्व॒रा॒ळ॒स्युदी॑ची॒ दिङ् म॒रुत॑ |
| 2 | 16 | 26 | ए॒क॒वि॒ꣳशस्त्वा॒ स्तोम॑ः पृथि॒ |
| 2 | 16 | 27 | ऋष॑यस्त्वा प्रथम॒जा दे॒वेषु॑ द |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 16 | 28 | अधि॑पत्न्यसि बृह॒ती दिग्विश्वे |
| 2 | 16 | 29 | त्रि॒ण॒व॒त्र॒य॒स्त्रि॒ꣳशौ त्वा |
| 2 | 16 | 30 | ऋष॑यस्त्वा प्रथम॒जा दे॒वेषु॑ द |
| 2 | 16 | 31 | अ॒यं पु॒रो हरि॑केश॒ः सूर्य॑रश् |
| 2 | 16 | 32 | तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु॒ ते नो॑ मृळ |
| 2 | 16 | 33 | अ॒यं द॑क्षि॒णा वि॒श्वक॑र्मा॒ त |
| 2 | 16 | 34 | तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु॒ ते नो॑ मृळ |
| 2 | 16 | 35 | अ॒यं प॒श्चाद्वि॒श्वव्य॑चा॒स्तस |
| 2 | 16 | 36 | तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु॒ ते नो॑ मृळ |
| 2 | 16 | 37 | अ॒यमु॑त्त॒रात्स॒ंयद्व॑सु॒स्तस् |
| 2 | 16 | 38 | तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु॒ ते नो॑ मृळ |
| 2 | 16 | 39 | अ॒यमु॒पर्य॒र्वाग्व॑सु॒स्तस्य॑ |
| 2 | 16 | 40 | तेभ्यो॒ नमो॑ अस्तु॒ ते नो॑ मृळ |
| 2 | 16 | 41 | अ॒ग्निर्मू॒र्धा दि॒वः क॒कुत्पत |
| 2 | 16 | 42 | अ॒यम॒ग्निः स॑ह॒स्रिणो॒ वाज॑स्य |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 16 | 43 | त्वाम॑ग्ने॒ पुष्क॑रा॒दध्यथ॑र्व |
| 2 | 16 | 44 | भुवो॑ य॒ज्ञस्य॒ रज॑सश्च ने॒ता |
| 2 | 16 | 45 | अबो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒ |
| 2 | 16 | 46 | अवो॑चाम क॒वये॒ मेध्या॑य॒ वचो॑ |
| 2 | 16 | 47 | अ॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि |
| 2 | 16 | 48 | जन॑स्य गो॒पा अ॑जनिष्ट॒ जागृ॑वि |
| 2 | 16 | 49 | त्वाम॑ग्ने॒ अङ्गि॑रसो॒ गुहा॑ ह |
| 2 | 16 | 50 | सखा॑य॒ः सं व॑ः स॒म्यञ्च॒मिष॒ꣳ |
| 2 | 16 | 51 | सꣳस॒मिद्यु॑वसे वृष॒न्नग्ने॒ वि |
| 2 | 16 | 52 | त्वाम॑ग्ने ह॒विष्म॑न्तो दे॒वं |
| 2 | 16 | 53 | त्वां चि॑त्रश्रवस्तम॒ हव॑न्ते |
| 2 | 16 | 54 | ए॒ना वो॑ अ॒ग्निं नम॑सो॒र्जो नप |
| 2 | 16 | 55 | विश्व॑स्य दू॒तम॒मृत॒ं विश्व॑स् |
| 2 | 16 | 56 | स दु॑द्रव॒त् स्वा॑हुत॒ः स दु॑द |
| 2 | 16 | 57 | अग्ने॒ वाज॑स्य॒ गोम॑त॒ ईशा॑नः |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 16 | 58 | स इ॑धा॒नो वसु॑ष्क॒वि॒र॒ग्निरी॒ड |
| 2 | 16 | 59 | क्ष॒पो रा॑जन्नु॒त त्मनाग्ने॒ व |
| 2 | 16 | 60 | भ॒द्रो नो॑ अ॒ग्निराहु॑तो भ॒द्र |
| 2 | 16 | 61 | भ॒द्रा उ॒त प्रश॑स्तयो भ॒द्रं म |
| 2 | 16 | 62 | येना॑ स॒मत्सु॑ सा॒सहो॑ऽवं स्थि॒ |
| 2 | 16 | 63 | अ॒ग्निं तं म॑न्ये॒ यो वसु॒रस्त |
| 2 | 16 | 64 | सो अ॒ग्निर्यो वसु॑र्गृ॒णे सं य |
| 2 | 16 | 65 | उ॒भे सु॑श्चन्द्र स॒र्पिषो॒ दर् |
| 2 | 16 | 66 | अग्ने॒ तम॒द्याश्वं॒ न स्तोमै॒ः |
| 2 | 16 | 67 | अधा॒ ह्य॑ग्ने॒ क्रतो॑र्भ॒द्रस् |
| 2 | 16 | 68 | ए॒भिर्नो॑ अ॒र्कैर्भवा॑ नो अ॒र् |
| 2 | 16 | 69 | अ॒ग्निꣳ होता॑रं मन्ये॒ दास्व॑न |
| 2 | 16 | 70 | अग्ने॒ त्वं नो॒ अन्त॑म उ॒त त्र |
| 2 | 16 | 71 | येन॒ ऋष॑य॒स्तप॑सा स॒त्रमाय॒न्न |
| 2 | 16 | 72 | तं पत्नी॑भि॒रनु॑ गच्छेम देवाः |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 16 | 73 | आ वा॒चो मध्य॑मरुहद्भु॒रण्यु॒रय |
| 2 | 16 | 74 | अ॒यम॒ग्निर्वी॒रत॑मो वयो॒धाः स॑ |
| 2 | 16 | 75 | सं॒प्रच्य॑वध्व॒मुप॑ सं॒प्रया॒त |
| 2 | 16 | 76 | उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒ प्रति॑जागृह |
| 2 | 16 | 77 | येन॒ वह॑सि स॒हस्र॒ं येना॑ग्ने |
| 2 | 16 | 78 | अ॒यं ते॒ योनि॑र्ऋ॒त्वियो॒ यतो॑ |
| 2 | 16 | 79 | तप॑श्च तप॒स्य॑श्च शैशि॒रा ऋ॒तू |
| 2 | 16 | 80 | लो॒कं पृ॑ण छि॒द्रं पृ॒णाथो॑ सी |
| 2 | 16 | 81 | ता अ॑स्य॒ सूद॑दोहस॒ः सोम॑ꣳ श्र |
| 2 | 16 | 82 | इन्द्र॒ं विश्वा॑ अवीवृधन्त्समु |
| 2 | 16 | 83 | प्रोथ॒दश्वो॒ न यव॑सेऽवि॒ष्यन्य |
| 2 | 16 | 84 | आ॒योष्ट्वा॒ सद॑ने सादया॒म्यव॑त |
| 2 | 16 | 85 | स॒हस्र॑स्य प्र॒मासि॑ स॒हस्र॑स् |
| 2 | 17 | 1 | नम॑स्ते रुद्र म॒न्यव॑ उ॒तो त॒ |
| 2 | 17 | 2 | या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूरघो॒राप |
| 2 | 17 | 3 | यामिषु॑ं गिरिशन्त॒ हस्ते॑ बि॒भ |
| 2 | 17 | 4 | शि॒वेन॒ वच॑सा त्वा॒ गिरि॒शाच्छ |
| 2 | 17 | 5 | अध्य॑वोचदधिव॒क्ता प्र॑थ॒मो दै॑ |
| 2 | 17 | 6 | असौ॒ यस्ता॒म्रो अ॑रु॒ण उ॒त ब॒भ |
| 2 | 17 | 7 | असौ॒ यो॑ऽव॒सर्प॑ति॒ नील॑ग्रीवो |
| 2 | 17 | 8 | नमो॑ऽस्तु॒ नील॑ग्रीवाय सहस्रा॒ |
| 2 | 17 | 9 | प्रमु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्वमु॒भयो॒ |
| 2 | 17 | 10 | विज्य॒ं धनु॑ः कप॒र्दिनो॒ विश॑ल |
| 2 | 17 | 11 | परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॒स्मान् |
| 2 | 17 | 12 | या ते॑ हे॒तिर्मी॑ळहुष्टम॒ हस्त |
| 2 | 17 | 13 | अ॒व॒तत्य॒ धनु॒ष्ट्वꣳ सह॑स्राक् |
| 2 | 17 | 14 | नम॑स्त॒ आयु॑धा॒याना॑तताय धृ॒ष् |
| 2 | 17 | 15 | मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अर् |
| 2 | 17 | 16 | मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ आयु॑ |
| 2 | 17 | 17 | नमो॒ हिर॑ण्यबाहवे सेना॒न्ये॑ द |
| 2 | 17 | 18 | नमो॑ बभ्लु॒शाया॑व्या॒धिनेऽन्ना |
| 2 | 17 | 19 | नमो॒ रोहि॑ताय स्थ॒पत॑ये वृ॒क्ष |
| 2 | 17 | 20 | नम॑ः कृत्स्नाय॒तया॒ धाव॑ते॒ सत |
| 2 | 17 | 21 | नमो॒ वञ्च॑ते परि॒वञ्च॑ते स्ताय |
| 2 | 17 | 22 | नम॑ उष्णी॒षिणे॑ गिरिच॒राय॑ कुल |
| 2 | 17 | 23 | नमो॑ विसृ॒जद्भ्यो॒ विध्य॑द्भ्य |
| 2 | 17 | 24 | नम॑ः स॒भाभ्य॑ः स॒भाप॑तिभ्यश्च |
| 2 | 17 | 25 | नमो॑ ग॒णेभ्यो॑ ग॒णप॑तिभ्यश्च व |
| 2 | 17 | 26 | नम॒ः सेना॑भ्यः सेना॒निभ्य॑श्च |
| 2 | 17 | 27 | नम॒स्तक्ष॑भ्यो रथका॒रेभ्य॑श्च |
| 2 | 17 | 28 | नम॒ः श्वभ्य॒ः श्वप॑तिभ्यश्च वो |
| 2 | 17 | 29 | नम॑ः कप॒र्दिने॑ च॒ व्यु॑प्तकेश |
| 2 | 17 | 30 | नमो॑ ह्र॒स्वाय॑ च वाम॒नाय॑ च॒ |
| 2 | 17 | 31 | नम॑ आ॒शवे॑ चाजि॒राय॑ च॒ नम॒ः श |
| 2 | 17 | 32 | नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च कनि॒ष्ठाय॑ |
| 2 | 17 | 33 | नम॒ः सोभ्या॑य च प्रतिस॒र्या॑य |
| 2 | 17 | 34 | नमो॒ वन्या॑य च॒ कक्ष्या॑य च॒ न |
| 2 | 17 | 35 | नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ |
| 2 | 17 | 36 | नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ च प्रमृ॒शाय॑ च॒ |
| 2 | 17 | 37 | नम॒ः स्रु॒त्या॑य च॒ पथ्या॑य च॒ |
| 2 | 17 | 38 | नम॒ः कूप्या॑य चाव॒ट्या॑य च॒ नम |
| 2 | 17 | 39 | नमो॒ वात्या॑य च॒ रेष्म्या॑य च॒ |
| 2 | 17 | 40 | नम॑ः श॒ङ्गवे॑ च पशु॒पत॑ये च॒ न |
| 2 | 17 | 41 | नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो |
| 2 | 17 | 42 | नम॒ः पार्या॑य चावा॒र्या॑य च॒ न |
| 2 | 17 | 43 | नम॑ः सिक॒त्या॑य च प्रवा॒ह्या॑य |
| 2 | 17 | 44 | नमो॒ व्रज्या॑य च॒ गोष्ठ्या॑य च |
| 2 | 17 | 45 | नम॒ः शुष्क्या॑य च हरि॒त्या॑य च |
| 2 | 17 | 46 | नम॑ः प॒र्णाय॑ च पर्णश॒दाय॑ च॒ |
| 2 | 17 | 47 | द्रापे॒ अन्ध॑सस्पते॒ दरि॑द्र॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 17 | 48 | इ॒मा रु॒द्राय॑ त॒वसे॑ क॒प॒र्दि | 2 | 17 | 63 | य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ꣳसश्च॒ दि | 2 | 18 | 14 | ये दे॒वा दे॒वेष्वधि॑ देव॒त्वमा | 2 | 18 | 29 | प॒रो दि॒वा प॒र ए॒ना पृ॑थि॒व्या |
| 2 | 17 | 49 | या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूः शि॒वा | 2 | 17 | 64 | नमो॑ऽस्तु रु॒द्रेभ्यो॒ ये दि॒व | 2 | 18 | 15 | प्रा॒ण॒दा अ॑पान॒दा व्या॑न॒दा व | 2 | 18 | 30 | तमिद्गर्भं॑ प्रथ॒मं द॑ध्र॒ आपो |
| 2 | 17 | 50 | परि॑ णो हे॒ती रु॒द्रस्य॑ वृज्य | 2 | 18 | 1 | अश्म॒न्नूर्जं॒ पर्व॑ते शिश्रिय | 2 | 18 | 16 | अ॒ग्निस्ति॒ग्मेन॑ शो॒चिषा॒ यास | 2 | 18 | 31 | न तं वि॑दाथ॒ य इ॒मा ज॒जाना॒न्य |
| 2 | 17 | 51 | मीळ्हु॑ष्टम॒ शिव॑तम शि॒वो नः॑ स | 2 | 18 | 2 | इ॒मा मे॑ अग्न॒ इष्ट॑का धे॒नवः॑ | 2 | 18 | 17 | य इ॒मा विश्वा॒ भुव॑नानि॒ जुह्व | 2 | 18 | 32 | वि॒श्वक॑र्मा॒ ह्यज॑निष्ट दे॒व |
| 2 | 17 | 52 | विकि॑रिद्र॒ विलो॑हित॒ नम॑स्ते | 2 | 18 | 3 | अर्बु॑दं च॒ न्य॑र्बुदं समु॒द्र | 2 | 18 | 18 | किꣳस्वि॑दासीदधि॒ष्ठान॑मा॒रम्भं॑ | 2 | 18 | 33 | आ॒शुः शिशा॑नो वृष॒भो न भी॒मो घ |
| 2 | 17 | 53 | स॒हस्रा॑णि सहस्र॒शो बा॒ह्वोस्त | 2 | 18 | 4 | ऋ॒तव॑ स्थ ऋता॒वृध॑ ऋतु॒ष्ठा स् | 2 | 18 | 19 | वि॒श्वत॑श्चक्षुरु॒त वि॒श्वतो॑म | 2 | 18 | 34 | सं॒क्रन्द॑नेनानिमि॒षेण॑ जि॒ष्ण |
| 2 | 17 | 54 | असं॑ख्याता स॒हस्रा॑णि॒ ये रु॒द | 2 | 18 | 5 | स॒मु॒द्रस्य॒ त्वाव॑क॒याग्ने॒ प | 2 | 18 | 20 | किꣳ स्वि॒द्वनं॒ क उ॒ स वृ॒क्ष | 2 | 18 | 35 | स इषु॑हस्तैः॒ स नि॑ष॒ङ्गिभि॑र् |
| 2 | 17 | 55 | अ॒स्मिन् म॑ह॒त्य॑र्ण॒वे॒ऽन्तरि | 2 | 18 | 6 | हि॒मस्य॑ त्वा ज॒रायु॒णाग्ने॒ प | 2 | 18 | 21 | या ते॒ धामा॑नि पर॒माणि॒ याव॒मा | 2 | 18 | 36 | बृह॑स्पते॒ परि॑दीया॒ रथे॑न रक् |
| 2 | 17 | 56 | नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठा॒ दिव॑ꣳ | 2 | 18 | 7 | उप॒ ज्मन्नुप॑ वेत॒सेऽव॑तर न॒दी | 2 | 18 | 22 | वा॒चस्पतिं॑ वि॒श्वक॑र्माणमू॒तय | 2 | 18 | 37 | ब॒ल॒वि॒ज्ञा॒य स्थवि॑रः॒ प्रवी॑ |
| 2 | 17 | 57 | नील॑ग्रीवाः शिति॒कण्ठाः॑ श॒र्व | 2 | 18 | 8 | अ॒पामि॒दं न्यय॑नꣳ समु॒द्रस्य॑ | 2 | 18 | 23 | विश्व॑कर्मन् ह॒विषा॑ वावृधा॒नः | 2 | 18 | 38 | गो॒त्र॒भिदं॑ गो॒विदं॒ वज्र॑बाह |
| 2 | 17 | 58 | ये वृ॒क्षेषु॑ श॒ष्पिञ्ज॑रा॒ नी | 2 | 18 | 9 | अग्ने॑ पावक रो॒चिषा॑ म॒न्द्रया | 2 | 18 | 24 | विश्व॑कर्मन् ह॒विषा॒ वर्ध॑नेन | 2 | 18 | 39 | अ॒भि गो॒त्राणि॒ सह॑सा॒ गाह॑मान |
| 2 | 17 | 59 | ये भू॒ताना॒मधि॑पतयो विशि॒खासः॑ | 2 | 18 | 10 | स नः॑ पावक दीदि॒वोऽग्ने॑ दे॒वा | 2 | 18 | 25 | चक्षु॑षः पि॒ता मन॑सा॒ हि धीरो॑ | 2 | 18 | 40 | इन्द्र॑ आसां ने॒ता बृह॒स्पति॒र |
| 2 | 17 | 60 | ये प॒थां प॑थिर॒क्षिण॑ ऐलबृ॒दा | 2 | 18 | 11 | पा॒व॒कया॒ यश्चि॒तय॑न्त्या कृ॒प | 2 | 18 | 26 | वि॒श्वक॑र्मा॒ विम॑ना॒ आद्विहा॑ | 2 | 18 | 41 | इन्द्र॑स्य॒ वृष्णो॒ वरु॑णस्य॒ |
| 2 | 17 | 61 | ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति सृ॒क | 2 | 18 | 12 | नम॑स्ते॒ हर॑से शो॒चिषे॒ नम॑स्त | 2 | 18 | 27 | यो नः॑ पि॒ता ज॑नि॒ता यो वि॑धा॒ | 2 | 18 | 42 | उद्ध॑र्षय मघव॒न्नायु॑धा॒न्युत् |
| 2 | 17 | 62 | ये॒ऽन्नेषु॑ वि॒विध्य॑न्ति॒ पात् | 2 | 18 | 13 | ये दे॒वा दे॒वानां॑ य॒ज्ञिया॑ य | 2 | 18 | 28 | त आय॑जन्त॒ द्रवि॑ण॒ꣳ सम॑स्मा॒ | 2 | 18 | 43 | अ॒स्माक॒मिन्द्रः॒ समृ॑तेषु ध्व |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 18 | 44 | अ॒मीषां॑ चि॒त्तं प्र॑तिलो॒भय॑न | 2 | 18 | 59 | वि॒मान॑ ए॒ष दि॒वो मध्य॑ आस्त आ | 2 | 18 | 74 | ताꣳ स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यस्य चि॒त्र | 2 | 19 | 3 | स॒मु॒द्राद॒र्मिर्मधु॑माँ॒३ उद |
| 2 | 18 | 45 | अव॑सृष्टा॒ परा॑ पत॒ शर॑व्ये॒ ब | 2 | 18 | 60 | उ॒क्षा स॑मु॒द्रो अ॑रु॒णः सु॑प॒ | 2 | 18 | 75 | वि॒धेम॑ ते पर॒मे जन्म॑न्नग्ने | 2 | 19 | 4 | व॒यं नाम॒ प्रब्र॑वामा घृ॒तस्या |
| 2 | 18 | 46 | प्रेता॒ जय॑ता नर॒ इन्द्रो॑ व॒ः | 2 | 18 | 61 | इन्द्रं॒ विश्वा॑ अवीवृधन्त्समु | 2 | 18 | 76 | प्रेद्धो॑ अग्ने दीदिहि पु॒रो न | 2 | 19 | 5 | च॒त्वारि॒ शृङ्गा॒ त्रयो॑ अस्य॒ |
| 2 | 18 | 47 | असौ॒ या सेना॑ मरुत॒ः परे॑षामभ् | 2 | 18 | 62 | दे॒व॒हूर्य॒ज्ञ आ च॑ वक्षत्सुम् | 2 | 18 | 77 | अग्ने॒ तम॒द्याश्वं॒ न स्तोमै॒ः | 2 | 19 | 6 | त्रिधा॑ हि॒तं प॒णिभि॑र्गु॒ह्यम |
| 2 | 18 | 48 | यत्र॑ बा॒णाः स॒म्पत॑न्ति कुमा॒ | 2 | 18 | 63 | वज॑स्य मा प्रस॒व उ॑द्ग्रा॒भेणो | 2 | 18 | 78 | चित्तिं॑ जुहोमि॒ मन॑सा घृतेन॒ | 2 | 19 | 7 | ए॒ता अ॑र्षन्ति॒ हृद्या॑त्समु॒द |
| 2 | 18 | 49 | मर्मा॑णि ते॒ वर्म॑णा छादयामि॒ | 2 | 18 | 64 | उ॒द्ग्रा॒भं च॑ निग्रा॒भं च॒ ब् | 2 | 18 | 79 | स॒प्त ते॑ अग्ने स॒मिधः॑ स॒प्त | 2 | 19 | 8 | सिन्धो॑रिव प्राध्व॒ने शू॑घ॒नास |
| 2 | 18 | 50 | उदे॑नमुत्त॒रां न॒याग्ने॑ घृतेन | 2 | 18 | 65 | क्रम॑ध्वम॒ग्निना॒ नाक॒मुख्य॒ꣳ | 2 | 18 | 80 | शु॒क्रज्यो॑तिश्च चि॒त्रज्यो॑ति | 2 | 19 | 9 | अ॒भिप्र॑वन्त॒ सम॑नेव॒ योषाः॑ क |
| 2 | 18 | 51 | इन्द्रे॒मं प्र॑त॒रां न॑य सजा॒त | 2 | 18 | 66 | प्राची॒मनु॑ प्र॒दिशं॒ प्रेहि॑ | 2 | 18 | 81 | ई॒दृङ् चा॑न्य॒दृङ् च॑ स॒दृङ् च | 2 | 19 | 10 | क॒न्या॑ इव वह॒तुमेत॒वा उ॑ अ॒ञ् |
| 2 | 18 | 52 | यस्य॑ कु॒र्मो गृ॒हे ह॒विस्तम॑ग | 2 | 18 | 67 | पृ॒थि॒व्या अ॒हमु॒दन्तरि॑क्ष॒मा | 2 | 18 | 82 | ऋ॒त॒जिच्च॑ सत्य॒जिच्च॑ सेन॒जिच | 2 | 19 | 11 | अ॒भ्य॑र्षत सुष्टु॒तिं गव्य॑मा॒ |
| 2 | 18 | 53 | उदु॑ त्वा॒ विश्वे॑ दे॒वा अग्ने | 2 | 18 | 68 | स्व॒र्यन्तो॒ नापे॑क्षन्त॒ आ द् | 2 | 18 | 83 | ऋ॒तश्च॑ स॒त्यश्च॑ ध्रु॒वश्च॑ ध | 2 | 19 | 12 | धाम॑ ते॒ विश्वं॒ भुव॑न॒मधि॑ श |
| 2 | 18 | 54 | पञ्च॒ दिशो॒ दैवी॑र्य॒ज्ञम॑वन्त | 2 | 18 | 69 | अग्ने॒ प्रेहि॑ प्रथ॒मो दे॑वय॒त | 2 | 18 | 84 | ई॒दृक्षा॑स एता॒दृक्षा॑स ऊ॒ षु | 2 | 19 | 13 | वाज॑श्च मे प्रस॒वश्च॑ मे॒ प्रय |
| 2 | 18 | 55 | समि॑द्धे अ॒ग्ना अधि॑ मामहा॒न उ | 2 | 18 | 70 | नक्तो॒षासा॒ सम॑नसा॒ विरू॑पे धा | 2 | 18 | 85 | स्वत॑वाꣳश्च प्रघा॒सी च॑ सान्तप | 2 | 19 | 14 | प्रा॒णश्च॑ मेऽपा॒नश्च॑ मे व्या |
| 2 | 18 | 56 | दैव्या॑य ध॒र्त्रे जोष्ट्रे॑ दे | 2 | 18 | 71 | अग्ने॑ सहस्राक्ष शतमूर्धञ्छ॒तं | 2 | 18 | 86 | इन्द्रं॑ दैवी॒र्विशो॑ म॒रुतोऽनु | 2 | 19 | 15 | ओज॑श्च मे॒ सह॑श्च म आ॒त्मा च॑ |
| 2 | 18 | 57 | वी॒तꣳ ह॒विः श॑मि॒तꣳ श॑मि॒ता य॒ | 2 | 18 | 72 | सु॒प॒र्णो॑ऽसि ग॒रुत्मा॑न् पृ॒ष | 2 | 19 | 1 | इ॒मꣳ स्तन॒मूर्ज॑स्वन्तं धया॒पा | 2 | 19 | 16 | ज्यैष्ठ्यं॑ च म॒ आधि॑पत्यं च म |
| 2 | 18 | 58 | सूर्य॑रश्मि॒र्हरि॑केशः पु॒रस्त | 2 | 18 | 73 | आ॒जु॒ह्वा॑नः सु॒प्रती॑कः पु॒रस् | 2 | 19 | 2 | घृतं॑ मि॑मिक्षे घृ॒तम॑स्य॒ योन | 2 | 19 | 17 | स॒त्यं च॑ मे श्र॒द्धा च॑ मे॒ ज |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता द्वितिय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | 19 | 18 | वि॒त्तं च॑ मे॒ वेद्यं᳚ च मे भू | 2 | 19 | 33 | स्रुच॑श्च मे चम॒साश्च॑ मे वाय॒ | 2 | 20 | 5 | वजः॑ पु॒रस्ता॑दु॒त म॑ध्य॒तो नो | 2 | 20 | 20 | स्व॒र्ण घ॒र्मः स्वाहा॒ स्व॒र्ण |
| 2 | 19 | 19 | य॒न्ता च॑ मे ध॒र्ता च॑ मे॒ क्ष | 2 | 19 | 34 | अ॒ग्निश्च॑ मे घ॒र्मश्च॑ मे॒ऽर् | 2 | 20 | 6 | सं मा॑ सृजामि॒ पय॑सा पृथि॒व्या | 2 | 20 | 21 | अ॒ग्निं यु॑नज्मि॒ शव॑सा घृ॒तेन |
| 2 | 19 | 20 | शं च॑ मे॒ मय॑श्च मे प्रि॒यं च॑ | 2 | 19 | 35 | व्र॒तं च॑ म ऋ॒तव॑श्च मे संवत्स | 2 | 20 | 7 | पयः॑ पृथि॒व्यां पय॒ ओष॑धीषु॒ प | 2 | 20 | 22 | इ॒मौ ते॑ प॒क्षा अ॒जरौ॑ पत॒त्रि |
| 2 | 19 | 21 | ऊर्क्च॑ मे सू॒नृता॑ च मे॒ पय॑श | 2 | 19 | 36 | एका॑ च मे ति॒स्रश्च॑ मे ति॒स्र | 2 | 20 | 8 | ऋ॒ता॒षाळृ॒तधा॑मा॒ग्निर्ग॑न्ध॒र् | 2 | 20 | 23 | इन्दु॒र्दक्षः॑ श्ये॒न ऋ॒ताव॒ |
| 2 | 19 | 22 | ऋ॒तं च॑ मे॒ऽमृतं᳚ च मेऽय॒क्ष्म | 2 | 19 | 37 | चत॑स्रश्च मे॒ऽष्टौ च॑ मे॒ऽष्टौ | 2 | 20 | 9 | स॑ꣳहि॒तो वि॒श्वसा॑मा॒ सूर्यो॑ | 2 | 20 | 24 | दि॒वो मू॒र्धासि॑ पृथि॒व्या नाभ |
| 2 | 19 | 23 | र॒यिश्च॑ मे॒ राय॑श्च मे पु॒ष्ट | 2 | 19 | 38 | त्र्यवि॑श्च मे त्र्य॒वी च॑ मे | 2 | 20 | 10 | सु॒षु॒म्णः सूर्य॑रश्मिश्च॒न्द् | 2 | 20 | 25 | विश्व॑स्य मू॒र्धन्नधि॑ तिष्ठसि |
| 2 | 19 | 24 | व्री॒हय॑श्च मे॒ यवा॑श्च मे॒ मा | 2 | 19 | 39 | प॒ष्ठ॒वाट् च॑ मे पष्ठौ॒ही च॑ म | 2 | 20 | 11 | इ॒षि॒रो वि॒श्वव्य॑चा॒ वातो॑ गन | 2 | 20 | 26 | इ॒ष्टो य॒ज्ञो भृगु॑भिराशी॒र्दा |
| 2 | 19 | 25 | अश्मा॑ च मे॒ मृत्ति॑का च मे गि | 2 | 19 | 40 | वाजा॑य॒ स्वाहा॑ प्रस॒वाय॒ स्वा | 2 | 20 | 12 | भु॒ज्युः सु॑प॒र्णो य॒ज्ञो ग॑न् | 2 | 20 | 27 | इ॒ष्टो अ॒ग्निराहु॑तः पिपर्तु न |
| 2 | 19 | 26 | अ॒ग्निश्च॑ म॒ आप॑श्च मे वी॒रुध | 2 | 19 | 41 | इ॒यं ते॒ राण्मि॒त्राय॑ य॒न्तास | 2 | 20 | 13 | प्र॒जाप॑तिर्वि॒श्वक॑र्मा॒ मनो॑ | 2 | 20 | 28 | यदाकू॑तात्स॒मसु॑स्रोद्धृ॒दो वा |
| 2 | 19 | 27 | वसु॑ च मे वस॒तिश्च॑ मे॒ कर्म॑ | 2 | 19 | 42 | आयु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पतां प्रा॒णो | 2 | 20 | 14 | स नो॑ भुवनस्य पते प्रजापते॒ यस | 2 | 20 | 29 | ए॒तꣳ स॑धस्थ॒ परि॑ ते ददामि॒ यम |
| 2 | 19 | 28 | अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ स | 2 | 19 | 43 | स्तोम॑श्च॒ यजु॑श्च॒ ऋक् च॒ साम | 2 | 20 | 15 | स॒मु॒द्रो॑ऽसि॒ नभ॑स्वाना॒र्द्र | 2 | 20 | 30 | ए॒तं जा॑नाथ प॒रमे व्यो॑म॒न्देव |
| 2 | 19 | 29 | मि॒त्रश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ व | 2 | 20 | 1 | वाज॑स्य॒ नु प्र॑स॒वे मा॒तरं᳚ म | 2 | 20 | 16 | यास्ते॑ अग्ने॒ सूर्ये॒ रुचो॒ द | 2 | 20 | 31 | उद्बु॑ध्यस्वाग्ने॒ प्रति॑जागृह |
| 2 | 19 | 30 | पृ॒थि॒वी च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ऽ | 2 | 20 | 2 | विश्वे॑ अ॒द्य म॒रुतो॒ विश्व॑ ऊ | 2 | 20 | 17 | या वो॑ दे॒वाः सूर्ये॒ रुचो॒ गो | 2 | 20 | 32 | येन॒ वह॑सि स॒हस्र॒ं येना॑ग्ने |
| 2 | 19 | 31 | अ॒ꣳशुश्च॑ मे र॒श्मिश्च॒ मेऽदा॑ | 2 | 20 | 3 | वाजो॑ नः स॒प्त प्र॒दिश॒श्चत॑स् | 2 | 20 | 18 | रुचं᳚ नो धेहि ब्राह्म॒णेषु॒ रु | 2 | 20 | 33 | प्र॒स्त॒रेण॑ परि॒धिना॑ स्रु॒चा |
| 2 | 19 | 32 | आ॒ग्रया॒णश्च॑ मे वैश्वदे॒वश्च॑ | 2 | 20 | 4 | वाजो॑ नो अ॒द्य प्रसु॑वाति॒ दान | 2 | 20 | 19 | तत्त्वा॑ यामि॒ ब्रह्म॑णा॒ वन्द | 2 | 20 | 34 | यद्द॒त्तं यत्प॑रा॒दान॒ं यत्पू॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 2 | 20 | 35 | यत्र॒ धारा॒ अन॑पेता॒ मधो॑र्घृ॒ |
| 2 | 20 | 36 | ये अ॒ग्नय॒ः पाञ्च॑जन्या अ॒स्या |
| 2 | 20 | 37 | वार्त्र॑हत्याय॒ शव॑से पृतना॒षा |
| 2 | 20 | 38 | स॒हदा॑नुं पुरुहूत क्षि॒यन्त॑मह |
| 2 | 20 | 39 | वि न॑ इन्द्र॒ मृधो॑ जहि नी॒चा |
| 2 | 20 | 40 | मृ॒गो न भी॒मः कु॑च॒रो गि॑रि॒ष् |
| 2 | 20 | 41 | वै॒श्वा॒न॒रो न॑ ऊ॒तय॒ आ प्र या |
| 2 | 20 | 42 | पृ॒ष्टो दि॒वि पृ॒ष्टो अ॒ग्निः |
| 2 | 20 | 43 | अ॒श्याम॒ तं काम॑मग्ने॒ तवो॒ती |
| 2 | 20 | 44 | व॒यं ते॑ अ॒द्य र॑रि॒मा हि काम॑ |
| 2 | 20 | 45 | धा॒म॒च्छद॒ग्निरिन्द्रो॑ ब्र॒ह् |
| 2 | 20 | 46 | त्वं य॑विष्ठ दा॒शुषो॒ नॄः॑ पा॑ |

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

# शुक्लयजुर्वेदः

# काण्वशाखा संहिता

# तृतीय दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 21 | 1 | स्वा॒द्वीं त्वा॑ स्वा॒दुना॑ ती॒व्रां ती॒व्रेणा॒मृता॑म॒मृते॑न |
| 3 | 21 | 2 | परी॒तो षि॑ञ्चता सु॒तꣳ सोमो॒ य |
| 3 | 21 | 3 | वा॒योः पू॒तः प॒वित्रे॑ण॒ प्र॒त |
| 3 | 21 | 4 | पु॒नाति॑ ते परि॒स्रुत॒ꣳ सोम॒ꣳ |
| 3 | 21 | 5 | ब्रह्म॑ क्ष॒त्रं प॑वते॒ तेज॑ इ |
| 3 | 21 | 6 | नाना॒ हि वा᳚ दे॒वहि॑त॒ꣳ सद॑स् |
| 3 | 21 | 7 | उ॒प॒या॒मगृ॑हीतो॒ऽस्याश्वि॒नं त |
| 3 | 21 | 8 | तेजो॑ऽसि॒ तेजो॒ मयि॑ धेहि वी॒र |
| 3 | 21 | 9 | या व्या॒घ्रं विषू॑चिको॒भौ वृकं॑ |
| 3 | 21 | 10 | यदा॑पि॒पेष॑ मा॒तर॑ पु॒त्रः प् |
| 3 | 21 | 11 | स॒म्पृच॑ स्थ॒ सं मा॑ भ॒द्रेण॑ |
| 3 | 21 | 12 | दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत भेष॒जं भि॒ष |
| 3 | 21 | 13 | दी॒क्षायै॑ रू॒प ꣳशष्पा॑णि प्रा |
| 3 | 21 | 14 | आ॒ति॒थ्यरू॒पं मास॑रं महावी॒रस् |
| 3 | 21 | 15 | सोम॑स्य रू॒पं क्री॒तस्य॑ परि॒स |
| 3 | 21 | 16 | आ॒स॒न्दी रू॒पꣳ रा॑जास॒न्द्यै व |
| 3 | 21 | 17 | वेद्या॒ वेदि॒ः समा॑प्यते ब॒र्ह |
| 3 | 21 | 18 | ह॒वि॒र्धानं॒ यद॒श्विनाग्नी॑ध्र |
| 3 | 21 | 19 | प्रै॒षेभि॑ः प्रै॒षाना॑प्नोत्या |
| 3 | 21 | 20 | प॒शुभि॑ः प॒शूना॑प्नोति पुरो॒ळा |
| 3 | 21 | 21 | धा॒नाः क॑र॒म्भः सक्त॑वः परीवा॒ |
| 3 | 21 | 22 | धा॒ना॑नाꣳ रू॒पं कुव॑लं परीवा॒प |
| 3 | 21 | 23 | पय॑सो रू॒पं यद्यवा॑ द॒ध्नो रू॒ |
| 3 | 21 | 24 | आश्रा॑व॒येति॑ स्तो॒त्रिया॑ः प् |
| 3 | 21 | 25 | अ॒र्ध॒ ऋ॒चैरु॒क्थानाꣳ॑ रू॒पं प |
| 3 | 21 | 26 | अ॒श्विभ्या᳚ प्रातःसव॒नमिन्द्र |
| 3 | 21 | 27 | वा॒य॒व्यैर्वा॒य॒व्या॑न्याप्नोत |
| 3 | 21 | 28 | यजु॑र्भिराप्यन्ते॒ ग्रहा॒ ग्रह |
| 3 | 21 | 29 | इळा॑भिर्भ॒क्षाना॑प्नोति सू॒क्तव |
| 3 | 21 | 30 | व्र॒तेन॑ दी॒क्षामा॑प्नोति दी॒क |
| 3 | 21 | 31 | ए॒ताव॑द्रू॒पं य॒ज्ञस्य॒ यद्दे॒ |
| 3 | 21 | 32 | सुरा॑वन्तं बर्हि॒षद॑ꣳ सु॒वीर᳚ |
| 3 | 21 | 33 | यस्ते॒ रस॒ः संभृ॑त॒ ओष॑धीषु॒ स |
| 3 | 21 | 34 | यम॒श्विना॒ नमु॑चेरासु॒रादधि॒ स |
| 3 | 21 | 35 | यदत्र॑ रि॒प्तꣳ र॒सिन॑ः सु॒तस्य |
| 3 | 21 | 36 | पि॒तृभ्य॑ः स्वधा॒यिभ्य॑ः स्व॒ध |
| 3 | 21 | 37 | अक्ष॑न् पितरोऽमी॑मदन्त पि॒तरोऽ |
| 3 | 21 | 38 | पु॒नन्तु॑ मा पि॒तर॑ः सो॒म्यासः |
| 3 | 21 | 39 | पु॒नन्तु॑ मा पिताम॒हाः पु॒नन्त |
| 3 | 21 | 40 | अग्न॒ आयू॑ꣳषि पवस्व॒ आ सु॒वोर् |
| 3 | 21 | 41 | पु॒नन्तु॑ मा देव॒जनाः पु॒नन्तु |
| 3 | 21 | 42 | प॒वित्रे॑ण पुनीहि मा शु॒क्रेण॑ |
| 3 | 21 | 43 | यत्ते॑ प॒वित्र॑म॒र्चिष्यग्ने॒ |
| 3 | 21 | 44 | पव॑मान॒ः सो अ॒द्य न॑ः प॒वित्रे |
| 3 | 21 | 45 | उ॒भाभ्या᳚ देव सवितः प॒वित्रे॑ |
| 3 | 21 | 46 | वै॒श्व॒दे॒वी पु॑न॒ती दे॒व्यागा |
| 3 | 21 | 47 | ये स॑मा॒नाः सम॑नसः पि॒तरो॑ यम॒ |
| 3 | 21 | 48 | ये स॑मा॒नाः सम॑नसो जी॒वा जी॒वे |
| 3 | 21 | 49 | द्वे सृ॒ती अ॑श्रृणवं पितॄ॒णाम॒हं |
| 3 | 21 | 50 | इ॒दꣳ ह॒विः प्र॒जन॑नं मे अस्तु॒ |
| 3 | 21 | 51 | उदी॑रता॒मव॑र॒ उत्परा॑स॒ उन्म॑ध |
| 3 | 21 | 52 | त्वꣳ सो॑म॒ प्रचि॑कितो मनी॒षा त |
| 3 | 21 | 53 | त्वया॒ हि न॑ः पि॒तर॑ः सोम॒ पूर |
| 3 | 21 | 54 | त्वꣳ सो॑मꣳ पि॒तृभि॑ः संवि॑दा॒नो |
| 3 | 21 | 55 | बर्हि॑षदः पितर ऊ॒त्य॒र्वागि॒मा |
| 3 | 21 | 56 | उप॑हूताः पि॒तर॑ः सो॒म्यासो॑ बर |
| 3 | 21 | 57 | आहं पि॒तॄन्त्सु॑वि॒दत्राँ॑२ अव |
| 3 | 21 | 58 | अग्नि॑ष्वात्ताः पितर॒ एह गच्छ॑ |
| 3 | 21 | 59 | आ य॑न्तु नः पि॒तर॑ः सो॒म्यासो॑ |
| 3 | 21 | 60 | ये अ॑ग्निष्वा॒त्ता ये अन॑ग्निष |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 21 | 61 | अग्निष्वात्तानृतुमतो हवा | 3 | 21 | 76 | वेदेन रूपे व्यपिबत् सु | 3 | 21 | 91 | सरस्वती योन्यां गर्भम | 3 | 21 | 106 | लोमानि प्रयतिर्मम त् |
| 3 | 21 | 62 | आच्या जानु दक्षिणतो निषद्य | 3 | 21 | 77 | सीसेन तन्त्रं मनसा मन | 3 | 21 | 92 | तेजः पशूनाꣳ हविरिन्द् | 3 | 22 | 1 | यद्देवा देवहेळनं देवासश्च |
| 3 | 21 | 63 | आसीनासो अरुणीनामुपस्थे र | 3 | 21 | 78 | तदस्य रूपममृतꣳ शचीभि | 3 | 21 | 93 | क्षत्रस्य नाभिरसि क्ष | 3 | 22 | 2 | यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि |
| 3 | 21 | 64 | यमग्ने कव्यवाहन त्वं चिन्मन | 3 | 21 | 79 | तदश्विना भिषजा रुद्र | 3 | 21 | 94 | अश्विनोर्भैषज्येन तेज | 3 | 22 | 3 | यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एना |
| 3 | 21 | 65 | यो अग्निः कव्यवाहनः पितॄन | 3 | 21 | 80 | सरस्वती मनसा पेशलं वस | 3 | 21 | 95 | कोऽसि कतमोऽसि कस्मै | 3 | 22 | 4 | यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभाय |
| 3 | 21 | 66 | त्वमग्न ईळितः जातवेदो वाड | 3 | 21 | 81 | पयसा शुक्रममृतं जनित | 3 | 21 | 96 | शिरो मे श्रीर्यशो मुखं | 3 | 22 | 5 | द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन |
| 3 | 21 | 67 | इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये | 3 | 21 | 82 | इन्द्रः सुत्रामा हृदय | 3 | 21 | 97 | जिह्वा मे भद्रं वाङ् म | 3 | 22 | 6 | उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्य |
| 3 | 21 | 68 | ये चेह पितरो ये च नेह याꣳश्चं | 3 | 21 | 83 | आन्त्राणि स्थालीर्मधु | 3 | 21 | 98 | बाहू मे बलमिन्द्रियꣳ | 3 | 22 | 7 | अपो अद्यान्वचारिषꣳ रसेन |
| 3 | 21 | 69 | अधा यथा नः पितरः परासः | 3 | 21 | 84 | कुम्भो वनिष्ठुर्जनित | 3 | 21 | 99 | पृष्टीर्मे राष्ट्रमु | 3 | 22 | 8 | समाववर्ति पृथिवी समुषाः सम |
| 3 | 21 | 70 | उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः | 3 | 21 | 85 | मुखꣳ सदस्य शिर इत् सत | 3 | 21 | 100 | नाभिर्मे चित्तं विज्ञा | 3 | 22 | 9 | अभ्या दधामि समिधमग्ने व्र |
| 3 | 21 | 71 | अपां फेनेन नमुचेः शि | 3 | 21 | 86 | अश्विभ्यां चक्षुरमृतं | 3 | 21 | 101 | जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर् | 3 | 22 | 10 | यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च स |
| 3 | 21 | 72 | सोमो राजामृतꣳ सुत ऋज | 3 | 21 | 87 | अविर्न मेषो नसि वीर्य | 3 | 21 | 102 | प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष | 3 | 22 | 11 | यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्य |
| 3 | 21 | 73 | अद्भ्यः क्षीरं व्यपिब | 3 | 21 | 88 | इन्द्रस्य रूपमृषभो बल | 3 | 21 | 103 | त्रया देवा एकादश त्रयस | 3 | 22 | 12 | अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां |
| 3 | 21 | 74 | रेतो मूत्रं वि जहाति | 3 | 21 | 89 | आत्मन्नुपस्थे न वृकस | 3 | 21 | 104 | प्रथमा द्वितीयैर्द्वि | 3 | 22 | 13 | सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत् |
| 3 | 21 | 75 | दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत | 3 | 21 | 90 | अङ्गान्यात्मन् भिषजा | 3 | 21 | 105 | सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरो | 3 | 22 | 14 | धानावन्तं करम्भिणमपूपवन् |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 22 | 15 | बृ॒हदिन्द्रा॑य गायत॒ मरु॑तो वृ |
| 3 | 22 | 16 | अध्व॑र्यो॒ अद्रि॑भिः सु॒तꣳ सोम |
| 3 | 22 | 17 | यो भू॒ताना॒मधि॑पति॒र्यस्मि॑ँल् |
| 3 | 22 | 18 | उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽस्य॒श्विभ्यां॑ |
| 3 | 22 | 19 | प्रा॒ण॒पा मे॑ अपान॒पाश्च॑क्षु॒ |
| 3 | 22 | 20 | अ॒श्विन॑कृतस्य ते॒ सर॑स्वतिकृत |
| 3 | 22 | 21 | समि॑द्ध॒ इन्द्र॑ उ॒षसा॒मनी॑के |
| 3 | 22 | 22 | नरा॒शꣳस॒ः प्रति॒ शूरो॒ मिमा॑न॒ |
| 3 | 22 | 23 | ई॒ळि॒तो दे॒वैर्हरि॑वाँ२ अभि॒ष् |
| 3 | 22 | 24 | जु॒षा॒णो ब॒र्हिर्हरि॑वान्न॒ इन |
| 3 | 22 | 25 | इन्द्र॒ं दुर॑ः कव॒ष्यो॒ धाव॑मा |
| 3 | 22 | 26 | उ॒षासा॒नक्ता॑ बृह॒ती बृ॒हन्त॒ं |
| 3 | 22 | 27 | दैव्या॒ मिमा॑ना॒ मनु॑षः पुरु॒ |
| 3 | 22 | 28 | ति॒स्रो दे॒वीर्ह॒विषा॒ वर्ध॑मा |
| 3 | 22 | 29 | त्वष्टा॒ दध॒च्छुष्म॒मिन्द्रा॑य |
| 3 | 22 | 30 | वन॒स्पति॒रव॑सृष्टो॒ न पाशै॒स्त |
| 3 | 22 | 31 | स्तो॒काना॒मिन्दु॒ं प्रति॒ शूर॒ |
| 3 | 22 | 32 | आ या॒त्विन्द्रोव॑स॒ उप॑ न इ॒ह |
| 3 | 22 | 33 | आ न॒ इन्द्रो॑ दू॒रादा न॑ आ॒साद |
| 3 | 22 | 34 | आ न॒ इन्द्रो॒ हरि॑भिर्या॒त्वच् |
| 3 | 22 | 35 | त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द |
| 3 | 22 | 36 | इन्द्र॑ः सु॒त्रामा॒ स्ववाँ॒२ अ |
| 3 | 22 | 37 | तस्य॑ व॒यꣳ सु॑म॒तौ य॒ज्ञिय॒स्य |
| 3 | 22 | 38 | आ म॒न्द्रैरि॑न्द्र॒ हरि॑भिर्या |
| 3 | 22 | 39 | ए॒वेदिन्द्र॒ं वृष॑ण॒ं वज्र॑बाह |
| 3 | 22 | 40 | समि॑द्धो अ॒ग्निर॑श्विना त॒प्तो |
| 3 | 22 | 41 | त॒नूपा भि॒षजा॑ सु॒ते॒ऽस्विनो॒ |
| 3 | 22 | 42 | इन्द्रा॒येन्दु॒ꣳ सर॑स्वती॒ नरा |
| 3 | 22 | 43 | आ॒जुह्वा॑ना॒ सर॑स्व॒तीन्द्रा॑य |
| 3 | 22 | 44 | अ॒श्विना॒ नमु॑चेः सु॒तꣳ सोम॑ꣳ |
| 3 | 22 | 45 | क॒व॒ष्यो॑ न॒ व्यच॑स्वतीर॒श्विभ |
| 3 | 22 | 46 | उ॒षासा॒नक्त॑मश्विना॒ दिवेन्द्र |
| 3 | 22 | 47 | पा॒तं नो॑ अश्विना॒ दिवा॑ पा॒हि |
| 3 | 22 | 48 | ति॒स्रस्त्रे॒धा सर॑स्वत्य॒श्वि |
| 3 | 22 | 49 | अ॒श्विना॑ भेष॒जं मधु॑ भेष॒जं न |
| 3 | 22 | 50 | ऋ॒तु॒थेन्द्रो॒ वन॒स्पति॑ः शशमा |
| 3 | 22 | 51 | गोभि॒र्न सोम॑मश्विना॒ मास॑रेण |
| 3 | 22 | 52 | अ॒श्विना॑ ह॒विरि॑न्द्रि॒यं नमु |
| 3 | 22 | 53 | यम॒श्विना॒ सर॑स्वती ह॒विषेन्द् |
| 3 | 22 | 54 | तमिन्द्र॑ं प॒शव॒ः सचा॒श्विनो॒भ |
| 3 | 22 | 55 | य इन्द्र॑ इन्द्रि॒यं द॒धुः स॑व |
| 3 | 22 | 56 | स॒वि॒ता वरु॑णो॒ दध॒द्यज॑मानाय |
| 3 | 22 | 57 | वरु॑णः क्ष॒त्रमि॑न्द्रि॒यं भगे |
| 3 | 22 | 58 | अ॒श्विना॒ गोभि॑रिन्द्रि॒यमश्वे |
| 3 | 22 | 59 | ता नास॑त्या सु॒पेश॑सा॒ हिर॑ण्य |
| 3 | 22 | 60 | ता भि॒षजा॑ सु॒कर्म॑णा॒ सा सु॒द |
| 3 | 22 | 61 | यु॒वꣳ सु॒राम॑मश्विना॒ नमु॑चा आ |
| 3 | 22 | 62 | पु॒त्रमि॑व पि॒तरा॑ अ॒श्विनो॒भे |
| 3 | 22 | 63 | यस्मि॒न्नश्वा॑स ऋष॒भास॑ उ॒क्षण |
| 3 | 22 | 64 | अहा॑व्यग्ने ह॒विरा॒स्ये॑ ते स् |
| 3 | 22 | 65 | अ॒श्विना॒ तेज॑सा॒ चक्षु॑ः प्रा |
| 3 | 22 | 66 | गोम॑दू॒ षु णा॑स॒त्याश्वा॑वद्या |
| 3 | 22 | 67 | न यत्परो॒ नान्त॑र आद॒धर्ष॑द्वृ |
| 3 | 22 | 68 | ता न॒ आ वो॑ळ्हमश्विना र॒यिं पि॒ |
| 3 | 22 | 69 | पा॒व॒का न॒ः सर॑स्वती॒ वाजे॑भिर |
| 3 | 22 | 70 | चो॒द॒यि॒त्री सू॒नृता॑ना॒ं चेत॑ |
| 3 | 22 | 71 | म॒हो अर्ण॒ः सर॑स्वती॒ प्र चे॑त |
| 3 | 22 | 72 | इन्द्रा या॑हि चित्रभानो सु॒ता |
| 3 | 22 | 73 | इन्द्रा या॑हि धि॒येषि॒तो विप्र |
| 3 | 22 | 74 | इन्द्रा या॑हि॒ तूतु॑जान॒ उप॒ ब |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 22 | 75 | अ॒श्विना॑ पिबतां॒ मधु॒ सर॑स्वत | 3 | 23 | 15 | इळा॑भिर॒ग्निरीड्य॒ः सोमो॑ दे॒व | 3 | 23 | 30 | होता॑ यक्षत्स॒मिधा॒ग्निमि॒ळस्प | 3 | 23 | 45 | होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पति॑म॒भि हि |
| 3 | 23 | 1 | इ॒मं मे॑ वरुण श्रु॒धी हव॑म॒द्य | 3 | 23 | 16 | सु॒ब॒र्हिर॒ग्निः पू॑ष॒ण्वान् | 3 | 23 | 31 | होता॑ यक्ष॒त्तनू॒नपा॒त्सर॑स्वत | 3 | 23 | 46 | होता॑ यक्षद॒ग्निꣳ स्वि॑ष्ट॒कृत |
| 3 | 23 | 2 | अहे॑ळमानो वरुणे॒ह बो॒ध्युरु॑शꣳ | 3 | 23 | 17 | दुरो॑ दे॒वीर्दिशो॑ म॒हीर्ब्र॒ह | 3 | 23 | 32 | होता॑ यक्ष॒न्नरा॒शꣳस॒ं न न॒ग्न | 3 | 23 | 47 | दे॒वं ब॒र्हिः सर॑स्वती सुदे॒वम |
| 3 | 23 | 3 | त्वं नो॑ अग्ने॒ वरु॑णस्य वि॒द् | 3 | 23 | 18 | उ॒षे य॒ह्वी सु॒पेश॑सा॒ विश्वे॑ | 3 | 23 | 33 | होता॑ यक्ष॒दिळे॑ळि॒त आ॒जुह्वा॑ | 3 | 23 | 48 | दे॒वीर्द्वारो॑ अ॒श्विना॑ भि॒षज |
| 3 | 23 | 4 | स त्वं नो॑ अग्नेऽव॒मो भ॑वो॒ती | 3 | 23 | 19 | दैव्या॒ होता॑रा भि॒षजेन्द्रे॑ | 3 | 23 | 34 | होता॑ यक्षद्ब॒र्हिरूर्ण॑म्रदा | 3 | 23 | 49 | दे॒वी उ॒षासा॑ अ॒श्विना॑ सु॒त्र |
| 3 | 23 | 5 | म॒हीमू॒ षु मा॒तर॑ꣳ सुव्र॒ताना॑ | 3 | 23 | 20 | ति॒स्र इळा॒ सर॑स्वती॒ भार॑ती म | 3 | 23 | 35 | होता॑ यक्ष॒द्दुरो॒ दिश॑ः कव॒ष् | 3 | 23 | 50 | दे॒वी जोष्ट्री॒ सर॑स्वत्य॒श्वि |
| 3 | 23 | 6 | सु॒त्रामा॑णं पृथि॒वीं द्याम॑ने | 3 | 23 | 21 | त्वष्टा॑ तु॒रीपो॒ अद्भु॑त इन्द | 3 | 23 | 36 | होता॑ यक्षत्सु॒पेश॑सो॒षे नक्तं | 3 | 23 | 51 | दे॒वी ऊ॒र्जाहु॑ती॒ दुघे॑ सु॒दु |
| 3 | 23 | 7 | सु॒नाव॒मा रु॑हेय॒मस्र॑वन्ती॒मन | 3 | 23 | 22 | श॒मि॒ता नो॒ वन॒स्पति॑ः सवि॒ता | 3 | 23 | 37 | होता॑ यक्ष॒द्दैव्या॒ होता॑रा भ | 3 | 23 | 52 | दे॒वा दे॒वाना॑ भि॒षजा॒ होता॑र |
| 3 | 23 | 8 | आ नो॑ मित्रावरुणा घृ॒तैर्गव्यू॒ | 3 | 23 | 23 | स्वाहा॑ य॒ज्ञं वरु॑णः सुक्ष॒त् | 3 | 23 | 38 | होता॑ यक्षत्ति॒स्रो दे॒वीर्न भ | 3 | 23 | 53 | दे॒वीस्ति॒स्रस्ति॒स्रो दे॒वीर॒ |
| 3 | 23 | 9 | प्र बा॒हवा॑ सिसृतं जी॒वसे॑ न॒ | 3 | 23 | 24 | व॒स॒न्तेन॑ ऋ॒तुना॑ दे॒वा वस॑वस | 3 | 23 | 39 | होता॑ यक्षत् सुरेत॑समृष॒भं नर् | 3 | 23 | 54 | दे॒व इन्द्रो॒ नरा॒शꣳस॑स्त्रिवर |
| 3 | 23 | 10 | शं नो॑ भवन्तु वा॒जिनो॒ हवे॑षु | 3 | 23 | 25 | ग्री॒ष्मेण॑ ऋ॒तुना॑ दे॒वा रु॒द | 3 | 23 | 40 | होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पति॑ꣳ शमि॒ता | 3 | 23 | 55 | दे॒वो दे॒वैर्वन॒स्पति॒र्हिर॑ण् |
| 3 | 23 | 11 | ते नो॒ अर्व॑न्तो हवन॒श्रुतो॒ ह | 3 | 23 | 26 | व॒र्षाभि॑र्ऋ॒तुना॑दि॒त्या स्तोम | 3 | 23 | 41 | होता॑ यक्षद॒ग्निꣳ स्वाहाज्य॑स् | 3 | 23 | 56 | दे॒वं ब॒र्हिर्वारि॑तीनामध्व॒रे |
| 3 | 23 | 12 | वाजे॑वाजेऽवत वाजिनो नो॒ धने॑षु | 3 | 23 | 27 | शा॒र॒देन॑ ऋ॒तुना॑ दे॒वा ए॑कविꣳ | 3 | 23 | 42 | होता॑ यक्षद॒श्विनौ॒ छाग॑स्य व॒ | 3 | 23 | 57 | दे॒वो अ॒ग्निः स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒ |
| 3 | 23 | 13 | समि॑द्धो अ॒ग्निः स॒मिधा॒ सुस॑म | 3 | 23 | 28 | हे॒म॒न्तेन॑ ऋ॒तुना॑ दे॒वास्त्र | 3 | 23 | 43 | होता॑ यक्षद॒श्विनौ॒ सर॑स्वती॒म | 3 | 23 | 58 | अ॒ग्निम॒द्य होता॑रमवृणीता॒यं य |
| 3 | 23 | 14 | तनू॒नपा॒च्छुचि॑व्रतस्तनू॒पाश्च | 3 | 23 | 29 | शै॒शि॒रेण॑ ऋ॒तुना॑ दे॒वास्त्र॑ | 3 | 23 | 44 | होता॑ यक्षद॒श्विनौ॒ छाग॑स्य ह॒ | 3 | 23 | 59 | सू॒प॒स्था अ॒द्य दे॒वो वन॒स्पति |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 23 | 60 | त्वाम॒द्य ऋ॑ष आर्षेय ऋषीणां नप |
| 3 | 24 | 1 | तेजो॑ऽसि शु॒क्रम॒मृत॑मायु॒ष्पा |
| 3 | 24 | 2 | इ॒मामं॑गृभ्णन् रश॒नामृ॒तस्य॒ पू |
| 3 | 24 | 3 | अ॒भि॒धा अ॑सि॒ भुव॑नमसि य॒न्तास |
| 3 | 24 | 4 | प्र॒जाप॑तये॒ ब्रह्म॒न्नश्वं॑ भ |
| 3 | 24 | 5 | यो अर्व॑न्तं॒ जिघा॑ꣳसति॒ तम॒भ् |
| 3 | 24 | 6 | अ॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ स्वाह |
| 3 | 24 | 7 | हि॒ङ्का॒राय॒ स्वाहा॒ हिङ्कृ॑ता |
| 3 | 24 | 8 | निवि॑ष्टाय॒ स्वाहोप॑विय॒ स्वाह |
| 3 | 24 | 9 | कूज॑ते॒ स्वाहा॒ प्रबु॑द्धाय॒ स |
| 3 | 24 | 10 | य॒ते स्वाहा॒ धाव॑ते॒ स्वाहो॑द् |
| 3 | 24 | 11 | ज॒वाय॒ स्वाहा॒ बला॑य॒ स्वाहा॑ |
| 3 | 24 | 12 | ईक्ष॑माणाय॒ स्वाहे॑क्षि॒ताय॒ स |
| 3 | 24 | 13 | तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ द |
| 3 | 24 | 14 | हिर॑ण्यपाणिमू॒तये॑ सवि॒तार॒मुप |
| 3 | 24 | 15 | दे॒वस्य॒ चेत॑तो म॒हीं प्र स॑वि |
| 3 | 24 | 16 | सु॒ष्टु॒तिꣳ सु॑मती॒वृधो॑ रा॒ति |
| 3 | 24 | 17 | रा॒तिꣳ सत्प॑तिं म॒हे स॑वि॒तार॒ |
| 3 | 24 | 18 | दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्म॒तिमा॑स॒वं व |
| 3 | 24 | 19 | अ॒ग्निꣳ स्तोमे॑न बोधय समिधा॒नो |
| 3 | 24 | 20 | स ह॑व्य॒वाळम॑र्त्य उ॒शिग्दू॒तश |
| 3 | 24 | 21 | तं त्वा॑ घृतस्न ईमहे॒ चित्र॑भा |
| 3 | 24 | 22 | अ॒ग्निं दू॒तं पु॒रो द॑धे हव्य॒ |
| 3 | 24 | 23 | अजी॑जनो॒ हि प॑वमान॒ सूर्यं॑ वि |
| 3 | 24 | 24 | वि॒भूर्मा॒त्रा प्र॒भूः पि॒त्रा |
| 3 | 24 | 25 | देवा॑ आशापाला ए॒तं दे॒वेभ्योऽश |
| 3 | 24 | 26 | काय॒ स्वाहा॒ कस्मै॒ स्वाहा॑ कत |
| 3 | 24 | 27 | अदि॑त्यै॒ स्वाहादि॑त्यै म॒ह्यै |
| 3 | 24 | 28 | पू॒ष्णे स्वाहा॑ पू॒ष्णे प्रं॑प॒ |
| 3 | 24 | 29 | विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑ |
| 3 | 24 | 30 | आ ब्रह्म॑न् ब्राह्म॒णो ब्रं॑ह्म |
| 3 | 24 | 31 | दोग्ध्री॑ धे॒नुर्वोळ्हा॑न॒ड्वान |
| 3 | 24 | 32 | नि॒का॒मेनि॑कामे नः प॒र्जन्यो॑ |
| 3 | 24 | 33 | प्रा॒णाय॒ स्वाहा॑पा॒नाय॒ स्वाह |
| 3 | 24 | 34 | प्राच्यै॑ दि॒शे स्वाहा॒र्वाच्य |
| 3 | 24 | 35 | अ॒द्भ्यः स्वाहा॑ वा॒र्भ्यः स्व |
| 3 | 24 | 36 | वाता॑य॒ स्वाहा॑ धू॒माय॒ स्वाहा |
| 3 | 24 | 37 | अ॒ग्नये॒ स्वाहा॒ सोमा॑य॒ स्वाह |
| 3 | 24 | 38 | नक्ष॑त्रेभ्य॒ः स्वाहा॑ नक्ष॒त् |
| 3 | 24 | 39 | च॒न्द्राय॒ स्वाहा॒ सूर्या॑य॒ स |
| 3 | 24 | 40 | मूले॑भ्य॒ः स्वाहा॒ शाखा॑भ्य॒ः |
| 3 | 24 | 41 | पृ॒थि॒व्यै स्वाहा॒न्तरि॑क्षाय॒ |
| 3 | 24 | 42 | अस॑वे॒ स्वाहा॒ वस॑वे॒ स्वाहा॑ |
| 3 | 24 | 43 | शू॒षाय॒ स्वाहा॑ सꣳस॒र्पाय॒ स्व |
| 3 | 24 | 44 | मध॑वे॒ स्वाहा॒ माध॑वाय॒ स्वाहा |
| 3 | 24 | 45 | वाजा॑य॒ स्वाहा॑ प्रस॒वाय॒ स्वा |
| 3 | 24 | 46 | आयु॑र्य॒ज्ञेन॑ कल्पता॒ꣳ स्वाहा |
| 3 | 24 | 47 | एक॑स्मै॒ स्वाहा॒ द्वाभ्या॒ꣳ स् |
| 3 | 25 | 1 | हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त॒ताग्रे |
| 3 | 25 | 2 | उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि प्र॒जाप॑तये |
| 3 | 25 | 3 | यः प्रा॑ण॒तो नि॑मिष॒तो म॑हित्व |
| 3 | 25 | 4 | उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि प्र॒जाप॑तये |
| 3 | 25 | 5 | यु॒ञ्जन्ति॑ ब्र॒ध्नम॑रु॒षं चर॑ |
| 3 | 25 | 6 | यु॒ञ्जन्त्य॑स्य॒ काम्या॒ हरी॒ |
| 3 | 25 | 7 | यद्वातो॑ अ॒पो अ॑गनीगन्प्रि॒याम |
| 3 | 25 | 8 | वस॑वस्त्वाञ्जन्तु गाय॒त्रेण॒ छ |
| 3 | 25 | 9 | भूर्भुव॒ः स्व॒र्लाजी३ञ्छा॒ची३न |
| 3 | 25 | 10 | कः स्वि॑देका॒की च॑रति॒ क उ॑ स् |
| 3 | 25 | 11 | सूर्य॑ एका॒की च॑रति च॒न्द्रमा॑ |
| 3 | 25 | 12 | का स्वि॑दासीत्पू॒र्वचि॑त्ति॒ः |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 25 | 13 | द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वं |
| 3 | 25 | 14 | वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग |
| 3 | 25 | 15 | एष स्य राथ्यो वृषा पड्भिश् |
| 3 | 25 | 16 | सꣳशितो रश्मिना रथः सꣳशितो |
| 3 | 25 | 17 | स्वयं वाजिꣳस्तन्वं कल्पयस् |
| 3 | 25 | 18 | न वा उ एतन्म्रियसे न रिष् |
| 3 | 25 | 19 | अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त |
| 3 | 25 | 20 | प्राणाय स्वाहापानाय स्वाह |
| 3 | 25 | 21 | गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे |
| 3 | 25 | 22 | आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर |
| 3 | 25 | 23 | उत्सक्थ्या अव गुदं धेहि |
| 3 | 25 | 24 | यकासकौ शकुन्तिकाहलगिति व |
| 3 | 25 | 25 | यकोऽसकौ शकुन्तक आहलगिति |
| 3 | 25 | 26 | माता च ते पिता च तेऽग्रं |
| 3 | 25 | 27 | माता च ते पिता च तेऽग्रे |
| 3 | 25 | 28 | ऊर्ध्वमेनामुच्छ्रापय गिरौ |
| 3 | 25 | 29 | ऊर्ध्वमेनमुच्छ्रयाद्गिरौ |
| 3 | 25 | 30 | यदस्या अꣳहुभेद्याः कृधु स |
| 3 | 25 | 31 | यद्देवासो ललामगुं प्र विं |
| 3 | 25 | 32 | यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं |
| 3 | 25 | 33 | यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं |
| 3 | 25 | 34 | दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णो |
| 3 | 25 | 35 | गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनु |
| 3 | 25 | 36 | द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रि |
| 3 | 25 | 37 | महानाम्न्यो रेवत्यो विश्वा |
| 3 | 25 | 38 | नार्यस्ते पत्न्यो लोम विचि |
| 3 | 25 | 39 | रजता हरिणीः सीसा युजो यु |
| 3 | 25 | 40 | कुविदङ्ग यवमन्तो वयश्चिद् |
| 3 | 25 | 41 | कस्त्वा छ्यति कस्त्वा विशा |
| 3 | 25 | 42 | ऋतवस्त ऋतुथा पर्व शमितारो |
| 3 | 25 | 43 | अर्धमासाः परूꣳषि ते मासा |
| 3 | 25 | 44 | दैव्या अध्वर्यवस्त्वा छ्यन |
| 3 | 25 | 45 | द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं |
| 3 | 25 | 46 | शं ते परेभ्यो गात्रेभ्यः |
| 3 | 25 | 47 | कः स्विदेकाकी चरति क उ स् |
| 3 | 25 | 48 | सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा |
| 3 | 25 | 49 | किꣳ स्वित्सूर्यसमं ज्योतिः |
| 3 | 25 | 50 | ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द् |
| 3 | 25 | 51 | पृच्छामि त्वा चितये देवसख |
| 3 | 25 | 52 | अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्म |
| 3 | 25 | 53 | केष्वन्तः पुरुष आ विवेश क |
| 3 | 25 | 54 | पञ्चस्वन्तः पुरुष आ विवेश |
| 3 | 25 | 55 | का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः |
| 3 | 25 | 56 | द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्वं |
| 3 | 25 | 57 | क ईमरे पिशङ्गिला क ईं कुरु |
| 3 | 25 | 58 | अजारे पिशङ्गिला श्वावित्कु |
| 3 | 25 | 59 | कत्यस्य विष्ठाः कत्यक्षराण |
| 3 | 25 | 60 | षळस्य विष्ठाः शतमक्षराण्य |
| 3 | 25 | 61 | को अस्य वेद भुवनस्य नाभिं |
| 3 | 25 | 62 | वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिं व |
| 3 | 25 | 63 | पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथ |
| 3 | 25 | 64 | इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव |
| 3 | 25 | 65 | सुभूः स्वयम्भूः प्रथमोऽन |
| 3 | 25 | 66 | होता यक्षत्प्रजापतिꣳ सोमस |
| 3 | 25 | 67 | प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो |
| 3 | 26 | 1 | अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्रा |
| 3 | 26 | 2 | राश्विनावधोरामौ बाह्वोः सौ |
| 3 | 26 | 3 | त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ |
| 3 | 26 | 4 | शितिरन्ध्रोऽन्यतः शितिरन्ध |
| 3 | 26 | 5 | शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मण |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 26 | 6 | अ॑वलि॒प्ता रौ॒द्रा नभो॑रूपाः प | 3 | 26 | 21 | उ॒क्ताः सं॑च॒रा एता॑ ऐन्द्रा॒ग | 3 | 26 | 36 | सोमा॑य कुल॒ङ्ग आ॑र॒ण्यो॒ऽजो न | 3 | 27 | 7 | अ॒ग्नेः प॑क्ष॒तिर्वा॒योर्निप॑क |
| 3 | 26 | 7 | फ॒ल्गूर्लो॑हितो॒र्णी प॑ल॒क्षी | 3 | 26 | 22 | धू॒म्रा ब॒भ्रुनी॑काशाः पितृ॒णा | 3 | 26 | 37 | सौ॒री ब॒लाका॑ शा॒र्गः सृ॑ज॒यः | 3 | 27 | 8 | इ॒न्द्रा॒ग्न्योः प॑क्ष॒तिः सर॑ |
| 3 | 26 | 8 | कृ॒ष्णग्री॑वः शिति॒कक्षो॑ऽञ्जि | 3 | 26 | 23 | उ॒क्ताः सं॑च॒रा एताः॑ शुनासी॒र | 3 | 26 | 38 | सु॒प॒र्णः पा॑र्ज॒न्य आ॒तिर्वा॑ | 3 | 27 | 9 | म॒रुता॑ꣳ स्क॒न्धा विश्वे॑षां द |
| 3 | 26 | 9 | शि॒ल्पा वै॑श्वदे॒व्यो॒ रोहि॑ण् | 3 | 26 | 24 | व॒स॒न्ताय॑ क॒पिञ्ज॑ला॒नाल॑भते | 3 | 26 | 39 | पु॒रु॒ष॒मृ॒गश्च॒न्द्रम॑सो गो॒ध | 3 | 27 | 10 | पू॒षण॑ वनि॒ष्ठुना॑न्धा॒हीन्त् |
| 3 | 26 | 10 | कृ॒ष्णग्री॑वा आग्ने॒याः शिंति॒ | 3 | 26 | 25 | स॒मु॒द्राय॑ शिशु॒मारा॒नाल॑भते | 3 | 26 | 40 | ए॒ण्यह्नो॑ म॒ण्डूको॒ मूषि॑का त | 3 | 27 | 11 | इन्द्र॑स्य क्रो॒ळोऽदि॑त्यै पाज |
| 3 | 26 | 11 | उ॒न्न॒त ऋ॑ष॒भो वा॑म॒नस्त ऐ॑न्द | 3 | 26 | 26 | सोमा॑य ह॒ꣳसानाल॑भते वा॒यवे॑ ब॒ | 3 | 26 | 41 | अ॒न्य॒वा॒पो॑ऽर्धमा॒साना॒मृश्यो | 3 | 27 | 12 | नभ॑ उद॒र्येण चक्रवा॒कौ मत॑स्न |
| 3 | 26 | 12 | एता॑ ऐन्द्रा॒ग्ना द्वि॑रू॒पा अ | 3 | 26 | 27 | अ॒ग्नये॑ कु॒टरू॒नाल॑भते॒ वन॒स् | 3 | 26 | 42 | व॒र्षा॒हूर्ऋ॑तू॒नामा॒खुः कशो॑ म | 3 | 27 | 13 | विधृ॑ति॒ नाभ्या॑ घृ॒तꣳ रसे॑ना |
| 3 | 26 | 13 | कृ॒ष्णग्री॑वा आग्ने॒या ब॒भ्रवः | 3 | 26 | 28 | सोमा॑य ल॒बानाल॑भते॒ त्वष्ट्रे॑ | 3 | 26 | 43 | श्वि॒त्र आ॑दि॒त्याना॒मुष्ट्रो॒ | 3 | 27 | 14 | हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भः सम॑वर्त॒ताग्रे |
| 3 | 26 | 14 | कृ॒ष्णा भौ॒मा धू॒म्रा आ॑न्तरि॒ | 3 | 26 | 29 | अह्ने॑ पा॒राव॑ता॒नाल॑भते॒ रात् | 3 | 26 | 44 | ख॒ड्गो वै॑श्वदे॒वः श्वा कृ॒ष्ण | 3 | 27 | 15 | यः प्रा॑ण॒तो नि॑मिष॒तो म॑हि॒त् |
| 3 | 26 | 15 | धू॒म्रान्व॑स॒न्ताया ल॑भते श्वे | 3 | 26 | 30 | भूम्या॑ आ॒खूनाल॑भते॒ऽन्तरि॑क्ष | 3 | 27 | 1 | शाद॑ द॒द्भिरव॑कां दन्तमू॒लै॒र् | 3 | 27 | 16 | यस्ये॒मे हि॒मव॑न्तो महि॒त्वा य |
| 3 | 26 | 16 | त्र्यव॑यो गायत्र्यै॒ पञ्चा॑वयस | 3 | 26 | 31 | वसु॑भ्य॒ ऋश्या॒नाल॑भते रु॒द्रे | 3 | 27 | 2 | आ॒दि॒त्यान् श्मश्रु॑भि॒ः पन्था | 3 | 27 | 17 | य आ॑त्म॒दा ब॑ल॒दा यस्य॒ विश्व॑ |
| 3 | 26 | 17 | प॒ष्ठ॒वाहो॑ वि॒राजं॑ उ॒क्षणो॑ ब | 3 | 26 | 32 | ईशा॑नाय॒ पर॑स्वत॒ आल॑भते मि॒त् | 3 | 27 | 3 | वात॑ प्रा॒णेना॑पा॒ने॒न नसि॑के | 3 | 27 | 18 | आ नो॑ भ॒द्राः क्रत॑वो यन्तु वि |
| 3 | 26 | 18 | कृ॒ष्णग्री॑वा आग्ने॒या ब॒भ्रवः | 3 | 26 | 33 | प्र॒जाप॑तये॒ पुरु॑षान् ह॒स्तिन | 3 | 27 | 4 | कर्णा॑भ्या॒ꣳ श्रोत्र॒ꣳ श्रोत्र | 3 | 27 | 19 | दे॒वाना॑ भ॒द्रा सु॑म॒तिर्ऋ॑जूय |
| 3 | 26 | 19 | उ॒क्ताः सं॑च॒रा एता॑ ऐन्द्रा॒ग | 3 | 26 | 34 | प्र॒जाप॑तये च वा॒यवे॑ च गोमृ॒ग | 3 | 27 | 5 | म॒शका॒न्केशै॒रिन्द्र॒ꣳ स्वप॑सा | 3 | 27 | 20 | तान्पूर्व॑या नि॒विदा॑ हूमहे व॒ |
| 3 | 26 | 20 | अ॒ग्नयेऽनी॑कवते प्रथम॒जानाल॑भत | 3 | 26 | 35 | म॒युः प्रा॑जाप॒त्य उ॒लो ह॒लिक् | 3 | 27 | 6 | ज॒वं जङ्घा॑भ्या॒मध्वा॑नं बा॒हु | 3 | 27 | 21 | तन्नो॒ वातो॑ मयो॒भु वा॑तु भेष॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 27 | 22 | तमीशा॑नं॒ जग॑तस्त॒स्थुष॒स्पतिं॑ |
| 3 | 27 | 23 | स्व॒स्ति न॒ इन्द्रो॑ वृ॒द्धश्र |
| 3 | 27 | 24 | पृष॑दश्वा म॒रुत॒ः पृश्नि॑मातरः |
| 3 | 27 | 25 | भ॒द्रं कर्णे॑भिः शृणुयाम देवा |
| 3 | 27 | 26 | श॒तमिन्नु श॒रदो॒ अन्ति॑ देवा॒ |
| 3 | 27 | 27 | अदि॑ति॒र्द्यौरदि॑तिर॒न्तरि॑क्ष |
| 3 | 27 | 28 | मा नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो अर्य॒माय |
| 3 | 27 | 29 | यन्नि॒र्णिजा॒ रेक्ण॑सा॒ प्रावृ |
| 3 | 27 | 30 | ए॒ष च्छाग॑ः पु॒रो अश्वे॑न वा॒ज |
| 3 | 27 | 31 | यद्ध॑वि॒ष्य॑मृतु॒शो दे॑व॒यान॒ं |
| 3 | 27 | 32 | होता॑ध्व॒र्युराव॑या अग्निमि॒न् |
| 3 | 27 | 33 | यू॒प॒व्र॒स्का उ॒त ये यू॑पवा॒हा |
| 3 | 27 | 34 | उप॒ प्रागा॑त्सु॒मन्मे॑ऽधायि॒ म |
| 3 | 27 | 35 | यद्वा॒जिनो॒ दाम॑ स॒ंदान॒मर्व॑त |
| 3 | 27 | 36 | यदश्व॑स्य क्र॒विषो॒ मक्षि॒काश॒ |
| 3 | 27 | 37 | यदू॑वध्यमु॒दर॑स्याप॒वाति॒ य आ॒ |
| 3 | 27 | 38 | यत्ते॒ गात्रा॑द॒ग्निना॑ प॒च्यम |
| 3 | 27 | 39 | ये वा॒जिन॑ं परि॒पश्य॑न्ति प॒क् |
| 3 | 27 | 40 | यन्नीक्ष॑णं मा॒ꣳस्पच॑न्या उ॒खा |
| 3 | 27 | 41 | मा त्वा॒ग्निर्ध्व॑नयीद्धू॒मग॑न |
| 3 | 27 | 42 | नि॒क्रम॑णं नि॒षद॑नं वि॒वर्त॑नं |
| 3 | 27 | 43 | यदश्वा॑य॒ वास॑ उपस्तृ॒णन्त्य॑ध |
| 3 | 27 | 44 | इ॒मा नु क॒ं भुव॑ना सीषधा॒मेन्द |
| 3 | 27 | 45 | अग्ने॒ त्वं नो॒ अन्त॑म उ॒त त्र |
| 3 | 28 | 1 | अ॒ग्निश्च॑ पृथि॒वी च॒ संन॑ते॒ |
| 3 | 28 | 2 | सका॑मा॒ँ२ अध्व॑नस्कुरु स॒ंज्ञा |
| 3 | 28 | 3 | ब्र॒ह्म॒रा॒ज॒न्या॑भ्याꣳ शू॒द्र |
| 3 | 28 | 4 | बृह॑स्पते॒ अति॒ यद॒र्यो अर्हा॑ |
| 3 | 28 | 5 | इन्द्र॒ गोम॑न्नि॒हा या॑हि॒ पिब |
| 3 | 28 | 6 | ऋ॒ताव॑ानं वैश्वान॒रमृ॒तस्य॒ ज् |
| 3 | 28 | 7 | वै॒श्वा॒न॒रꣳ ह॑वामह ऋ॒तस्य॒ ज् |
| 3 | 28 | 8 | वै॒श्वा॒न॒रो न॑ ऊ॒तय॒ आ प्र या |
| 3 | 28 | 9 | वै॒श्वा॒न॒रस्य॑ सुम॒तौ स्या॑म॒ |
| 3 | 28 | 10 | म॒रुत्वा॑ँ२ इन्द्र वृष॒भो रणा॑ |
| 3 | 28 | 11 | म॒हाँ२ इन्द्रो॒ वज्र॑हस्तः षोळ |
| 3 | 28 | 12 | अ॒ग्निर्ऋषि॒ः पव॑मान॒ः पाञ्च॑जन |
| 3 | 28 | 13 | आ नो॑ गो॒त्रा द॑र्दृहि गोपते॒ |
| 3 | 29 | 14 | समा॑स्त्वाग्न ऋ॒तवो॑ वर्धयन्तु |
| 3 | 29 | 15 | सं चे॒ध्यस्वा॑ग्ने॒ प्र च॑ बोध |
| 3 | 29 | 16 | त्वाम॑ग्ने वृणते ब्राह्म॒णा इ॒ |
| 3 | 29 | 17 | इ॒हैवाग्ने॒ अधि॑ धारया र॒यिं म |
| 3 | 29 | 18 | क्ष॒त्रेणा॑ग्ने॒ स्वायु॒ः सꣳ र |
| 3 | 29 | 19 | अति॒ निहो॒ अति॒ स्रिधोऽत्यचि॑त |
| 3 | 29 | 20 | अ॒ना॒धृ॒ष्यो जा॒तवे॑दा॒ अनि॑ष् |
| 3 | 29 | 21 | बृह॑स्पते सवितर्बो॒धयै॑न॒ꣳ सꣳश |
| 3 | 29 | 22 | अ॒मु॒त्र॒भूया॒दध॒ यद्य॒मस्य॒ ब |
| 3 | 29 | 23 | उद्व॒यं तम॑स॒स्परि॒ स्व॒ः पश्य |
| 3 | 29 | 24 | ऊ॒र्ध्वा अ॑स्य स॒मिधो॑ भवन्त्य |
| 3 | 29 | 25 | तनू॒नपा॒दसु॑रो वि॒श्ववे॑दा दे॒ |
| 3 | 29 | 26 | मध्वा॑ य॒ज्ञं न॑क्षसे प्रीणा॒न |
| 3 | 29 | 27 | अनु॑ वी॒रैरनु॑ पुष्यास्म॒ गोभि |
| 3 | 29 | 28 | अच्छा॒यमे॑ति॒ शव॑सा घृ॒तेनै॑ळा |
| 3 | 29 | 29 | स य॑क्षदस्य महि॒मान॑म॒ग्नेः स |
| 3 | 29 | 30 | (१६४६)द्वारो॑ दे॒वीरन्व॑स्य॒ व |
| 3 | 29 | 31 | ते अ॑स्य॒ योष॑णे दि॒व्ये न योन |
| 3 | 29 | 32 | दैव्या॑ होतारा ऊ॒र्ध्वम॑ध्व॒रं |
| 3 | 29 | 33 | ति॒स्रो दे॒वीर्ब॒र्हिरिदꣳ स॑द॒ |
| 3 | 29 | 34 | तन्न॑स्तु॒रीप॒मद्भु॑तं पु॒रु॒क् |
| 3 | 29 | 35 | वन॑स्प॒तेऽव॑ सृजा॒ ररा॑ण॒स्त्म |
| 3 | 29 | 36 | अग्ने॒ स्वाहा॑ कृणुहि जातवेद॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 29 | 37 | पीवो॑ अन्ना रयि॒वृध॑ः सुमे॒धाः |
| 3 | 29 | 38 | रा॒ये नु यं ज॒ज्ञतू॒ रोद॑सी॒मे |
| 3 | 29 | 39 | वा॒युर॑ग्रे॒गा य॑ज्ञ॒प्रीः सा॒ |
| 3 | 29 | 40 | प्र याभि॒र्यासि॑ दा॒श्वा॑ꣳस॒मच्॒ |
| 3 | 29 | 41 | वायो॒ ये ते॑ सह॒स्रिणो॒ रथा॑स॒ |
| 3 | 29 | 42 | एक॑या च द॒शभि॑श्च स्वभूते॒ द्व |
| 3 | 29 | 43 | नि॒युत्वा॑न्वाय॒ आ ग॑ह्य॒यꣳ शु |
| 3 | 29 | 44 | वायो॑ शु॒क्रो अ॑यामि ते॒ मध्वो |
| 3 | 29 | 45 | आ नो॑ नि॒युद्भि॑ः श॒तिनी॑भिरध्॒ |
| 3 | 29 | 46 | तव॑ वाय ऋतस्पते॒ त्वष्टु॑र्जाम |
| 3 | 29 | 47 | हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भ इत्ये॒षः । येन॒ |
| 3 | 29 | 48 | (१६६४)यं क्रन्द॑सी॒ अव॑सा तस्त |
| 3 | 29 | 49 | आपो॑ ह॒ यद्बृ॑ह॒तीर्विश्व॒माय॒ |
| 3 | 29 | 50 | यश्चि॒दापो॑ महि॒ना प॒र्यप॑श्य॒ |
| 3 | 29 | 51 | अग्न॒ आयू॑ꣳषि पवस॒ आ सु॒वोर्ज॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 29 | 52 | अग्ने॒ पव॑स्व॒ स्वपा॑ अ॒स्मे व |
| 3 | 29 | 53 | अ॒ग्निर्ऋषि॒ः पव॑मान॒ः पाञ्च॑जन |
| 3 | 29 | 54 | अ॒भि त्वा॑ शूर नोनु॒मोऽदु॑ग्धा |
| 3 | 29 | 55 | न त्वावाँ॑२ अ॒न्यो दि॒व्यो न प |
| 3 | 29 | 56 | त्वामिद्धि हवा॑महे सा॒तौ वाज॑स |
| 3 | 29 | 57 | स त्वं न॑श्चित्र वज्रहस्त धृष्॒ |
| 3 | 29 | 58 | कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒द |
| 3 | 29 | 59 | कस्त्वा॑ स॒त्यो मदा॑ना॒ं मꣳहि॑ |
| 3 | 29 | 60 | अ॒भी षु ण॒ः सखी॑नामवि॒ता ज॑रित |
| 3 | 29 | 61 | य॒ज्ञाय॑ज्ञा वो अ॒ग्नये॑ गि॒रा |
| 3 | 29 | 62 | ऊ॒र्जो नपा॑त॒ꣳ स हि॒नायम॑स्म॒य |
| 3 | 29 | 63 | सं॒व॒त्स॒रो॑ऽसि परिवत्स॒रो॑ऽसी |
| 3 | 29 | 64 | प्रेत्या॒ एत्यै॒ सं चाश्च॒ प्र |
| 3 | 30 | 1 | होता॑ यक्षत्स॒मिधेन्द्र॑मि॒ळस्॒ |
| 3 | 30 | 2 | होता॑ यक्ष॒त्तनू॒नपा॑तमू॒तिभि॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 30 | 3 | होता॑ यक्ष॒दिळा॑भि॒रिन्द्र॑मीळ |
| 3 | 30 | 4 | होता॒ यक्ष॑द्ब॒र्हिषीन्द्र॑ न |
| 3 | 30 | 5 | होता॑ यक्ष॒दोजो॒ न वी॒र्य॒ꣳ सह |
| 3 | 30 | 6 | होता॑ यक्षद॒ुषे इन्द्र॑स्य धे॒ |
| 3 | 30 | 7 | होता॑ यक्ष॒द्दैव्या॒ होता॑रा भ |
| 3 | 30 | 8 | होता॑ यक्षत्ति॒स्रो दे॒वीर्न भ |
| 3 | 30 | 9 | होता॑ यक्ष॒त्त्वष्टा॑र॒मिन्द्र |
| 3 | 30 | 10 | होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पति॑ꣳ शमि॒ता |
| 3 | 30 | 11 | होता॑ यक्ष॒दिन्द्र॒ꣳ स्वाहाज्य |
| 3 | 30 | 12 | दे॒वं ब॒र्हिरिन्द्र॑ꣳ सुदे॒वं |
| 3 | 30 | 13 | दे॒वीर्द्वार॒ इन्द्र॑ꣳ संघा॒ते |
| 3 | 30 | 14 | दे॒वी उ॒षासा॒नक्तेन्द्र॑ य॒ज्॒ |
| 3 | 30 | 15 | दे॒वी जोष्ट्री॒ वसु॑धिती दे॒वम |
| 3 | 30 | 16 | दे॒वी ऊ॒र्जाहु॑ती॒ दुघे॒ पय॒से |
| 3 | 30 | 17 | दे॒वा दैव्या॒ होता॑रा दे॒वमिन |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 30 | 18 | दे॒वीस्ति॒स्रस्ति॒स्रो दे॒वीः |
| 3 | 30 | 19 | दे॒व इन्द्रो॒ नरा॒शꣳस॑स्त्रिवर |
| 3 | 30 | 20 | दे॒वो दे॒वैर्वन॒स्पति॒र्हिर॑ण्॒ |
| 3 | 30 | 21 | दे॒वं ब॒र्हिर्वारि॑तीनां दे॒वम |
| 3 | 30 | 22 | दे॒वो अ॒ग्निः स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒ |
| 3 | 30 | 23 | अ॒ग्निम॒द्य होता॑रमवृणीता॒यं य |
| 3 | 30 | 24 | होता॑ यक्षत्समिधा॒नं म॒हद्यश॒ः |
| 3 | 30 | 25 | होता॑ यक्ष॒त्तनू॒नपा॑तमु॒द्भिद |
| 3 | 30 | 26 | होता॑ यक्षदी॒ळेन्य॑मीळि॒तं वृ॑ |
| 3 | 30 | 27 | होता॑ यक्षत्सुब॒र्हिष॑ं पूष॒ण् |
| 3 | 30 | 28 | होता॑ यक्ष॒द्व्यच॑स्वतीः सुप्र |
| 3 | 30 | 29 | होता॑ यक्षत्सु॒पेश॑सा सुशि॒ल्प |
| 3 | 30 | 30 | होता॑ यक्ष॒त्प्रचे॑तसा दे॒वाना |
| 3 | 30 | 31 | होता॑ यक्ष॒त्पेश॑स्वतीस्ति॒स्र |
| 3 | 30 | 32 | होता॑ यक्षत्सु॒रेत॑स॒ं त्वष्टा |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 3 | 30 | 33 | होता॑ यक्ष॒द्वन॒स्पतिꣳ॑ शमि॒ता |
| 3 | 30 | 34 | होता॑ यक्ष॒त्स्वाहा॑कृतीर॒ग्नि |
| 3 | 30 | 35 | दे॒वं ब॒र्हिर्व॑यो॒धसं॑ दे॒वमि |
| 3 | 30 | 36 | दे॒वीर्द्वारो॑ वयो॒धस॒ꣳ शुचि॒म |
| 3 | 30 | 37 | दे॒वी उ॒षासा॒नक्ता॑ दे॒वमिन्द् |
| 3 | 30 | 38 | दे॒वी जोष्ट्री॒ वसु॑धिती दे॒वम |
| 3 | 30 | 39 | दे॒वी ऊ॒र्जाहु॑ती॒ दुघे॑ सु॒दु |
| 3 | 30 | 40 | दे॒वा दैव्या॒ होता॑रा दे॒वमिन् |
| 3 | 30 | 41 | दे॒वीस्ति॒स्रस्ति॒स्रो दे॒वीर् |
| 3 | 30 | 42 | दे॒वो न॒राशꣳसो॑ दे॒वमिन्द्रं॑ |
| 3 | 30 | 43 | दे॒वो वन॒स्पति॑र्दे॒वमिन्द्रं॑ |
| 3 | 30 | 44 | दे॒वं ब॒र्हिर्वारि॑तीनां दे॒वम |
| 3 | 30 | 45 | दे॒वो अ॒ग्निः स्वि॑ष्ट॒कृद्दे॒ |
| 3 | 30 | 46 | अ॒ग्निम॒द्य होता॑रमवृणीता॒यं य |

PARANKUSHACHAR INSTITUTE
OF
VEDIC STUDIES (REGD.)

ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवेदिवे नमस्कुर्यात् ।

नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।

# शुक्लयजुर्वेदः

# काण्वशाखा संहिता

# चतुर्थ दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 31 | 1 | समि॑द्धो अ॒ञ्जन्कृद॑रं मती॒नां | 4 | 31 | 16 | व॒क्ष्यन्ती॒वेदा ग॑नीगन्ति॒ कर | 4 | 31 | 31 | अनु॑ त्वा॒ रथो॒ अनु॒ मर्यो॑ अर | 4 | 31 | 46 | य इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी जनि॑त्री |
| 4 | 31 | 2 | घृ॒तेना॒ञ्जन्त्सं प॒थो दे॑व॒या | 4 | 31 | 17 | अहि॑रिव भोगैः॒ पर्ये॑ति बा॒हुं | 4 | 31 | 32 | हिर॑ण्यशृ॒ङ्गोऽयो॑ अस्य॒ पादा॒ | 4 | 31 | 47 | उ॒पाव॑सृज॒ त्मन्या॑ सम॒ञ्जन्दे |
| 4 | 31 | 3 | ईड्य॒श्चासि॒ वन्द्य॑श्च वाजिन् | 4 | 31 | 18 | ब॒ह्वी॒नां पि॒ता ब॒हुर॑स्य पु॒ | 4 | 31 | 33 | ई॒र्मान्ता॑सः॒ सिलि॑कमध्यमासः॒ | 4 | 31 | 48 | स॒द्यो जा॒तो व्य॑मिमीत य॒ज्ञम॒ |
| 4 | 31 | 4 | स्ती॒र्णं ब॒र्हिः सु॒ष्टरी॑मा | 4 | 31 | 19 | सु॒प॒र्णं व॑स्ते मृ॒गो अ॑स्या॒ | 4 | 31 | 34 | तव॒ शरी॑रं पतयि॒ष्णव॑र्व॒न्तव | 4 | 31 | 49 | अ॒ग्नये॑ गाय॒त्राय॑ त्रि॒वृते॒ |
| 4 | 31 | 5 | ए॒ता उ॑ वः सु॒भगा॑ वि॒श्वरू॑पा | 4 | 31 | 20 | वन॑स्पते वी॒ड्व॑ङ्गो॒ हि भू॒या | 4 | 31 | 35 | उप॒ प्राग॒ाच्छस॑नं वा॒ज्यर्वा॑ | 4 | 31 | 50 | आ॒ग्ने॒यः कृ॒ष्णग्री॑वः सारस्व |
| 4 | 31 | 6 | अ॒न्त॒रा मि॒त्रावरु॑णा॒ चर॑न्त | 4 | 31 | 21 | रथे॒ तिष्ठ॑न्नयति वा॒जिन॑ः पु॒ | 4 | 31 | 36 | उप॒ प्रागा॑त्पर॒मं यत्स॒धस्थ॒म | 4 | 31 | 51 | अ॒ग्नयेऽनी॑कवते॒ रोहि॑ताञ्जिरन |
| 4 | 31 | 7 | प्र॒थ॒मा वा॑ꣳ सर॒थिना॑ सु॒वर्ण | 4 | 31 | 22 | आ ज॑ङ्घन्ति॒ सान्वे॑षां ज॒घनाँ॑ | 4 | 31 | 37 | समि॑द्धो अ॒द्य मनु॑षो दु॒रो॒णे | 4 | 32 | 1 | अ॒स्याजरा॑सो द॒माम॒रित्रा॑ अ॒र |
| 4 | 31 | 8 | आ॒दि॒त्यैर्नो॒ भार॑ती वष्टु य॒ | 4 | 31 | 23 | उप॑ श्वासय पृथि॒वीमु॒त द्यां प | 4 | 31 | 38 | तनू॑नपात्प॒थ ऋ॒तस्य॒ याना॒न्मध | 4 | 32 | 2 | हर॑यो धु॒मके॑तवो॒ वात॑जूता॒ उप |
| 4 | 31 | 9 | त्वष्टा॑ वी॒रं दे॒वका॑मं जजान॒ | 4 | 31 | 24 | यदक्र॑न्दः प्रथ॒मं जाय॑मान उ॒द | 4 | 31 | 39 | नरा॒शꣳस॑स्य महि॒मान॑मेषा॒मुप॑ | 4 | 32 | 3 | यजा॑ नो मि॒त्रावरु॑णा॒ यजा॑ दे |
| 4 | 31 | 10 | अश्वो॑ घृ॒तेन॒ त्मन्या॒ सम॑क्त | 4 | 31 | 25 | य॒मेन॑ द॒त्तं त्रि॒त ए॑नमायुन॒ | 4 | 31 | 40 | आ॒जु॒ह्वा॑न॒ ईड्यो॒ वन्द्य॒श्चा | 4 | 32 | 4 | यु॒क्ष्वा हि दे॑व॒हूत॑माँ॒ꣳ अश |
| 4 | 31 | 11 | प्र॒जाप॑ते॒स्तप॑सा वावृधा॒नः स | 4 | 31 | 26 | असि॑ य॒मो अस्या॑दि॒त्यो अ॑र्व॒ | 4 | 31 | 41 | प्रा॒चीन॑ ब॒र्हिः प्र॒दिशा॑ प | 4 | 32 | 5 | द्वे विरू॑पे चरतः॒ स्वर्थे॑ अ॒ |
| 4 | 31 | 12 | के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ | 4 | 31 | 27 | त्रीणि॑ त आहुर्दि॒वि बन्ध॑नानि | 4 | 31 | 42 | व्यच॑स्वतीरुर्वि॒या वि श्र॑यन् | 4 | 32 | 6 | अ॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि |
| 4 | 31 | 13 | जी॒मूत॑स्येव भवति॒ प्रती॑कं॒ य | 4 | 31 | 28 | इ॒मा ते॑ वाजिन्नव॒मार्ज॑नानी॒म | 4 | 31 | 43 | आ सु॒ष्वय॑न्ती यज॒ते उपा॑के उ॒ | 4 | 32 | 7 | त्रीणि॑ श॒ता त्री स॒हस्रा॑ण्य॒ |
| 4 | 31 | 14 | धन्व॑ना॒ गा धन्व॑ना॒जिं ज॑येम॒ | 4 | 31 | 29 | आ॒त्मान॑ ते॒ मन॑सा॒राद॑जानाम॒ | 4 | 31 | 44 | दैव्या॒ होता॑रा प्रथ॒मा सु॒वाच | 4 | 32 | 8 | मू॒र्धान॑ दि॒वो अ॑र॒तिं पृ॑थि |
| 4 | 31 | 15 | ते आ॒चर॑न्ती॒ सम॑नेव॒ योषा॑ मा | 4 | 31 | 30 | अत्रा॑ ते रू॒पमु॑त्त॒मम॑पश्य॒ं | 4 | 31 | 45 | आ नो॑ य॒ज्ञं भार॑ती॒ तूय॑मे॒त् | 4 | 32 | 9 | अ॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ जङ्घनद् द्र |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 32 | 10 | विश्वे॑भिः सो॒म्यं मध्वग्न॒ इन | 4 | 32 | 25 | इन्द्रेहि॒ मत्स्यन्ध॑सो॒ विश्व | 4 | 32 | 40 | बट् सू॑र्य॒ श्रव॑सा म॒हाँ२ अ॑स | 4 | 32 | 55 | प्र वा॒युमच्छा॑ बृह॒ती म॑नी॒षा |
| 4 | 32 | 11 | आ यदि॒षे नृपतिं॒ तेज॒ आन॒ट् श | 4 | 32 | 26 | इन्द्रो॑ वृत्रम॑वृणो॒च्छर्ध॑न | 4 | 32 | 41 | श्राय॑न्त इव॒ सूर्य॒ं विश्वेदि | 4 | 32 | 56 | इन्द्र॑वायू इ॒मे सु॒ता उप॒ प्र |
| 4 | 32 | 12 | अग्ने॒ शर्ध॑ महते॒ सौभगाय॒ तव | 4 | 32 | 27 | कुत॒स्त्वमि॑न्द्र॒ माहि॑न॒ः सन | 4 | 32 | 42 | अ॒द्या दे॑वा॒ उदि॑ता॒ सूर्य॑स् | 4 | 32 | 57 | मि॒त्रꣳ हु॑वे पू॒तद॑क्ष॒ं वरु |
| 4 | 32 | 13 | त्वाꣳ हि म॒न्द्रत॑ममर्कशो॒कैर् | 4 | 32 | 28 | आ तत्त॑ इन्द्रा॒य वः॑ पनन्ता॒भ | 4 | 32 | 43 | आ कृष्णेन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो न | 4 | 32 | 58 | दस्रा॑ यु॒वाक॑वः सु॒ता नास॑त्य |
| 4 | 32 | 14 | त्वे अ॑ग्ने स्वाहुत प्रि॒यास॑ः | 4 | 32 | 29 | इ॒मां ते॒ धिय॒ं प्र भ॑रे म॒हो | 4 | 32 | 44 | प्र वा॑वृजे सुप्र॒या ब॒र्हिरे॑ | 4 | 32 | 59 | वि॒दद्यदी॑ स॒रमा॑ रु॒ग्णमद्रे॒ |
| 4 | 32 | 15 | श्रु॒धि श्रु॑त्कर्ण॒ वह्नि॑भिर | 4 | 32 | 30 | वि॒भ्राड् बृ॒हत्पि॑बतु सो॒म्यं | 4 | 32 | 45 | इ॒न्द्रवा॒यू बृह॒स्पति॑ं मि॒त् | 4 | 32 | 60 | न॒हि स्पश॒मवि॑दन्न॒न्यम॒स्माद् |
| 4 | 32 | 16 | विश्वे॑षा॒मदि॑तिर्य॒ज्ञिया॑नां | 4 | 32 | 31 | उदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं व॑ह | 4 | 32 | 46 | वरु॑णः प्रावि॒ता भु॑वन्मि॒त्रो | 4 | 32 | 61 | उ॒ग्रा वि॑घ॒निना॒ मृध॑ इन्द्रा |
| 4 | 32 | 17 | म॒हो अ॒ग्नेः स॑मिधा॒नस्य॒ शर्म | 4 | 32 | 32 | येना॑ पावक॒ चक्ष॑सा भु॒रण्यन्त | 4 | 32 | 47 | अधि॑ न इन्द्रैषा॒ं विष्णो॑ सजा | 4 | 32 | 62 | उपा॑स्मै गायता नर॒ः पव॑माना॒ये |
| 4 | 32 | 18 | आप॑श्चित्पिप्यु स्त॒र्यो॒ न गा | 4 | 32 | 33 | दैव्या॑ अध्वर्यू॒ आ ग॑त॒ꣳ रथे॑ | 4 | 32 | 48 | अग्न॒ इन्द्र॒ वरु॑ण॒ मित्र॒ दे | 4 | 32 | 63 | ये त्वा॑हि॒हत्ये॑ मघव॒न्नव॑र्ध |
| 4 | 32 | 19 | गाव॒ उपा॑वताव॒तं म॒ही य॒ज्ञस्य | 4 | 32 | 34 | आ न॒ इळा॑भिर्वि॒दथे॑ सुश॒स्ति | 4 | 32 | 49 | इ॒न्द्रा॒ग्नी मि॒त्रावरु॒णादि॑ं | 4 | 32 | 64 | जनि॑ष्ठा उ॒ग्रः सह॑से तु॒राय॑ |
| 4 | 32 | 20 | यद॒द्य सूर॒ उदि॒तेऽना॑गा मि॒त् | 4 | 32 | 35 | यद॒द्य कच्च॑ वृत्रहन्नु॒दगा॑ अ | 4 | 32 | 50 | अ॒स्मे रु॒द्रा मे॒हना॒ पर्व॑ता | 4 | 32 | 65 | आ तू न॑ इन्द्र वृत्रहन्न॒स्माक |
| 4 | 32 | 21 | आ सु॒ते सि॑ञ्चत॒ श्रिय॒ꣳ रोद॑स | 4 | 32 | 36 | त॒रणि॑र्वि॒श्वद॑र्शतो ज्योति॒ष | 4 | 32 | 51 | अ॒र्वाञ्चो॑ अ॒द्या भ॑वता यजत्र | 4 | 32 | 66 | त्वमि॑न्द्र॒ प्रतू॑र्तिष्व॒भि |
| 4 | 32 | 22 | आ॒तिष्ठ॑न्तं॒ परि॒ विश्वे॑ अभू | 4 | 32 | 37 | तत्सूर्य॑स्य देव॒त्वं तन्म॑हि॒ | 4 | 32 | 52 | विश्वे॑ अ॒द्य म॒रुतो॒ विश्व॑ ऊ | 4 | 32 | 67 | अनु॑ ते॒ शुष्म॑ं तु॒रय॑न्तमीयत |
| 4 | 32 | 23 | प्र वो॑ म॒हे मन्द॑माना॒यान्ध॒स | 4 | 32 | 38 | तन्मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्याभि॒चक्ष | 4 | 32 | 53 | विश्वे॑ देवाः शृणु॒तेमꣳ हव॑ म | 4 | 32 | 68 | य॒ज्ञो दे॒वाना॒ं प्रत्ये॑ति सु |
| 4 | 32 | 24 | बृहन्निदि॒ध्म ए॑षां॒ भूरि॑ श॒ | 4 | 32 | 39 | बण्म॒हाँ२ अ॑सि सूर्य॒ बळा॑दित् | 4 | 32 | 54 | दे॒वेभ्यो॒ हि प्र॑थ॒मं य॒ज्ञिय | 4 | 32 | 69 | अद॑ब्धेभिः सवितः पा॒युभि॒ष्ट्व |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता चतुर्थ दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 32 | 70 | प्र वी॑र॒या शुच॑यो दद्रिरे वाम |
| 4 | 32 | 71 | गाव॒ उपा॑वताव॒तं म॒ही य॒ज्ञस्य |
| 4 | 32 | 72 | काव्य॑योरा॒जाने॑षु॒ क्रत्वा॒ द |
| 4 | 32 | 73 | दैव्या॑ अध्वर्यू॒ आ ग॑त॒ꣳ रथे॑ |
| 4 | 32 | 74 | ति॒र॒श्चीनो॒ वित॑तो र॒श्मिरे॑ष |
| 4 | 32 | 75 | आ रोद॑सी अपृण॒दा स्व॑र्म॒हज्ज्ञा |
| 4 | 32 | 76 | उ॒क्थेभि॑र्वृत्र॒हन्त॑मा॒ या म |
| 4 | 32 | 77 | उप॑ नः सू॒नवो॒ गिर॑ः शृ॒ण्वन्त |
| 4 | 32 | 78 | ब्रह्मा॑णि मे म॒तय॒ः शꣳ सु॒तास |
| 4 | 32 | 79 | अनु॑त्त॒मा ते॑ मघव॒न्नकि॒र्नु |
| 4 | 32 | 80 | तदिदा॑स॒ भुव॑नेषु॒ ज्येष्ठ॒ं य |
| 4 | 32 | 81 | इ॒मा उ॑ त्वा पुरूवसो॒ गिरो॑ वर |
| 4 | 32 | 82 | यस्या॒यं विश्व॒ आर्यो॒ दास॑ः श |
| 4 | 32 | 83 | अ॒यꣳ स॒हस्र॒मृषि॑भि॒ः सह॑स्कृत |
| 4 | 32 | 84 | अद॑ब्धेभिः सवितः पा॒युभि॒ष्ट्व |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 33 | 1 | यज्ञाग्र॑तो दू॒रमु॒दैति॒ दैव॒ं |
| 4 | 33 | 2 | पि॒तुं नु स्तो॑षं म॒हो ध॒र्माण |
| 4 | 33 | 3 | अन्विद॑नुमते॒ त्वं मन्या॑सै॒ श |
| 4 | 33 | 4 | सिनी॑वालि॒ पृथु॑ष्टुके॒ या दे॒ |
| 4 | 33 | 5 | पञ्च॑ न॒द्य॒ः सर॑स्वती॒मपि॑ यन |
| 4 | 33 | 6 | त्वम॑ग्ने प्रथ॒मो अङ्गि॑रा॒ ऋष |
| 4 | 33 | 7 | त्वं नो॑ अग्ने॒ तव॑ देव पा॒युभ |
| 4 | 33 | 8 | उ॒त्ता॒नाया॒मव॑ भरा चिकि॒त्वान |
| 4 | 33 | 9 | इळा॑यास्त्वा प॒दे व॒यं नाभा॑ प |
| 4 | 33 | 10 | प्र म॑न्महे शवसा॒नाय॑ शू॒षमाङ |
| 4 | 33 | 11 | प्र वो॑ म॒हे महि॒ नमो॑ भरध्वमा |
| 4 | 33 | 12 | इ॒च्छन्ति॑ त्वा सो॒म्यास॒ः सखा |
| 4 | 33 | 13 | न ते॑ दू॒रे प॑र॒मा चि॒द्रजा॒ꣳस |
| 4 | 33 | 14 | अषा॑ळहं यु॒त्सु पृत॑नासु॒ पप्र |
| 4 | 33 | 15 | सोमो॑ धे॒नुꣳ सोमो॒ अर्व॑न्तमा॒ |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 33 | 16 | त्वमि॒मा ओष॑धीः सोम॒ विश्वा॒स् |
| 4 | 33 | 17 | दे॒वेन॑ नो॒ मन॑सा देव सोम रा॒य |
| 4 | 33 | 18 | अष्टौ॒ व्य॑ख्यत्क॒कुभ॑ः पृथि॒व |
| 4 | 33 | 19 | हिर॑ण्यपाणिः सवि॒ता विच॑र्षणिर |
| 4 | 33 | 20 | हिर॑ण्यहस्तो॒ असु॑रः सुनी॒थः स |
| 4 | 33 | 21 | ये ते॒ पन्था॑ः सवितः पू॒र्व्या |
| 4 | 33 | 22 | उ॒भा पिब॑तमश्विनो॒भा न॒ः शर्म॑ |
| 4 | 33 | 23 | अप्न॑स्वतीमश्विना॒ वाच॑म॒स्मे |
| 4 | 33 | 24 | द्युभि॑र॒क्तुभि॒ः परि॑ पातम॒स् |
| 4 | 33 | 25 | आ कृ॒ष्णेन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो न |
| 4 | 33 | 26 | आ रा॑त्रि॒ पर्थि॑व॒ꣳ रज॑ः पि॒त |
| 4 | 33 | 27 | उ॒ष॒स्तच्चि॒त्रमा भ॑रा॒स्मभ्य॑ं |
| 4 | 33 | 28 | प्रा॒त॒र्जितं॒ भग॑मु॒ग्रꣳ हु॑व |
| 4 | 33 | 29 | पूष॒न्तव॑ व्र॒ते व॒यं न रि॑ष्य |
| 4 | 33 | 30 | प॒थस्प॑थ॒ः परि॑पतिं वच॒स्या का |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 33 | 31 | त्रीणि॑ प॒दा वि च॑क्रमे॒ विष्ण |
| 4 | 33 | 32 | तद्विप्रा॑सो विप॒न्यवो॑ जागृ॒व |
| 4 | 33 | 33 | घृ॒तव॑ती॒ भुव॑नानामभि॒श्रियो॒र |
| 4 | 33 | 34 | ये न॑ः स॒पत्ना॒ अप॒ ते भ॑वन्त् |
| 4 | 33 | 35 | आ ना॑सत्या त्रि॒भिर॑काद॒शैरि॒ |
| 4 | 33 | 36 | ए॒ष व॒ स्तोमो॑ मरुत इ॒यं गीर्म |
| 4 | 33 | 37 | स॒हस्तो॑माः स॒हच्छ॑न्दस आ॒वृतः |
| 4 | 33 | 38 | आ॒यु॒ष्य॑ं वर्च॒स्य॑ꣳ रा॒यस्पो |
| 4 | 33 | 39 | न तद्रक्षा॑ꣳसि॒ न पि॑शा॒चास्त॑ |
| 4 | 33 | 40 | यदाब॑ध्नन्दाक्षाय॒णा हिर॑ण्यꣳ |
| 4 | 33 | 41 | उ॒त नोऽहि॑र्बु॒ध्न्य॑ः शृणोत्व |
| 4 | 33 | 42 | इ॒मा गिर॑ आदि॒त्येभ्यो॑ घृ॒तस् |
| 4 | 33 | 43 | स॒प्त ऋष॑य॒ः प्रति॑हिता॒ः शरी॑ |
| 4 | 33 | 44 | उत्ति॑ष्ठ ब्रह्मणस्पते देव॒यन् |
| 4 | 33 | 45 | प्र नू॒नं ब्रह्म॑ण॒स्पति॒र्मन् |

# शुक्लयजुर्वेदः काण्वशाखा संहिता चतुर्थ दशकम

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 33 | 46 | ब्रह्म॑णस्पते॒ त्वम॒स्य य॒न्ता |
| 4 | 34 | 1 | देव॑ सवित॒ः प्रसु॑व य॒ज्ञं प्र |
| 4 | 34 | 2 | तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ द |
| 4 | 34 | 3 | विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ |
| 4 | 34 | 4 | वि॒भ॒क्तार॑ꣳ हवामहे॒ वसो॑श्चि॒ |
| 4 | 34 | 5 | ब्रह्म॑णे ब्राह्म॒णं क्ष॒त्राय |
| 4 | 34 | 6 | नृ॒त्ताय॑ सू॒तं गी॒ताय॑ शैलू॒ष |
| 4 | 34 | 7 | तप॑से कौला॒लं मा॒यायै॑ क॒र्मार |
| 4 | 34 | 8 | न॒दीभ्य॑ः पौञ्जि॒ष्ठमृ॒क्षीका॑ |
| 4 | 34 | 9 | सं॒धये॑ जा॒रं गे॒हायो॑पप॒तिमार |
| 4 | 34 | 10 | उ॒त्सा॒देभ्य॑ः कु॒ब्जं प्र॒मुद |
| 4 | 34 | 11 | अर्मे॑भ्यो हस्ति॒पं ज॒वाया॑श्व |
| 4 | 34 | 12 | भायै॑ दार्वा॒हारं॑ प्र॒भाया॑ अ |
| 4 | 34 | 13 | ऋ॒तये॑ स्ते॒नहृ॑दयं॒ वैर॑हत्या |
| 4 | 34 | 14 | म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पं क्रोधा॑य निस |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 34 | 15 | य॒माय॑ यम॒सूमथ॑र्व॒भ्योऽव॑तोका |
| 4 | 34 | 16 | सरो॑भ्यो धैव॒रमु॑प॒स्थाव॑राभ्य |
| 4 | 34 | 17 | बी॒भ॒त्सायै॑ पौल्क॒सं वर्णा॑य |
| 4 | 34 | 18 | अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कित॒वं कृ॒ताया॑द |
| 4 | 34 | 19 | प्र॒ति॒श्रुत्का॑या अर्त॒नं घोष |
| 4 | 34 | 20 | न॒र्माय॑ पुꣳश्च॒लूꣳ हसा॑य॒ कार |
| 4 | 34 | 21 | अ॒ग्नये॒ पीवा॑नं पृथि॒व्यै पी॑ |
| 4 | 34 | 22 | अथै॒तान॒ष्टौ विरू॑पा॒ना लं॑भ॒ते |
| 4 | 35 | 1 | स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः सहस्रा॒ |
| 4 | 35 | 2 | पुरु॑ष ए॒वेदꣳ सर्व॒ं यद्भू॒तं |
| 4 | 35 | 3 | ए॒तावा॑नस्य महि॒मातो॒ ज्याया॑ꣳ |
| 4 | 35 | 4 | त्रि॒पादू॒र्ध्व उदै॒त्पुरु॑ष॒ः |
| 4 | 35 | 5 | ततो वि॒राळ॑जायत वि॒राजो॒ अधि॒ |
| 4 | 35 | 6 | तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒ः सम |
| 4 | 35 | 7 | तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुत॒ ऋचः |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 35 | 8 | तस्मा॒दश्वा॑ अजायन्त॒ ये के चो |
| 4 | 35 | 9 | तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॒ प्रौक्ष॒न् |
| 4 | 35 | 10 | यत्पुरु॑षं॒ व्यद॑धुः कति॒धा व् |
| 4 | 35 | 11 | ब्रा॒ह्म॒णो॑ऽस्य॒ मुख॑मासीद्बा |
| 4 | 35 | 12 | च॒न्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षो॒ः |
| 4 | 35 | 13 | नाभ्या॑ आसीद॒न्तरि॑क्षꣳ शी॒र्ष |
| 4 | 35 | 14 | यत्पुरु॑षेण ह॒विषा॑ दे॒वा य॒ज् |
| 4 | 35 | 15 | स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स |
| 4 | 35 | 16 | य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वास्त |
| 4 | 35 | 17 | अ॒द्भ्यः संभृ॑तः पृथि॒व्यै रसा |
| 4 | 35 | 18 | वेदा॒हमे॒तं पुरु॑षं म॒हान्त॑मा |
| 4 | 35 | 19 | प्र॒जाप॑तिश्चरति॒ गर्भे॑ अ॒न्त |
| 4 | 35 | 20 | यो दे॒वेभ्य॑ आ॒तप॑ति॒ यो दे॒वा |
| 4 | 35 | 21 | रु॒चं ब्रा॒ह्मं ज॒नय॑न्तो दे॒व |
| 4 | 35 | 22 | श्रीश्च॑ ते ल॒क्ष्मीश्च॒ पत् |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 35 | 23 | तदे॒वाग्निस्तदा॑दि॒त्यस्तद्वा॒ |
| 4 | 35 | 24 | सर्वे॑ निमे॒षा ज॑ज्ञिरे वि॒द्य |
| 4 | 35 | 25 | न तस्य॑ प्रति॒मा अ॑स्ति॒ यस्य॒ |
| 4 | 35 | 26 | ए॒षो ह॑ दे॒वः प्र॒दिशोऽनु॒ सर् |
| 4 | 35 | 27 | वे॒नस्तत्प॑श्य॒न्निहि॑तं॒ गुहा |
| 4 | 35 | 28 | प्र तद्वो॑चेद॒मृत॒ं नु वि॒द्वा |
| 4 | 35 | 29 | स नो॒ बन्धु॑र्जनि॒ता स वि॑धा॒त |
| 4 | 35 | 30 | प॒रीत्य॑ भू॒तानि॑ प॒रीत्य॑ लो॒ |
| 4 | 35 | 31 | परि॒ द्यावा॑पृथि॒वी स॒द्य इ॒त् |
| 4 | 35 | 32 | सद॑स॒स्पति॒मद्भु॑तं प्रि॒यमिन् |
| 4 | 35 | 33 | यां मे॒धां दे॑वग॒णाः पि॒तर॑श्च |
| 4 | 35 | 34 | इ॒दं मे॒ ब्रह्म॑ च क्ष॒त्रं चो |
| 4 | 35 | 35 | अपे॒तो य॑न्तु प॒णयोऽसु॑म्ना दे |
| 4 | 35 | 36 | द्यु॒भि॒रहो॑भिर॒क्तुभि॒र्व्य॑क् |
| 4 | 35 | 37 | वा॒युः पु॑नातु सवि॒ता पु॑नात्व |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 35 | 38 | अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे |
| 4 | 35 | 39 | सविता ते शरीराणि मातुरुप |
| 4 | 35 | 40 | परं मृत्यो अनु परेहि पन्थ |
| 4 | 35 | 41 | शं वातः श१ हि ते घृणिः शं त |
| 4 | 35 | 42 | कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमाप |
| 4 | 35 | 43 | अश्मन्वती रीयते स१ रभध्वमु |
| 4 | 35 | 44 | अपाघमप किल्विषमप कृत्याम |
| 4 | 35 | 45 | सुमित्रिया न आप ओषधयः सन |
| 4 | 35 | 46 | अनड्वाहमन्वारभामहे स्वस् |
| 4 | 35 | 47 | उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्य |
| 4 | 35 | 48 | अग्न आयू१षि पवस आ सुवोर्ज |
| 4 | 35 | 49 | आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो |
| 4 | 35 | 50 | इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि |
| 4 | 35 | 51 | परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृ |
| 4 | 35 | 52 | क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 35 | 53 | वह वपां जातवेदः पितृभ्यो |
| 4 | 35 | 54 | स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा |
| 4 | 35 | 55 | अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्व |
| 4 | 36 | 1 | ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यज |
| 4 | 36 | 2 | यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदय |
| 4 | 36 | 3 | भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर् |
| 4 | 36 | 4 | कया नश्चित्र आ भुवदूती सद |
| 4 | 36 | 5 | कस्त्वा सत्यो मदानां म१ हि |
| 4 | 36 | 6 | अभी षु णः सखीनामविता जरित |
| 4 | 36 | 7 | कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन् |
| 4 | 36 | 8 | इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं |
| 4 | 36 | 9 | शं नो मित्रः शं वरुणः शं न |
| 4 | 36 | 10 | शं नो वातः पवता१ शं नस्तपत |
| 4 | 36 | 11 | अहानि शं भवन्तु नः श१ रात् |
| 4 | 36 | 12 | शं नो देवीरभिष्टय आपो भव |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 36 | 13 | स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा |
| 4 | 36 | 14 | आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न |
| 4 | 36 | 15 | यो वः शिवतमो रसस्तस्य भा |
| 4 | 36 | 16 | तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्ष |
| 4 | 36 | 17 | द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष१ शा |
| 4 | 36 | 18 | दृते दृ१ ह मा मित्रस्य मा |
| 4 | 36 | 19 | दृते दृ१ ह मा । ज्योक्ते सं |
| 4 | 36 | 20 | नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्त |
| 4 | 36 | 21 | नमस्ते अस्तु विद्युते नमस् |
| 4 | 36 | 22 | यतोयतः समीहसे ततो नो अभ |
| 4 | 36 | 23 | सुमित्रिया न आप ओषधयः सन |
| 4 | 36 | 24 | तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ता |
| 4 | 37 | 1 | देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे |
| 4 | 37 | 2 | युञ्जते मन उत युञ्जते धि |
| 4 | 37 | 3 | देवी द्यावापृथिवी मखस्य वाम |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|
| 4 | 37 | 4 | देव्यो वम्रियो भूतस्य प्रथम |
| 4 | 37 | 5 | इयत्यग्रे आसीर्मखस्य तेऽद |
| 4 | 37 | 6 | इन्द्रस्यौज स्थ मखस्य वोऽद |
| 4 | 37 | 7 | प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र द |
| 4 | 37 | 8 | मखस्य शिरोऽसि । मखाय त्वा |
| 4 | 37 | 9 | अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना |
| 4 | 37 | 10 | ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्ष |
| 4 | 37 | 11 | यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्य |
| 4 | 37 | 12 | अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधि |
| 4 | 37 | 13 | स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस |
| 4 | 37 | 14 | गर्भो देवानां पिता मतीना |
| 4 | 37 | 15 | समग्निरग्निना गत सं दैवेन |
| 4 | 37 | 16 | धर्ता दिवो वि भाति तपसस्प |
| 4 | 37 | 17 | अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च |
| 4 | 37 | 18 | विश्वासां भुवां पते विश्वस् |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 37 | 19 | पि॒ता नो॑ऽसि पि॒ता नो॑ बोधि॒ न | 4 | 38 | 14 | इ॒षे पि॑न्वस्वो॒र्जे पि॑न्वस्व |
| 4 | 37 | 20 | अहः॑ के॒तुना॑ जुषता॑ꣳ सु॒ज्योति | 4 | 38 | 15 | स्वाहा॑ पू॒ष्णे शर॑से॒ स्वाहा॒ |
| 4 | 38 | 1 | दे॒वस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे | 4 | 38 | 16 | स्वाहा॑ रु॒द्राय॑ रु॒द्रहू॑तये |
| 4 | 38 | 2 | इळ॒ एह्यदि॑त॒ एहि॒ सर॑स्व॒त्त् | 4 | 38 | 17 | अ॒भी॒मं म॑हि॒मा दिवं॒ विप्रो॑ |
| 4 | 38 | 3 | अदि॑त्यै॒ रास्ना॑सीन्द्रा॒ण्या | 4 | 38 | 18 | या ते॑ घर्म दि॒व्या शुग्या गा॑ |
| 4 | 38 | 4 | अ॒श्विभ्या॑ पिन्वस्व॒ सर॑स्वत | 4 | 38 | 19 | क्ष॒त्रस्य॑ त्वा प॒रस्पाय॒ ब्र |
| 4 | 38 | 5 | यस्ते॒ स्तनः॑ शश॒यो यो म॑यो॒भू | 4 | 38 | 20 | चतुः॑स्रक्ति॒र्नाभि॑र्ऋ॒तस्य॑ स |
| 4 | 38 | 6 | गा॒य॒त्रं छन्दो॑ऽसि॒ त्रैष्टु | 4 | 38 | 21 | घर्मै॒तत्ते॒ पुरी॑षं॒ तेन॒ वर् |
| 4 | 38 | 7 | स॒मु॒द्राय॑ त्वा॒ वाता॑य॒ स्वा | 4 | 38 | 22 | अचि॑क्रद॒द्वृषा॒ हरि॑र्म॒हान्म |
| 4 | 38 | 8 | इन्द्रा॑य त्वा॒ वसु॑मते रु॒द्र | 4 | 38 | 23 | सु॒मि॒त्रि॒या न॒ आप॒ ओष॑धयः सन |
| 4 | 38 | 9 | य॒माय॒ त्वाङ्गि॑रस्वते पितृमत | 4 | 38 | 24 | उद्व॒यं तम॑स॒स्परि॒ स्व॒ः पश्य |
| 4 | 38 | 10 | विश्वा॒ आशा॑ दक्षिण॒सत्सर्वा॑न | 4 | 38 | 25 | याव॑ती॒ द्यावा॑पृथि॒वी याव॑च्च |
| 4 | 38 | 11 | दि॒वि धा॑ इ॒मं य॒ज्ञमि॒मं य॒ज् | 4 | 38 | 26 | मयि॒ त्यदि॑न्द्रि॒यं बृहन्मयि |
| 4 | 38 | 12 | अश्वि॑ना घ॒र्मं पा॑त॒ꣳ हार्द्व | 4 | 38 | 27 | त्विषः॑ स॒वृक् क्रत्वे॒ दक्ष॑ |
| 4 | 38 | 13 | अपा॑ताम॒श्विना॑ घ॒र्ममनु॒ द्या | 4 | 39 | 1 | स्वाहा॑ प्रा॒णेभ्य॒ः साधि॑पतिक |

| दशकम | अध्य | मंत्र | Description | दशकम | अध्य | मंत्र | Description |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 4 | 39 | 2 | वा॒चे स्वाहा॑ प्रा॒णाय॒ स्वाहा | 4 | 40 | 5 | तदे॑जति॒ तन्नै॑जति॒ तद्दू॒रे त |
| 4 | 39 | 3 | मन॑सः॒ काम॒माकू॑तिं वा॒चः स॒त् | 4 | 40 | 6 | यस्तु सर्वा॑णि भू॒तान्या॒त्मन् |
| 4 | 39 | 4 | प्र॒जाप॑तिः संभ्रि॒यमा॑णः स॒म् | 4 | 40 | 7 | यस्मि॒न्त्सर्वा॑णि भू॒तान्या॒त |
| 4 | 39 | 5 | स॒वि॒ता प्र॑थ॒मेऽह॑न्न॒ग्निर्द | 4 | 40 | 8 | स पर्य॑गाच्छु॒क्रम॑का॒यम॑व्र॒ण |
| 4 | 39 | 6 | उ॒ग्रश्च॑ भी॒मश्च॒ ध्वान्त॑श्च | 4 | 40 | 9 | अ॒न्धं तम॒ः प्र वि॑शन्ति॒ येऽव |
| 4 | 39 | 7 | अ॒ग्निꣳ हृद॑येना॒शनि॑ꣳ हृदया॒ग | 4 | 40 | 10 | अ॒न्यदे॒वाहुर्वि॒द्यया॒न्यदा॑ह |
| 4 | 39 | 8 | उ॒ग्रँ लोहि॑तेन मि॒त्रꣳ सौव्र | 4 | 40 | 11 | वि॒द्यां चावि॑द्यां च॒ यस्तद्व |
| 4 | 39 | 9 | लोम॑भ्य॒ः स्वाहा॒ लोम॑भ्य॒ः स् | 4 | 40 | 12 | अ॒न्धं तम॒ः प्रवि॑शन्ति॒ येऽसं |
| 4 | 39 | 10 | आ॒या॒साय॒ स्वाहा॑ प्राया॒साय॒ | 4 | 40 | 13 | अ॒न्यदे॒वाहुः सं॑भ॒वाद॒न्यदा॑ह |
| 4 | 39 | 11 | तप॑से॒ स्वाहा॒ तप्य॑माना॒य स्व | 4 | 40 | 14 | संभू॑तिं च विना॒शं च॒ यस्तद्वे |
| 4 | 39 | 12 | य॒माय॒ स्वाहान्त॑काय॒ स्वाहा॑ | 4 | 40 | 15 | हि॒र॒ण्मये॑न॒ पात्रे॑ण स॒त्यस् |
| 4 | 40 | 1 | ई॒शा वा॒स्य॑मि॒दꣳ सर्वं॒ यत्कि | 4 | 40 | 16 | तेजो॒ यत्ते॑ रू॒पे कल्या॑णतम॒ं |
| 4 | 40 | 2 | कु॒र्वन्ने॒वेह कर्मा॑णि जिजीवि | 4 | 40 | 17 | वा॒युरनि॑लम॒मृत॒मथे॒दं भस्मा॑न |
| 4 | 40 | 3 | अ॒सु॒र्या॒ नाम॑ ते लो॒का अ॒न्ध | 4 | 40 | 18 | अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्म |
| 4 | 40 | 4 | अने॑ज॒देकं॒ मन॑सो॒ जवी॑यो॒ नैन | PARANKUSHACHAR INSTITUTE OF VEDIC STUDIES (REGD.) | | | |